असली
डरावनी
कहानियाँ

Table of Contents

अध्याय 1: खोखला आदमी

अध्याय 2: झील के नीचे की झील

अध्याय 3: दीवारों में छिपी महिला

अध्याय 4: मानचित्रकार का अंतिम मानचित्र

अध्याय 5: अंधेरे को खिलाओ

अध्याय 6: साक्षात्कार की टेप

अध्याय 7: वह घर जो हिल गया

अध्याय 8: अंतिम बार देखा गया

अध्याय 9: सपनों का घर

अध्याय 10: टोल बूथ

अध्याय 11: पड़ोसी की रोशनी

अध्याय 12: मिट्टी

अध्याय 13: स्टेशनों के बीच की ध्वनि

अध्याय 14: बच्चों का अस्पताल

अध्याय 15: स्थानापन्न शिक्षक

अध्याय 16: वापसी

अध्याय 17: बाग के नीचे

अध्याय 18: साँचा

अध्याय 19: वह घड़ी जिसने समय बढ़ाया

अध्याय 20: लुप्त आवृत्ति

अध्याय 21: फोटोग्राफ एल्बम

अध्याय 22: बाढ़ रेखा

अध्याय 23: पीला कमरा

अध्याय 24: वह पक्षी जो वापस आया

अध्याय 25: भय की ज्यामिति

अध्याय 26: कुआँ

अध्याय 27: खिड़की पर हाथ

अध्याय 28: सर्जन की डायरी

अध्याय 29: वन मार्ग

अध्याय 30: विरासत

फिल्म जैसी 100 सच्ची डरावनी कहानियाँ

100 डरावनी कहानियों की एक संपूर्ण ईबुक

इस ईबुक में वास्तविक घटनाओं, शहरी लोककथाओं और सिनेमाई हॉरर परंपराओं से प्रेरित 100 मौलिक डरावनी कहानियाँ शामिल हैं। प्रत्येक कहानी को विस्तृत वर्णन के

साथ एक पूर्ण अध्याय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाठकों को सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है।

अध्याय 1: खोखला आदमी

पश्चिमी वर्जीनिया के ग्रामीण इलाके में दो पर्वतीय श्रृंखलाओं के बीच बसा रेवेनशायर कस्बा हमेशा से ऐसा रहा है जहाँ लोग अपने काम से काम रखते थे और दूसरों से भी यही उम्मीद करते थे। यह ऐसा कस्बा था जहाँ दरवाजे खुले नहीं छोड़े जाते थे, यह भोलेपन की वजह से नहीं, बल्कि इसके तीन हजार निवासियों के बीच एक लंबे समय से चले आ रहे समझौते के कारण था कि बंद दरवाजों के पीछे जो कुछ भी होता है, वह बंद दरवाजों के पीछे ही रहता है। यह एक ऐसा कस्बा था जो अपनी चुप्पी को अपनी दूसरी त्वचा की तरह धारण करता था, और अपने इतिहास के अधिकांश समय तक, यह चुप्पी आरामदायक, यहाँ तक कि आश्वस्त करने वाली भी रही थी।

2009 की शरद ऋतु में यह स्थिति बदल गई, जब मर्सर परिवार क्रोज़ हॉलो रोड के अंत में स्थित पुराने अल्ब्राइट घर में रहने आया। यह घर अपने पूर्व मालिक, जैस्पर अल्ब्राइट नामक एक एकांतप्रिय व्यक्ति की मृत्यु के बाद ग्यारह वर्षों तक खाली पड़ा रहा था। बताया जाता है कि तहखाने में अकेले रहते हुए दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई थी। आधिकारिक रिपोर्ट में मृत्यु का कारण प्राकृतिक बताया गया था। रेवेनशायर के लोग इस बारे में और सवाल पूछने की ज़हमत नहीं उठाना चाहते थे।

डैनियल मर्सर एक हाई स्कूल में इतिहास के शिक्षक थे, उनकी पत्नी क्लारा एक फ्रीलांस ग्राफिक डिजाइनर थीं, और उनका बारह वर्षीय बेटा एथन एक शांत, कल्पनाशील लड़का था जो पुराने सिक्के इकट्ठा करता था और दोपहर का लंबा समय मोटी-मोटी

पेपरबैक उपन्यास पढ़ने में बिताता था। बाहरी तौर पर देखने पर वे एक बिल्कुल साधारण परिवार लगते थे। उन्होंने घर को असाधारण छूट पर खरीदा था - रियल एस्टेट एजेंट ने छूट के कारण को इस तरह छिपाया था जैसे वह पहले भी कई बार ऐसा कर चुका हो - और वे अक्टूबर की शुरुआत में एक शुक्रवार को, जब पेड़ों के पत्ते पीले पड़ने लगे थे, तब घर में रहने चले गए थे।

घर में तीसरी रात को ही पहली बार कुछ गड़बड़ होने का संकेत मिला। सुबह 2:14 बजे एथन की नींद खुली, उसके कमरे के बाहर दालान से आती कदमों की आहट सुनाई दी। वह बिस्तर पर चुपचाप लेटा रहा, एक ऐसे बच्चे की तरह चौकन्ना होकर सुन रहा था जिसे कुछ गड़बड़ महसूस हो रही हो। कदमों की आहट धीमी और सधी हुई थी, हर कदम लकड़ी के फर्श पर एक हल्की, गीली आवाज़ पैदा कर रहा था, मानो चलने वाला अभी-अभी बारिश से भीगा हो। एथन दीवार से सट गया और कंबल को ठुड्डी तक खींच लिया, अपने दरवाजे के नीचे से आती हल्की रोशनी को देखता रहा। उसने पैरों की परछाई को अपने कमरे के ठीक बाहर रुकते देखा। वे वहाँ काफी देर तक खड़े रहे। और फिर, बहुत धीरे-धीरे, वे चले गए।

उसने सुबह अपने माता-पिता को इसके बारे में बताया। उसके पिता मुस्कुराए और बोले कि शायद घर के बैठने की आवाज़ आ रही होगी, पुराने घरों से ऐसी अजीब आवाज़ें आती ही हैं। उसकी माँ ने कुछ नहीं कहा, लेकिन एथन ने गौर किया कि वह अपने कॉफी कप को दोनों हाथों में पकड़े हुए थी, मानो उसे किसी ठोस चीज़ को पकड़ने की ज़रूरत हो।

अगली रात फिर वही आहट सुनाई दी। और उसके बाद वाली रात भी। हर बार, वे ईथन के दरवाजे के बाहर ठीक उतने ही समय के लिए रुकते थे - उसने अपने नाइटस्टैंड पर

रखी डिजिटल घड़ी से उनका समय नोट करना शुरू कर दिया - फिर गलियारे से होते हुए तहखाने के दरवाजे की ओर बढ़ जाते थे। छठी रात, ईथन ने कुछ ऐसा किया जिसके लिए वह अगले दस साल तक पछताता रहा। वह बिस्तर से उठा, दबे पांव अपने दरवाजे तक गया और उसे बस इतना खोला कि वह गलियारे में देख सके।

गलियारा खाली था। घर में अंधेरा और सन्नाटा छाया हुआ था। लेकिन दूर कोने में तहखाने का दरवाज़ा खुला था, और नीचे के अंधेरे से एक हल्की सी आवाज़ आ रही थी जिसे ईथन तुरंत पहचान नहीं पाया। ठंडे गलियारे में नंगे पैर खड़े होकर, कान लगाकर सुनने में उसे लगभग तीस सेकंड लगे, तब जाकर उसने उसे पहचाना। वह साँस लेने की आवाज़ थी। धीमी, भारी साँसें, जैसे कोई बहुत बूढ़ा, या बहुत बीमार, या कोई बहुत लंबे समय से थका देने वाला काम कर रहा हो।

ईथन ने अपने बेडरूम का दरवाजा बंद किया, वापस बिस्तर पर गया और अपने सिर पर चादर ओढ़ ली। मर्सर परिवार के अलब्राइट हाउस में रहने के बाकी दो हफ्तों तक उसने फिर कभी दालान की तरफ नहीं देखा। आखिरकार, जिस चीज़ ने उन्हें घर छोड़ने पर मजबूर किया, वह न तो कदमों की आहट थी, न सांसों की आवाज़, और न ही वह गंध जो उनके दूसरे हफ्ते के अंत में तहखाने से रिसने लगी थी - गीली मिट्टी जैसी एक गाढ़ी, जैविक गंध, और कुछ और भी, कुछ मीठा और भयानक, जिसे डैनियल मर्सर, अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद, कभी पूरी तरह से पहचान नहीं पाया।

जिस वजह से उन्हें घर छोड़ना पड़ा, वह थी वह तस्वीर। क्लारा को वह तस्वीर मास्टर बेडरूम में आखिरी बक्से खोलते समय मिली - बेडरूम की अलमारी के पीछे एक ढीले तख्ते के पीछे फिसल गई थी, जिसे जाहिर तौर पर जैस्पर अलब्राइट या उनसे पहले उस घर में रहने वाले किसी और ने वहाँ छोड़ दिया था। यह एक ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर थी,

जिसके किनारे हल्के पीले पड़ गए थे, और इसमें एथन के बेडरूम के बाहर का गलियारा दिख रहा था। ऐसा लग रहा था कि तस्वीर रात में फ्लैश का इस्तेमाल करके खींची गई थी। तस्वीर में गलियारा बिल्कुल वैसा ही था जैसा आज है, वही वॉलपेपर, वही लाइट, वही फर्श।

और गलियारे में, ठीक उस जगह के बाहर जहाँ अब एथन का शयनकक्ष था, एक आकृति खड़ी थी। वह लंबी और बेहद पतली थी, लगभग अकल्पनीय रूप से पतली, उसके हाथ-पैर उसके शरीर के अनुपात में कुछ ज़्यादा ही लंबे लग रहे थे और उसका शरीर इस तरह आगे की ओर झुका हुआ था कि मानो उसे चोट लगी हो या फिर वह किसी इरादे से काम कर रही हो। उसका चेहरा कैमरे की ओर था, और हालाँकि तस्वीर की गुणवत्ता एकदम सही नहीं थी, क्लारा उसके चेहरे के भावों को भयानक स्पष्टता से देख पा रही थी। वह मुस्कुरा रही थी। किसी खुश व्यक्ति की मुस्कान नहीं, न ही किसी संतुष्ट व्यक्ति की, बल्कि उस चीज़ की मुस्कान जो बहुत लंबे समय से इंतज़ार कर रही थी और जिसने अभी-अभी पास आते कदमों की आहट सुनी थी।

तस्वीर के पीछे, ऐसी लिखावट में जिसे क्लारा पहचान नहीं पाई, चार शब्द लिखे थे: वह वास्तव में कभी गया ही नहीं।

मर्सर परिवार एक घंटे के भीतर ही निकल पड़ा। वे फिर कभी वापस नहीं लौटे। तब से अलब्राइट का घर खाली पड़ा है। रेवेनशायर के लोग इसके बारे में बात नहीं करते। लेकिन अक्टूबर की ठंडी रातों में, जब पहाड़ियों से ठंडी हवा आती है और क्रोज़ हॉलो रोड के फुटपाथ पर पत्तियाँ सरसराती हैं, तो पुराने घर के सबसे नज़दीक रहने वाले लोग कभी-कभी अपना काम रोककर सिर झुकाकर सुनने लगते हैं। और उनमें से कुछ - जो

काफ़ी नज़दीक रहते हैं - कभी-कभी उसे सुन भी लेते हैं। कदमों की आहट। धीमी और सधी हुई। और भीगी हुई।

अध्याय 2: झील के नीचे की झील

उत्तरी मिनेसोटा में हैरो झील नाम की एक झील है, जो 1958 के बाद बने किसी भी आधिकारिक मानचित्र पर नहीं दिखती। उससे पहले, राज्य के सर्वेक्षण मानचित्रों में इसे लगभग तीन मील लंबी और एक मील चौड़ी एक छोटी, साधारण सी जलाशय के रूप में दर्शाया गया था। यह भूमिगत झरनों से पोषित होती थी और एक संकरी धारा द्वारा पूर्व की ओर बहते हुए विशाल कैस्केड नदी प्रणाली में मिल जाती थी। इसकी अधिकतम गहराई सैंतालीस फीट दर्ज की गई थी। यह झील न तो विशेष रूप से दर्शनीय थी, न ही मछली पकड़ने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त थी, और न ही इसके पश्चिमी किनारे पर स्थित कुछ परिवारों को छोड़कर किसी के लिए विशेष महत्व रखती थी।

1958 की गर्मियों में तीन ऐसी घटनाएँ घटीं जिनके कारण मिनेसोटा राज्य ने चुपचाप हैरो झील को अपने आधिकारिक मानचित्र अभिलेखों से हटा दिया। पहली घटना थी झील की गहराई के मापन को अद्यतन करने के लिए नई उपलब्ध सोनार तकनीक का उपयोग करने के लिए भेजे गए सर्वेक्षण दल का लापता हो जाना। दल में चार लोग थे, और उनके अंतिम रेडियो संपर्क के तीन दिन बाद उनकी नाव झील के केंद्र के पास बहती हुई मिली। न तो उन लोगों का कोई पता चला, और न ही नाव में ऐसा कुछ मिला जिससे यह स्पष्ट हो सके कि क्या हुआ था। उनका सारा उपकरण सही-सलामत और पूरी तरह से काम करने योग्य था। उनका दोपहर का भोजन - सैंडविच, सेब, कॉफी का

थर्मस - नाव की बेंच सीट पर बिना छुए रखा था, मानो वे बस कुछ पल के लिए कहीं चले गए हों और वापस आना भूल गए हों।

दूसरी बात यह थी कि ऑपरेटरों के गायब होने से पहले सोनार उपकरण ने क्या रिकॉर्ड किया था। इस डेटा की समीक्षा एक राज्य जलविज्ञानी ने की थी, जिसका नाम बाद में सभी सार्वजनिक रिकॉर्ड से हटा दिया गया। बचे हुए एकमात्र विवरण के अनुसार - जलविज्ञानी के सहायक द्वारा लिखा गया एक पत्र, जो दशकों बाद एक विश्वविद्यालय के अभिलेखागार में मिला - सोनार रीडिंग से पता चला कि हैरो झील के तल के नीचे, जहाँ ठोस चट्टान होनी चाहिए थी, वहाँ पानी का एक और स्रोत था। एक दूसरी झील, जो पहली झील से बड़ी थी, ज्ञात झील की सतह से लगभग दो सौ फीट नीचे एक विशाल भूमिगत गुहा में मौजूद थी। सहायक के पत्र में इन रीडिंग पर जलविज्ञानी की प्रतिक्रिया को "वैज्ञानिक जिज्ञासा नहीं, बल्कि भय के करीब" बताया गया है और यह भी उल्लेख किया गया है कि जलविज्ञानी ने रीडिंग प्रिंटआउट को लंबे समय तक बिना कुछ बोले घूरते हुए बिताया और अंत में बहुत धीरे से कहा कि कुछ चीजें खोजी नहीं जानी चाहिए।

1958 की गर्मियों में घटी तीसरी घटना की रिपोर्ट एडना कार्लसन नाम की एक महिला ने की, जो हैरो झील के पश्चिमी किनारे पर स्थित एक फार्महाउस में चालीस वर्षों से रह रही थी। उसने काउंटी शेरिफ, राज्य जल प्राधिकरण और अंततः मिनियापोलिस ट्रिब्यून के एक पत्रकार को बताया, जिसने उसके दावों पर एक संक्षिप्त, संदेहपूर्ण लेख लिखा था, कि जुलाई के अंत में लगातार तीन रातों तक हैरो झील की सतह नीचे से हलचल से प्रभावित हुई थी। ये हलचलें मछलियों की नहीं थीं, न ही झील के तल से उठने वाली गैसों की, और न ही किसी अन्य प्राकृतिक घटना की जिसे वह पहचान सके। ये हलचलें बड़ी, धीमी और जानबूझकर की गई थीं, जिससे लहरें बन रही थीं जो एक केंद्रीय बिंदु से

सटीक संकेंद्रित वृत्तों में बाहर की ओर फैल रही थीं और फिर, जब वे किनारे पर पहुँचतीं, तो उलट जातीं और वापस केंद्र की ओर बहने लगतीं। उसने कहा कि इन हलचलों के दौरान पानी से एक आवाज़ आ रही थी। कोई तेज़ आवाज़ नहीं, कोई नाटकीय आवाज़ नहीं, बल्कि एक ऐसी आवाज़ जिसे उसने शेरिफ को दिए अपने बयान में "साँस लेने जैसी। जैसे कोई बहुत बड़ा और बहुत पुराना जीव अपनी नींद में साँस ले रहा हो" के रूप में वर्णित किया।

एडना कार्लसन की मृत्यु 1961 में हुई। उनका फार्महाउस जलकर राख हो गया, जिसकी परिस्थितियों का कभी पूरी तरह से स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सका। हैरो झील के पश्चिमी किनारे पर रहने वाले परिवार धीरे-धीरे अपनी संपत्तियां बेचकर वहां से चले गए, और वह भूमि राज्य के वन प्रबंधन क्षेत्र में समाहित हो गई, जिसके आधिकारिक पदनाम के अनुसार, उसमें कोई महत्वपूर्ण जल निकाय नहीं है।

हैरो झील आज भी मौजूद है। अगर आपको सही जगह पता हो—अगर आपके पास 1958 से पहले के सर्वेक्षण मानचित्र हों, जो कुछ विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं—तो आप इसे ढूंढ सकते हैं। दशकों से उपेक्षित पुरानी लकड़ी काटने वाली सड़कों से होते हुए आप इसके एक चौथाई मील की दूरी तक गाड़ी चलाकर जा सकते हैं। चीड़ के जंगल से होते हुए आप इसके किनारे तक पैदल जा सकते हैं और किसी शांत शाम को पानी के किनारे खड़े होकर उसकी सतह को निहार सकते हैं।

लेकिन अगर आप जाएं, तो सुबह जल्दी जाएं और अंधेरा होने से पहले निकल आएं। और अगर आप झील के किनारे खड़े होकर देखें कि झील के बीचोंबीच से बाहर की ओर लहरें उठ रही हैं - ऐसी लहरें जो हवा से भी संभव नहीं - तो यह देखने का इंतज़ार न

करें कि वे वापस मुड़ती हैं या नहीं। तुरंत अपनी कार की ओर वापस चलें। बिना रियरव्यू मिरर देखे गाड़ी चलाकर निकल जाएं।
कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें खोजा नहीं जा सकता।

अध्याय 3: दीवारों में छिपी महिला

4C केलरमैन आर्म्स स्थित अपार्टमेंट आठ महीने से खाली था जब प्रिया शर्मा उसमें रहने आई। वह छब्बीस वर्ष की थी और शिकागो के दक्षिणी हिस्से में स्थित एक छोटे प्रकाशन गृह में जूनियर एडिटर के रूप में नई-नई नौकरी पर लगी थी। उसने यह अपार्टमेंट इसलिए लिया था क्योंकि किराया बाजार दर से थोड़ा कम था और इमारत की बनावट अच्छी थी - ऊंची छतें, असली लकड़ी के फर्श, और उत्तर दिशा से भरपूर रोशनी आने वाली बड़ी खिड़कियां। उसने गौर किया कि अक्टूबर के महीने में अपार्टमेंट असामान्य रूप से ठंडा लग रहा था, और बेडरूम में लगे रेडिएटर से एक अजीब सी खटखटाहट की आवाज आ रही थी, जिसे बिल्डिंग मैनेजर ने हाथ हिलाकर और "किसी को भेजकर ठीक करवाने" का वादा करके टाल दिया था। उसने इन बातों पर ध्यान दिया और सोचा कि ये सब बर्दाश्त करने लायक हैं, क्योंकि किराया बाजार दर से काफी कम था और वह छब्बीस वर्ष की थी और व्यावहारिक थी।
वह शनिवार को रहने आई। मंगलवार तक, वह लाइट जलाकर सोने लगी थी।
यह सब कुछ आवाज़ों से शुरू हुआ था— कोई नाटकीय आवाज़ें नहीं, ऐसी कोई आवाज़ नहीं जिससे कोई कम समझदार व्यक्ति अपार्टमेंट से भाग जाए, बल्कि छोटी-छोटी आवाज़ें जो पहले तीन दिनों में लगातार आती रहीं और धीरे-धीरे जानबूझकर की गई लगने लगीं। बेडरूम की दीवार के पीछे खरोंचने की आवाज़, जिसे उसने पहले चूहों

की आवाज़ समझा, जब तक कि उसने अपना कान प्लास्टर पर नहीं लगाया और महसूस किया कि उस आवाज़ में एक लय थी— किसी चूहे की उन्मत्त, अनियमित लय नहीं, बल्कि एक धीमी, सधी हुई लय, जैसे नाखूनों को किसी सतह पर जानबूझकर धैर्य से चलाया जा रहा हो। बाथरूम में एक आवाज़ जो उसने देर रात दो बार सुनी, एक छोटी, धीमी साँस, जैसे कोई बहुत पास से फुसफुसा रहा हो, जिसका अर्थ वह कितनी ही बार अपने मन में दोहराने पर भी पूरी तरह समझ नहीं पाई। एक अनुभूति, जो बेडरूम और रसोई के बीच के गलियारे में सबसे तीव्र थी, जैसे कोई देख रहा हो—बाहर से नहीं, खिड़कियों से नहीं, बल्कि दीवारों के भीतर से।

उसने खरोंचने की आवाज़ के बारे में बिल्डिंग मैनेजर को बताया, जिसने रॉबर्टो नाम के एक रखवाले को कीड़े-मकोड़ों की जाँच के लिए भेजा। रॉबर्टो ने अपार्टमेंट में बीस मिनट बिताए, फ्रिज के पीछे, सिंक के नीचे, बेडरूम के रेडिएटर के पीछे बेस बोर्ड के किनारे जैसी आम जगहों की जाँच की, लेकिन उसे कुछ नहीं मिला। न कोई गंदगी, न कुतरने के निशान, न ही किसी तरह के कीड़े-मकोड़ों का कोई सबूत। उसने प्रिया को बताया कि बिल्डिंग साफ़ है। वह अपने औज़ार समेट रहा था कि तभी रुका और बेडरूम की दीवार की ओर देखते हुए, मौसम पर टिप्पणी करने वाले किसी व्यक्ति की तरह सहजता से बोला कि चौथे कमरे में पहले रहने वाली एक अजीब महिला थी जिसने यूनिट में कुछ "असामान्य बदलाव" किए थे, जिनकी मरम्मत में काफ़ी समय लगा था, ताकि अपार्टमेंट को दोबारा किराए पर दिया जा सके।

प्रिया ने पूछा, "किस तरह के बदलाव?" रॉबर्टो ने एक पल के लिए सवाल पर विचार किया, फिर कहा, "किसी के ध्यान देने से पहले वह काफी देर तक अंदर थी।" उसने अपना टूलबॉक्स बंद किया और प्रिया के स्पष्टीकरण मांगने से पहले ही चला गया।

उसने पिछले किरायेदार के बारे में जानकारी जुटाने की कोशिश की, लेकिन उसे बहुत कम पता चला। भवन प्रबंधक ने निजता का हवाला देते हुए इस बारे में विस्तार से चर्चा करने से इनकार कर दिया। उसने सार्वजनिक अभिलेखों की जाँच की और पाया कि मार्ता वॉस नाम की एक महिला वास्तव में 4C में रहती थी और उसका किरायेदारी का कार्यकाल समाप्त हो गया था - भवन प्रबंधक के शब्दों में, "समाप्त", जिसके बारे में प्रिया लगातार सोचती रहती थी।

उस तस्वीर ने आखिरकार सब कुछ एक भयानक घटना में तब्दील कर दिया। घर में आने के एक महीने बाद, बाथरूम के शीशे के पीछे से आती हुई ठंडी हवा के स्रोत का पता लगाने की कोशिश करते समय उसे वह तस्वीर अचानक मिल गई। शीशा दीवार में जड़े लकड़ी के फ्रेम पर लगा था, और जब उसने सील की जांच करने के लिए उसे दीवार से हटाया, तो उसने पाया कि फ्रेम अपनी सामान्य मोटाई से थोड़ा मोटा था और फ्रेम के पीछे और प्लास्टर के बीच एक संकरा सा गैप था - एक इंच चौड़ा, गहरा और धूल भरा गैप। और इस गैप में, लंबाई में एक बार मोड़ा हुआ, कागज का एक टुकड़ा फंसा हुआ था।

उसने उसे ध्यान से खोला। यह एक तस्वीर थी, जो सामान्य कॉपियर पेपर पर छपी थी, थोड़ी मुड़ी हुई और धुंधली। इसमें अपार्टमेंट 4C का अंदरूनी हिस्सा दिख रहा था — उसका अपार्टमेंट — एक ऐसे कोण से जिसे वह तुरंत समझ नहीं पाई, एक निचले कोण से, किसी तरह के गैप या छेद से झांकते हुए, छवि किनारों पर थोड़ी धुंधली और केंद्र में एकदम स्पष्ट थी। तस्वीर में उसका शयनकक्ष दिख रहा था, और शयनकक्ष में, अपने बिस्तर पर सो रही थी प्रिया।

तस्वीर के हाशिये पर छपी समय-सीमा उसके वहां रहने आने से तीन सप्ताह पहले की थी।

अध्याय 4: मानचित्रकार का अंतिम मानचित्र

एडमंड वेन ने चालीस साल उन जगहों के नक्शे बनाने में बिताए थे जहाँ जाने से दूसरे लोग डरते थे। उन्होंने युकाटन प्रायद्वीप के नीचे स्थित गुफा प्रणालियों, आउटर हेब्राइड्स के खतरनाक ज्वारीय मैदानों और काराकोरम पर्वतमाला की ऊँची हिमनद घाटियों का नक्शा बनाया था। उन्होंने आइसलैंड में एक अभी भी सक्रिय ज्वालामुखी के भीतरी हिस्से का नक्शा बनाने के लिए केबल के सहारे उसके काल्डेरा में उतरकर हेडलाइट की रोशनी और नीचे दूर तक फैले मैग्मा की लालिमा में जो कुछ देखा, उसका रेखाचित्र बनाया था। पेशेवर तौर पर देखा जाए तो वे डरपोक व्यक्ति नहीं थे, और मानचित्रकला के क्षेत्र में उनका रिकॉर्ड इस बात का प्रमाण था।

यही कारण है कि उनके द्वारा छोड़ी गई नोटबुकें - जो फरवरी 2019 में 71 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु के बाद उनके अध्ययन कक्ष में मिलीं, जिसकी मृत्यु का कारण प्राकृतिक हृदय गति रुकना बताया गया - उन दो स्नातक छात्रों के लिए बेहद चिंताजनक थीं जिन्हें उनके संग्रह को सूचीबद्ध करने का कार्य सौंपा गया था। ये नोटबुकें उनकी फील्ड डायरी थीं, उनके द्वारा किए गए प्रत्येक सर्वेक्षण का हस्तलिखित रिकॉर्ड थीं, और पहली बार

अपने करियर के अड़तीस वर्षों में वे ठीक वैसे ही थे जैसा आप उनसे अपेक्षा करेंगे: सावधानीपूर्वक, व्यवस्थित,

दूरियों, ऊँचाइयों और भूवैज्ञानिक संरचनाओं के अत्यंत विस्तृत अभिलेख, जिनमें छोटे, सटीक रेखाचित्रों के साथ-साथ मौसम की स्थितियों या स्थानीय जीव-जंतुओं के व्यवहार के बारे में कभी-कभार शुष्क टिप्पणियाँ भी शामिल होती हैं।

अंतिम दो नोटबुक अलग थीं। लिखावट पहले की नोटबुकों की तुलना में अधिक कांप रही थी, जिसका कारण उम्र हो सकती थी, लेकिन सामग्री ने स्नातकोत्तर छात्रों को चिंतित कर दिया। प्रविष्टियों में एक स्थान का वर्णन था - एडमंड ने कभी उसका नाम नहीं बताया, केवल "क्षेत्र" कहकर उसका उल्लेख किया - जिसका सर्वेक्षण उन्होंने अपने जीवन के अंतिम अठारह महीनों के दौरान किया था। स्थान का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया था, लेकिन कुछ विवरणों से संकेत मिलता था कि यह अमेरिकी दक्षिण-पश्चिम में कहीं था, शायद दक्षिणी यूटा या उत्तरी एरिजोना। उन्होंने सपाट, हल्के रंग की चट्टानों और छोटी झाड़ियों वाले एक भूभाग का वर्णन किया, जो एक घाटी प्रणाली से घिरा हुआ था जो "ठीक से व्यवहार नहीं करती थी", जिसका अर्थ शायद यह था कि घाटी के भीतर की दूरियाँ बाहर की दूरियों से मेल नहीं खाती थीं। उन्होंने अपने उपकरणों द्वारा दर्ज की गई तीन मील की दूरी तक चलने के बारे में लिखा और घाटी से बाहर निकलने पर खुद को उस स्थान से केवल पाँच सौ मीटर दूर पाया जहाँ से वे अंदर गए थे। उन्होंने कम्पास रीडिंग के बारे में लिखा जो चुंबकीय विसंगतियों के पास धीरे-धीरे नहीं बदलती थीं, बल्कि एक ही कदम में तुरंत बदल जाती थीं।

एक प्रविष्टि में उन्होंने ध्वनियों का वर्णन किया। हवा या वन्यजीवों की आवाज़ नहीं, बल्कि एक ऐसी ध्वनि जिसे उन्होंने "मानचित्र के नष्ट होने की ध्वनि" बताया। अगले

अनुच्छेद में उन्होंने इसे ध्वनि के बजाय एक अनुभूति के रूप में समझाया - एक ऐसा अहसास कि जिस भूदृश्य से वे गुज़र रहे थे, वह किसी न किसी तरह अपने मापन से अवगत था और उस मापन के जवाब में बदल रहा था। मानो वह मानचित्रित होना ही नहीं चाहता था। मानो अज्ञात बने रहने के उसके कुछ विशिष्ट और सोचे-समझे कारण थे।

अंतिम प्रविष्टि उनकी मृत्यु से चार दिन पहले की थी। इसमें उन्होंने घाटी के सबसे गहरे बिंदु पर मिली एक विशेषता का वर्णन किया था: एक सपाट चट्टान जिस पर कुछ उकेरा गया था - हाल ही में नहीं, बल्कि बहुत पहले, सदियों के मौसम के प्रभाव से नक्काशी के किनारे चिकने हो गए थे। नक्काशी एक नक्शा था। एडमंड ने अपनी विशिष्ट सटीकता के साथ इसे अपनी नोटबुक के पृष्ठ पर उतारा था। उन्होंने लिखा कि इसमें एक ऐसा परिदृश्य दर्शाया गया था जिसे वे पहचानते थे, क्योंकि यह वही क्षेत्र था जहाँ वे वर्तमान में खड़े थे। लेकिन नक्शे में वह क्षेत्र एक असंभव ऊँचाई से दिखाई दे रहा था - किसी उपग्रह या विमान की ऊँचाई से नहीं, बल्कि इतनी ऊँचाई से कि पृथ्वी की वक्रता दिखाई दे रही थी, और फिर भी नक्काशी इतनी बारीक थी कि वे एक व्यक्ति से भी छोटे अलग-अलग चट्टानी संरचनाओं को पहचान सकते थे।

नक्शे के केंद्र में एक स्थान अंकित था। किसी प्रतीक या लेबल से नहीं, बल्कि एक मानव आकृति की नक्काशी से, जो लेटी हुई थी। चेहरा नीचे की ओर था।

एडमंड वेन ने नक्शे की अपनी प्रति के बीच में पेंसिल रख दी और फिर उसे दोबारा नहीं उठाया। नोटबुक में मौजूद प्रति मध्य बिंदु पर समाप्त होती है, नक्शे का दूसरा भाग दर्ज नहीं है, खाली पन्ना उन सभी शब्दों से कहीं अधिक प्रभावशाली है जो वह वहाँ लिख सकते थे।

अध्याय 5: अंधेरे को खिलाओ

वर्जीनिया के सैलो क्रीक के ग्रामीण समुदाय में, यह परंपरा इतनी पीढ़ियों से चली आ रही थी कि वर्तमान में इसका पालन करने वाला कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता था कि यह कब शुरू हुई या किसने शुरू की। बुजुर्ग निवासी इसे बस "भोजन कराना" कहते थे और वे इसके बारे में उसी तरह बात करते थे जैसे लोग चर्च जाने या मौसमी बुवाई के बारे में बात करते हैं - इसे कोई विकल्प नहीं, बल्कि जीवन की लय में गहराई से समाया हुआ एक कर्तव्य मानते थे, जिस पर सवाल उठाना सांस लेने की आवश्यकता पर सवाल उठाने जैसा था।

इसका नियम यह था: शीतकालीन संक्रांति की रात को, सैलो क्रीक के हर घर से आधी रात से पहले अपने घर के सामने एक भेंट रखने की अपेक्षा की जाती थी। भेंट भोजन हो सकती थी—परंपरागत रूप से कुछ खास चीजों का मिश्रण, जो हर परिवार में थोड़ा अलग होता था, लेकिन उसमें हमेशा रोटी, नमक और हाल ही में जीवित प्राणी का कोई अंग शामिल होता था—या फिर कोई ऐसी वस्तु जो परिवार के लिए व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण हो, कोई ऐसी चीज जिसे परिवार ने संजोकर रखा हो और जिसकी उन्हें वास्तव में कमी महसूस हो। भेंट की इन दोनों श्रेणियों में अंतर स्पष्ट था, और बुजुर्ग निवासी इस बारे में बहुत स्पष्ट थे: जो भी भेंट आप रखते थे, उसके लिए आपको कुछ कीमत चुकानी पड़ती थी। बिना किसी कीमत के दी जाने वाली भेंट, भेंट नहीं मानी जाती थी।

सुबह होते-होते चढ़ावा हमेशा गायब हो जाता था।

2017 में, एंड्रयू और सोफी बेनेट नाम का एक युवा जोड़ा पोर्टलैंड, ओरेगन से सैलो क्रीक में आकर बस गया। वे यहाँ की सस्ती ज़मीनों और अपने दोस्तों को "प्रामाणिक ग्रामीण जीवन" की चाहत से आकर्षित हुए थे। उन्होंने कस्बे के बाहरी इलाके में एक छोटा सा फार्महाउस खरीदा, सब्ज़ियों का बगीचा लगाया, दो अनाथ कुत्तों को गोद लिया और उस प्रसन्नतापूर्ण दृढ़ संकल्प के साथ वहाँ बस गए जैसे कि उन्हें पूरा यकीन हो कि वे क्या करने जा रहे हैं।

सैलो क्रीक में उनके पहले शीतकालीन संक्रांति के दिन, उनकी सबसे करीबी पड़ोसी, हैटी पर्ल नाम की एक बुजुर्ग महिला, दोपहर में उनके दरवाजे पर आई और उन्हें दाना चुगने की याद दिलाई। उन्होंने इसे सावधानीपूर्वक समझाया, सैलो क्रीक के निवासियों द्वारा नए लोगों को आमतौर पर दी जाने वाली जानकारी से कहीं अधिक विस्तार से, क्योंकि उन्हें बेनेट परिवार से लगाव हो गया था और क्योंकि वह अपने शांत स्वभाव में उनके लिए चिंतित थीं। उन्होंने उनसे कहा कि जो कुछ भी वे चढ़ाते हैं वह वास्तविक होना चाहिए - उनके शब्दों में, उसे "महसूस" किया जाना चाहिए - और उन्होंने उनसे कहा कि वे जो कुछ भी करें, दाना चढ़ाने के बाद और अंदर आने पर अपने दरवाजे या खिड़कियां खुली न छोड़ें। एंड्रयू बेनेट ने यह सब विनम्रतापूर्वक ध्यान से सुना और उनके चेहरे पर थोड़ी सी तिरस्कार की भावना थी, मानो वे स्थानीय रीति-रिवाजों का सम्मान करते हुए उन्हें मन ही मन अंधविश्वास मान रहे हों। सोफी अधिक अनिश्चित थी। वह एक ऐसे परिवार में पली-बढ़ी थी जो स्थानीय लोककथाओं को गंभीरता से लेता था, और हैटी पर्ल के बोलने के तरीके में कुछ ऐसा था - एक कहानीकार के उत्साह के साथ नहीं, बल्कि व्यावहारिक जानकारी देने वाले किसी व्यक्ति की तरह सपाट विशिष्टता के साथ - जिससे उसे रीढ़ की हड्डी में एक अजीब सी ठंडक महसूस होती थी।

उन्होंने उस शाम इस पर चर्चा की। एंड्रयू का मानना था कि उन्हें सामुदायिक सद्भावना के प्रतीक के रूप में भाग लेना चाहिए, लेकिन इसे बहुत गंभीरता से लेने की कोई आवश्यकता नहीं है - वे पेंट्री से कुछ खाना छोड़ सकते हैं, जिसकी उन्हें कमी महसूस नहीं होगी, और यह पर्याप्त होगा। सोफी ने कहा कि उन्हें लगता है कि उन्हें इसे विधिपूर्वक करना चाहिए। दोनों के बीच थोड़ी बहस हुई। एंड्रयू की बात मान ली गई। वे रात साढ़े ग्यारह बजे दरवाजे पर बासी बिस्कुट का एक डिब्बा और लगभग खाली पीनट बटर का जार छोड़कर सोने चले गए।

सुबह तीन बजे, दोनों कुत्ते एक खास तरह की चेतावनी भरी आवाज़ में भौंकने लगे, ऐसी आवाज़ जो न तो एंड्रयू और न ही सोफी ने पहले कभी सुनी थी - यह बाहर की किसी आवाज़ पर प्रतिक्रिया देने वाले कुत्तों का भौंकना नहीं था, बल्कि उन कुत्तों का भौंकना था जिन्हें घर के अंदर कुछ गड़बड़ महसूस हो रही थी, घर में उनके साथ कुछ होने का आभास हो रहा था। एंड्रयू उठा, बेडरूम के दरवाजे तक गया और उसे खोला। गलियारा अंधेरा था। सामने का दरवाज़ा, जिसे उसने सोने से पहले ताला लगा दिया था, खुला हुआ था। ठंडी हवा घर में बह रही थी, और उसके साथ एक ऐसी गंध आ रही थी जिसे न तो एंड्रयू और न ही सोफी पहचान पा रहे थे - कुछ मीठी, गाढ़ी और पूरी तरह से जैविक नहीं, जैसे सड़ांध और चीनी का मिश्रण हो, जैसे कोई बहुत बड़ी चीज़ बहुत करीब हो।

एंड्रयू ने बेडरूम का दरवाजा बंद करके ताला लगा दिया। कुत्तों का भौंकना तेज़ हुआ और फिर अचानक रुक गया, और घर में सन्नाटा छा गया। सुबह, दोनों कुत्ते गायब थे। बिस्कुट और पीनट बटर भी गायब थे। और एक और चीज़ भी गायब थी - जिसे सोफी ने नाश्ता बनाते समय महसूस किया, जिसे वह तुरंत गायब हुई चीज़ के रूप में पहचान नहीं

पाई, क्योंकि वह कोई वस्तु नहीं थी। वह एक एहसास था। अपने घर में सुरक्षित महसूस करने का एहसास। वह पूरी तरह से गायब हो गया, मानो उसे कहीं से उठा लिया गया हो, और वह कभी वापस नहीं आया।

अध्याय 6: साक्षात्कार की टेप

डॉ. मार्गरिट हॉलिस ने फोरेंसिक मनोवैज्ञानिक के रूप में अपने बीस वर्षों के करियर में तीन सौ से अधिक नैदानिक साक्षात्कार किए थे, इससे पहले कि उनकी मुलाकात विषय 7741 से हुई। उन्होंने सीरियल किलर, आगजनी करने वालों और ऐसे लोगों का साक्षात्कार लिया था जिन्होंने इतने सामान्य और भयावह अपराध किए थे कि वे उनके मन में बुरे सपने बनकर नहीं, बल्कि एक प्रकार की धीमी, धुंधली उदासी बनकर रह गए थे, जिसे उन्होंने व्यायाम, चिकित्सा और इस ज्ञान के माध्यम से संभाला कि उनके काम का एक उद्देश्य है। वह अपने काम में निपुण थीं। वह गहनता से काम करती थीं, बिना किसी पूर्वाग्रह के सहानुभूति रखती थीं, और उनमें ऐसी परिस्थितियाँ बनाने की प्रतिभा थी जिनमें लोग उन्हें ऐसी बातें बता देते थे जो उन्होंने कभी किसी और को नहीं बताई थीं। वह विषय 7741 के लिए तैयार नहीं थीं। उन्होंने स्वयं अपने द्वारा रखे गए सत्रों के लिखित रिकॉर्ड में ऐसा कहा था, और मार्गरिट हॉलिस ऐसी महिला नहीं थीं जो अपनी अप्रस्तुतता को आसानी से स्वीकार कर लें।

संदिग्ध संख्या 7741 लगभग चालीस वर्ष का एक व्यक्ति था, जो ग्रामीण न्यू हैम्पशायर में एक घर में अकेला रहता हुआ पाया गया था। उसने कई वर्षों में वहाँ एक संग्रह तैयार किया था। इस संग्रह में हजारों ऑडियो रिकॉर्डिंग थीं, जो दर्जनों बाहरी हार्ड ड्राइव और सैकड़ों कैसेट टेपों में भरी हुई थीं। इन्हें इतनी सटीकता से व्यवस्थित किया गया था कि

इन्हें खोजने वाले जांचकर्ताओं को यह एक साथ प्रभावशाली और बेहद परेशान करने वाला लगा। ये रिकॉर्डिंग स्वयं संदिग्ध व्यक्ति की नहीं थीं। ये अन्य लोगों की रिकॉर्डिंग थीं, जो उनकी जानकारी के बिना, उनके घरों की गोपनीयता में की गई थीं। संदिग्ध व्यक्ति ने, कुछ अस्पष्ट कारणों से, वर्षों तक अजनबियों के घरों में रिकॉर्डिंग उपकरण रखने के तरीके खोजे और फिर बाहर एक वैन में बैठकर उन्हें सुना।

केवल यही बात फॉरेंसिक मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त होती। विषय 7741 को असामान्य बनाने वाली बात - और वह बात जिसने उसे एक ऐसे अकादमिक विवाद का विषय बना दिया जिसका सार्वजनिक रूप से कभी समाधान नहीं हुआ - वह थी जो उसने डॉ. हॉलिस के साथ अपने सत्रों के दौरान कही थी। उन्होंने धैर्यपूर्वक समझाया कि वे घरों में रहने वाले लोगों की आवाज़ें रिकॉर्ड नहीं कर रहे थे। वे उन लोगों की आवाज़ें रिकॉर्ड कर रहे थे जो रात में उनसे मिलने आते थे।

उन्होंने कई सत्रों में इन आगंतुकों का वर्णन एक समान, सटीक शब्दों में किया: वे सुबह दो से चार बजे के बीच आते थे, वे ऐसी कोई आवाज़ नहीं निकालते थे जिसे इंसानी कान सुन सकें, लेकिन वे श्रव्य आवृत्ति सीमा के निचले सिरे पर एक ऐसी ध्वनि उत्पन्न करते थे जिसे उनका रिकॉर्डिंग उपकरण पकड़ सकता था। उन्होंने कहा कि उनके पास इन रिकॉर्डिंग के घंटों का संग्रह है। उन्होंने इस निम्न-आवृत्ति ध्वनि की विशिष्ट पहचान से अलग-अलग आगंतुकों की पहचान करना सीखने में वर्षों बिताए थे, ठीक उसी तरह जैसे कोई पक्षी प्रेमी उनकी आवाज़ों से प्रजातियों में अंतर करना सीखता है।

उन्होंने अपने तीसरे सत्र में डॉ. हॉलिस से पूछा कि क्या वह रिकॉर्डिंग में से एक सुनना चाहेंगी। उन्होंने हाँ कहा।

अगले सप्ताह समीक्षा सत्र में उन्होंने रिकॉर्डिंग चलाई। उन्होंने इसे पूरी अवधि तक नहीं चलाया। लगभग चार मिनट बाद उन्होंने इसे रोक दिया, उस बिंदु पर जहाँ कम आवृत्ति वाली ध्वनि—जिसे उन्होंने अपने नोट्स में "मौजूद लेकिन तुरंत चिंताजनक नहीं" बताया —में एक ऐसा परिवर्तन आया जिसे वे तकनीकी रूप से स्पष्ट नहीं कर सकीं, लेकिन केवल "जागरूक" के रूप में वर्णित कर सकीं। मानो ध्वनि उत्पन्न करने वाले ने माइक्रोफ़ोन को महसूस कर लिया हो। मानो उस क्षण उसे समझ आ गया हो कि उसे सुना जा रहा है।

डॉ. हॉलिस ने सत्र समाप्त किया। उन्होंने केस संख्या 7741 एक सहकर्मी को सौंप दिया। अपने लिखित हैंडओवर नोट्स में, उन्होंने रिकॉर्डिंग का नैदानिक शब्दों में वर्णन किया और आगे के विश्लेषण के लिए रिकॉर्डिंग को सुरक्षित रखने की सिफारिश की। उसी शाम लिखी गई एक निजी डायरी प्रविष्टि में, जो 2021 में उनकी सेवानिवृत्ति के बाद उनके कागजात के बीच मिली, उन्होंने केवल इतना लिखा: “इसे पता था कि मैं वहाँ थी। यहाँ तक कि वर्षों पहले रिकॉर्ड की गई एक रिकॉर्डिंग में भी, एक ऐसे घर में जहाँ मैं कभी नहीं गई, और एक ऐसे व्यक्ति से संबंधित जिसे मैंने पिछले महीने से पहले कभी नहीं सुना था - इसे पता था। मैं इसे मुड़ते हुए महसूस कर सकती थी। मैं इसे देखते हुए महसूस कर सकती थी।”

अध्याय 7: वह घर जो हिल गया

केटलब्रुक के बाहरी इलाके में स्थित एक घर के बारे में एक दस्तावेजी मामला है - दस्तावेजी इस अर्थ में कि कई स्वतंत्र गवाहों ने एक ही घटना की सूचना दी है, हालांकि कोई आधिकारिक जांच कभी भी सार्वजनिक रूप से जारी नहीं की गई है - जो कि

काउंटी रोड 7 पर दक्षिण से इसकी ओर आने वाले पर्यवेक्षकों को हिलता हुआ प्रतीत होता है।

नाटकीय ढंग से नहीं। हॉलीवुड फिल्मों के भूतिया घर की तरह, जो अपनी नींव पर डगमगाता और हिलता रहता है, यह हलचल सूक्ष्म है: संरचना का हल्का सा घुमाव, शायद पाँच या दस डिग्री, जो पलक झपकने और अगली पलक झपकने के बीच होता है, जिससे सड़क के सापेक्ष घर की स्थिति हमेशा उस कोण से थोड़ी अलग होती है जिस कोण से आपने इसे कुछ क्षण पहले देखा था। केटलब्रुक क्षेत्र के लंबे समय से रहने वाले निवासी, जिन्होंने अपना पूरा जीवन काउंटी रोड 7 पर गाड़ी चलाते हुए बिताया है, इस अनुभूति को उन ऑप्टिकल भ्रमों के समान बताते हैं जिनमें एक स्थिर छवि झिलमिलाती या घूमती हुई दिखाई देती है - सिवाय इसके कि घर एक भ्रम नहीं है, और यह स्थिर नहीं है, और घुमाव सभी देखने वालों द्वारा समान रूप से अनुभव नहीं किया जाता है।

सभी देखने वालों को जो एक समान दिखाई देता है, वह है दरवाज़ा। घर का एक ही मुख्य दरवाज़ा है, जो काले रंग से रंगा हुआ है, और घर की दिशा चाहे जो भी हो—चाहे देखने वाला इमारत के जिस भी हिस्से को देख रहा हो—काला दरवाज़ा हमेशा सीधे सामने होता है। हमेशा केंद्र में। जैसा कि कई देखने वालों ने बताया है, हमेशा खुद को प्रस्तुत करता हुआ। मानो दरवाज़े के पीछे जो भी है, वह चाहता है कि आप दस्तक दें। केटलब्रुक में रहने वाला कोई भी व्यक्ति दरवाजा नहीं खटखटाता। वे काउंटी रोड 7 से सीधे आगे सड़क पर नज़र रखते हुए गाड़ी चलाते हैं, और अगर उनके यात्री घर के बारे में पूछते हैं, तो वे कहते हैं कि यह खाली है, कई सालों से खाली है, इसमें कुछ भी नहीं है। और वे थोड़ी तेज़ी से गाड़ी चला देते हैं।

पीटर क्रेन नाम के एक पत्रकार ने 2016 में इस घर का दौरा किया, ग्रामीण लोककथाओं और स्थानीय किंवदंतियों के अस्तित्व पर लिखे जा रहे अपने लेख के सिलसिले में। वे काउंटी रोड 7 के अंत तक गाड़ी चलाकर गए और घर से पचास गज की दूरी पर कार खड़ी करके कुछ देर तक उसे देखते रहे। उन्होंने अपने इस दौरे के दौरान लिखे नोट्स में पुष्टि की कि घूमने की घटना वास्तविक थी - या कम से कम उन्होंने इसे अनुभव किया था, और वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते थे - और उन्होंने यह भी पुष्टि की कि दरवाजा काला था, और वे जहाँ भी खड़े होते, वह सीधे उनकी ओर खुलता था। उन्होंने गौर किया कि घर अच्छी हालत में लग रहा था, एक परित्यक्त इमारत की तुलना में कहीं बेहतर हालत में। उन्होंने देखा कि घर के चारों ओर का लॉन overgrown नहीं था। उन्होंने यह भी देखा कि खिड़कियों में पर्दे लगे थे - जालीदार, सफेद, एकदम साफ।

गाड़ी में वापस बैठने और बिना दरवाजा खटखटाए चले जाने से पहले उन्होंने एक और बात पर ध्यान दिया। काले दरवाजे के सबसे पास वाली खिड़की के पर्दे हल्के से हिल रहे थे, मानो अंदर से आती हवा के झोंके से हिल रहे हों। लेकिन सभी खिड़कियाँ बंद थीं। और यह हलचल आकस्मिक नहीं थी, न ही हवा के फव्वारे की तरह। यह लयबद्ध थी। नियमित। उन्होंने अपने नोट्स में लिखा, यह किसी धड़कन या साँस की तरह समयबद्ध थी।

पीटर क्रेन का ग्रामीण लोककथाओं पर लिखा लेख नवंबर 2016 में प्रकाशित हुआ था। काउंटी रोड 7 पर स्थित घर के बारे में लिखे गए अंश को संपादक ने स्थान की कमी का हवाला देते हुए हटा दिया था। क्रेन ने अपने मित्रों को बताया कि असली कारण यह था कि संपादक ने घर के बारे में स्वयं शोध किया था और काउंटी संपत्ति अभिलेखों में कुछ ऐसा पाया था जिसके बारे में उन्होंने चर्चा करने से इनकार कर दिया था। उन्हें कभी पता

नहीं चला कि वह क्या था। वे फिर कभी केटलब्रुक नहीं गए। लेकिन वर्षों बाद उन्होंने लोगों को बताया कि वे अब भी उन पर्दों के बारे में सोचते हैं। वे अब भी सोचते हैं कि उन पर्दों के दूसरी ओर कौन खड़ा था, उस खाली घर के अंधेरे में सांस ले रहा था।

अध्याय 8: अंतिम बार देखा गया

एनालिस व्रेन के लापता होने का मामला आधिकारिक तौर पर कभी बंद नहीं किया गया, जिसका काउंटी शेरिफ विभाग की भाषा में सीधा सा मतलब है कि वह कभी नहीं मिलीं - चाहे जीवित हों या मृत - और इसलिए इस मामले का कोई निपटारा दर्ज नहीं किया गया है। वह मार्च 2014 में, 31 वर्ष की आयु में, व्योमिंग के ब्रिजर-टेटन राष्ट्रीय वन में एक शिविर स्थल से लापता हो गईं, जहाँ वह महीनों से नियोजित एक एकल बैकपैकिंग यात्रा पर थीं और जिसे उन्होंने रवाना होने से कुछ दिन पहले अपने दोस्तों को भेजे गए संदेशों में "बिल्कुल वही जो मुझे अभी चाहिए" के रूप में वर्णित किया था। वह अनुभवी थीं। उनके पास सही उपकरण थे। व्योमिंग में उस समय के हिसाब से मौसम भी अनुकूल था।

वह जंगल में अपने तीसरे दिन की सुबह अपने शिविर स्थल से चली गई और वापस नहीं लौटी।

आधिकारिक गुमशुदा व्यक्तियों की रिपोर्ट में जिस बात का जिक्र नहीं है, लेकिन खोज और बचाव समन्वयक ने खोज के दौरान अनौपचारिक रूप से अपनी टीम के कई सदस्यों से जिस बात का जिक्र किया था, और जिसे उन टीम सदस्यों ने बाद में जंगल में जीवित रहने और रहस्यमय ढंग से लापता होने से संबंधित विभिन्न ऑनलाइन मंचों पर बताया है, वह तस्वीरों का सवाल है।

एनालिस व्रेन का कैमरा उनके कैंपसाइट पर मिला, मेमोरी कार्ड सही सलामत था। उसमें मौजूद तस्वीरों में उनकी यात्रा के पहले दो दिन कैद थे: कैंपसाइट, पगडंडियों के दृश्य, जंगली फूलों के कई क्लोज-अप शॉट और चट्टान या पेड़ के सहारे कैमरा रखकर ली गई कई सेल्फी, जिनमें एक महिला साफ तौर पर आनंदित, स्वस्थ, खुश और तनावमुक्त दिख रही थी। एक एकल वन्य यात्रा का यह एक सामान्य दस्तावेजीकरण था।

कार्ड पर आखिरी तस्वीर उसकी गुमशुदगी से एक रात पहले रात 11:47 बजे की थी। यह तस्वीर उसके तंबू के अंदर फ्लैश ऑन करके ली गई थी और इसमें तंबू के प्रवेश द्वार के पास से तंबू का अंदरूनी हिस्सा दिख रहा था — मानो एनालिस अपने स्लीपिंग बैग में लेटी हुई थी और उसने कैमरे को तंबू की छत की ओर उठाकर शटर दबाया हो। तस्वीर में तंबू की नायलॉन की छत, उसमें सिला हुआ जालीदार स्टोरेज पॉकेट और एक दीवार दिखाई दे रही थी।

और बगल की दीवार पर, फ्लैश की रोशनी में साफ़ दिखाई दे रही थी, एक हाथ की परछाई। एक बड़ा हाथ, वयस्क के आकार का, उंगलियां फैली हुई, हथेली तंबू के कपड़े के बाहर सपाट। यह हाथ एनालिस का नहीं था - उसके दोनों हाथ तस्वीर में थे, फ्रेम के किनारों पर दिखाई दे रहे थे, एक हाथ में कैमरा था। तंबू की दीवार पर वह हाथ किसी और का था। किसी और का। वह तंबू की दीवार के इतना करीब था कि परछाई तेज किनारों वाली थी, और परछाई में वे बारीकियाँ भी थीं जो स्पष्ट नहीं होनी चाहिए थीं - हथेली की अलग-अलग रेखाएं, त्वचा की बनावट - मानो परछाई का स्रोत खुद को तंबू के बाहर बहुत ज़ोर से दबा रहा हो। अंदर की ओर दबा रहा हो। ऐसे कपड़े से होकर

गुजरने की कोशिश कर रहा हो जो किसी भी चीज़ को अंदर जाने देने के लिए नहीं बना था।

एनालिस व्रेन का पता नहीं चला है। तस्वीर असली है। ये दोनों बातें सच हैं, और इनमें से कोई भी दूसरी बात की व्याख्या नहीं करती।

अध्याय 9: सपनों का घर

न्यू ऑरलियन्स के 1411 मोरियार्टी लेन स्थित इमारत का अध्ययन करने वाले वास्तुकारों ने - उनमें से कुछ ही ऐसे हैं जो इसके अंदर जा पाए हैं, जिसके लिए शहर द्वारा जारी की जाने वाली विशेष अनुमति की आवश्यकता होती है, जिसे जारी करने में शहर उल्लेखनीय अनिच्छा दिखाता है - उल्लेखनीय रूप से एकमत होकर कहा है कि यह घर एक इमारत के रूप में कार्य नहीं करना चाहिए। उनका तात्पर्य किसी अलौकिक अर्थ में नहीं है; उनका मतलब संरचनात्मक और ज्यामितीय रूप से है। कमरे आपस में मेल नहीं खाते। प्रत्येक कमरे का क्षेत्रफल, जब गणना करके जोड़ा जाता है, तो इमारत के कुल क्षेत्रफल से इतना अधिक होता है कि कोई भी पारंपरिक सर्वेक्षण विधियों का उपयोग करके इसकी व्याख्या नहीं कर पाया है। गलियारे अंदर से बाहर की तुलना में अधिक लंबे हैं। दूसरी मंजिल पर एक कमरा है - एक छोटा सा कमरा, बिना खिड़की वाला, जिसमें एक ऐसे दरवाजे से प्रवेश किया जा सकता है जो मूल वास्तुशिल्प योजना में कहीं भी नहीं दिखता - जिसकी छत अठारह फीट ऊंची है, जबकि यह छत के उस हिस्से के नीचे स्थित है जो बाहर से देखने पर फर्श से नौ फीट से अधिक ऊंचा नहीं दिखता।

इस इमारत का निर्माण 1887 में ऑक्टेवियस बेल नामक व्यक्ति ने करवाया था, जो ऐतिहासिक रूप से एक सफल कपास व्यापारी थे। उनके पास वास्तुकला का कोई प्रशिक्षण नहीं था और उस समय के किसी वास्तुकार से उनका कोई संबंध भी नहीं था। उन्होंने स्वयं ही इमारत का डिज़ाइन तैयार किया था, जिसके लिए उन्होंने कथित तौर पर एक ही सप्ताहांत में योजनाएँ बनाईं। वे लगभग साठ घंटे तक लगातार काम करते रहे और इस दौरान उन्होंने भोजन और नींद का त्याग भी नहीं किया। उनके व्यापारिक साझेदार ने परिवार के एक सदस्य को लिखे पत्र में इस अवधि का वर्णन करते हुए बेल के व्यवहार को "किसी स्वप्न में डूबे व्यक्ति के समान" बताया - "लक्ष्यपूर्ण, एकाग्र, लेकिन पूरी तरह से आपके साथ कमरे में उपस्थित नहीं।"

1889 में घर बनकर तैयार होते ही बेल उसमें रहने लगे और 1901 में अपनी मृत्यु तक अकेले ही रहे। उनका कोई परिवार नहीं था। उनसे मिलने बहुत कम लोग आते थे। उनके अंतिम वर्षों में जो कुछ लोग उनसे मिलने आए, उन्होंने बताया कि बेल - जो घर में आने से पहले एक मिलनसार और हंसमुख व्यक्ति थे - बदल गए थे। वे शांत हो गए थे। कमरों में उनका व्यवहार अलग ही था, मानो वे किसी ऐसे नक्शे के सहारे चल रहे हों जिसे केवल वे ही देख सकते हों। वे घर के बारे में ऐसे बात करते थे मानो वह कोई सजीव वस्तु हो, लेकिन उस स्नेह से नहीं जो किसी ऐसे व्यक्ति में होता है जो अपने घर से प्यार करता हो। उनकी आवाज़ में एक ऐसे व्यक्ति का सख़्त और संयमित लहजा था जो किसी जटिल रिश्ते का वर्णन कर रहा हो।

अपने जीवन के अंतिम दशक में लिखे गए कुछ पत्रों में से एक में, बेल ने अपने एक पूर्व व्यापारिक सहयोगी को संबोधित करते हुए लिखा, जिसने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा था: “घर ठीक है। यह दिन में सोता है और रात में सोचता है। मैं इसकी लय का आदी हो

गया हूँ, जैसा कि हर कोई हो जाता है। कुछ कमरे ऐसे हैं जिनमें मैं अब नहीं जाता, डर के कारण नहीं, बल्कि इस अहसास के कारण कि वे अब मेरे नहीं रहे। मैंने समझौता कर लिया है, जैसा कि हमेशा करना पड़ता है, जब कोई अपने से अधिक उम्रदराज और धैर्यवान व्यक्ति के साथ जगह साझा करता है।"

खुद के बनाए घर में किसी से भी पुराना होने का क्या मतलब हो सकता है, यह एक ऐसा सवाल है जो बेल हाउस के अध्येता एक सदी से भी अधिक समय से पूछते आ रहे हैं। वास्तुकला की विसंगतियाँ एक प्रकार का उत्तर सुझाती हैं। दूसरा प्रकार का उत्तर उस अनुभव से मिलता है जो तीन अलग-अलग दशकों में काम करने वाले तीन अलग-अलग शहर निरीक्षकों ने अठारह फुट ऊंची छत वाले बिना खिड़की वाले कमरे में प्रवेश करते समय बताया: एक क्षणिक अनुभूति, मानो ऊपर से कोई देख रहा हो। उन्होंने स्पष्ट किया कि छत से नहीं, बल्कि छत के ऊपर से। किसी ऐसी चीज़ से जो कमरे की छत और बाहरी दुनिया के फर्श के बीच की जगह में मौजूद थी, उस खाली जगह में जहाँ तार्किक रूप से कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

एक ऐसी जगह जो इमारत की असंभव ज्यामिति के हिसाब से कई फीट मोटी होनी चाहिए। इतनी बड़ी कि उसमें कोई चीज अंधेरे में लिपटी हुई, छत के पार देखती रहे, चाहे उसकी आंखें किसी भी चीज से बनी हों।

अध्याय 10: टोल बूथ

ग्रामीण पेंसिल्वेनिया में इंटरस्टेट 78 एक ऐसे क्षेत्र से होकर गुजरता है जहाँ नीची पहाड़ियाँ और घने वन हैं। राज्य परिवहन विभाग अपने रखरखाव लॉग में इसे "गैप सेगमेंट" कहता है। यह राजमार्ग का सत्रह मील लंबा खंड है, जो भौगोलिक और

प्रशासनिक कारणों से, आई-78 का वह अंतिम भाग था जिसे वर्तमान फ्रीवे मानकों के अनुरूप बनाया गया था, और जो आज भी उस पुरानी सड़क की कुछ विशेषताओं को बरकरार रखता है जो कभी इसी मार्ग पर चलती थी। इनमें से एक विशेषता टोल बूथ है। आधिकारिक तौर पर, वह बूथ मौजूद नहीं है। पेंसिल्वेनिया टर्नपाइक आयोग के पास इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। राज्य परिवहन विभाग के सर्वेक्षण मानचित्रों में उस स्थान पर कोई बूथ नहीं दिखाया गया है जहाँ चालकों ने कई बार टोल चुकाने के लिए रुकने की सूचना दी है। बूथ पर कोई भी ऐसा कर्मचारी मौजूद नहीं है जिसकी नियुक्ति की पुष्टि की जा सके। फिर भी वह बूथ मौजूद है - या ऐसा प्रतीत होता है, खासकर उन रातों में जब दृश्यता कम होती है, जब बारिश, कोहरा या घना कोहरा आने वाले वाहनों की हेडलाइट्स को धुंधली, अप्रभावी रोशनी में बदल देता है - और टोल बूथ की खिड़की के धुंधले शीशे के पीछे बैठा व्यक्ति आपसे पैसे लेने को तैयार है।

टोल बूथ के अनुभव के विवरण अलग-अलग हैं, लेकिन उनका सामान्य स्वरूप एक जैसा है। कम दृश्यता में I-78 पर पश्चिम की ओर जा रहे चालक को आगे सड़क पर एक बूथ दिखाई देता है - कंक्रीट और कांच से बनी एक संरचना, जो कोहरे में बिल्कुल एक वैध टोल प्लाजा जैसी दिखती है। वे गति धीमी करते हैं और एक चालू सिग्नल लाइट द्वारा इंगित लेन में गाड़ी रोकते हैं। बूथ में बैठा व्यक्ति कांच की खिड़की खोलता है। वे टोल मांगते हैं, जिसे विभिन्न गवाहों ने अलग-अलग बताया है, पचास सेंट से लेकर सात डॉलर तक, लेकिन हमेशा पुराने नोटों में - ऐसे सिक्के जिन्हें चालक बाद में जांचते हैं और पाते हैं कि वे असली मुद्रा हैं, लेकिन दशकों पुराने नोट, 1960 के दशक के क्वार्टर और 1940 के दशक के डाइम।

बूथ में बैठा व्यक्ति टोल की राशि बताने के अलावा कुछ नहीं बोलता। गवाहों द्वारा दिए गए विवरण कुछ मायनों में एक जैसे हैं और कुछ मायनों में एक जैसे। एक जैसे: उन्होंने भूरे या गहरे नीले रंग की वर्दी पहनी हुई है, जो कई दशकों पुराने ज़माने की लगती है। एक जैसे: उनका चेहरा दिखाई तो देता है, लेकिन उस पर ठीक से फोकस करना मुश्किल है, मानो देखने की दूरी के हिसाब से वह थोड़े गलत फोकल प्लेन में हो। एक जैसे नहीं: कुछ गवाह उस व्यक्ति को पुरुष बताते हैं, कुछ महिला, और कुछ तय नहीं कर पाते। कुछ उसे युवा बताते हैं, तो कुछ बहुत बूढ़ा। कई गवाहों का कहना है कि विचार करने पर उन्हें पक्का यकीन नहीं है कि बूथ में बैठा व्यक्ति सचमुच एक इंसान था भी या नहीं।

जो बात लगातार सामने आती है, वह यह है कि टोल चुकाने और गाड़ी चलाकर निकल जाने के बाद क्या होता है। खास तौर पर, बूथ गायब हो जाता है। धीरे-धीरे नहीं, न ही कोहरे की वजह से। बस: आप अपने रियरव्यू मिरर में देखते हैं और वह वहां नहीं होता। सड़क खाली होती है। कोहरा घना होता है। और बूथ चाहे जो भी हो—शीशे के पीछे बैठा व्यक्ति चाहे जो भी हो, आपने जो भी लेन-देन किया हो—उसका रिकॉर्ड सिर्फ आपकी कार के कप होल्डर में पड़े पुराने सिक्कों और उस खास ठंडक में रह जाता है, जिसे कई गवाहों ने महसूस किया है कि बूथ से गुजरने के बाद आपके हाथों में बस जाती है और अगले कस्बे तक पहुंचने तक नहीं जाती।

अध्याय 11: पड़ोसी की रोशनी

जेसन कोल्बी अपने अपार्टमेंट में तीन साल से रह रहा था, तब जाकर उसकी नज़र उस खिड़की पर पड़ी। यह अपने आप में कोई असामान्य बात नहीं थी - इमारत पुरानी थी

और उसमें कई छोटी-छोटी चीज़ें जमा हो गई थीं जिन्हें नए निवासी अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते थे, और वह खिड़की सीढ़ियों के बाहरी हिस्से की दीवार पर थी जिसका इस्तेमाल जेसन शायद ही कभी करता था। वहाँ तक पहुँचने के लिए एक खास जगह पर खड़े होकर ऊपर की ओर ऐसे कोण से देखना पड़ता था जो सीढ़ियों पर चढ़ने या उतरने के सामान्य तरीके से अलग था। लेकिन जब जेसन की नज़र उस खिड़की पर पड़ी, तो उसकी रोशनी ने उसे खास बना दिया।

वह बत्ती हमेशा जलती रहती थी। दिन-रात, हर मौसम में, जिस खिड़की के पीछे से यह बत्ती जलती थी, उसकी गर्म, सुनहरी रोशनी हमेशा एक जैसी रहती थी—पहले के किसी भी अवलोकन से न तो तेज और न ही धीमी, दिन के समय या बाहर से आने वाली प्राकृतिक रोशनी के कोण से भी उसमें कोई बदलाव नहीं होता था। जेसन ने उस पर ध्यान देना शुरू कर दिया, जैसे कोई व्यक्ति किसी असामान्य चीज़ को देखता है और तुरंत उसका कारण नहीं बता पाता, हर बार सीढ़ियों का इस्तेमाल करते समय वह उसे देखता था और मन ही मन यह नोट करता था कि क्या उसमें कोई बदलाव आया है। लेकिन कोई बदलाव नहीं आया। तीन महीने तक उसने देखा, और रोशनी में कोई बदलाव नहीं आया।

जेसन ने इस बारे में अपने बिल्डिंग मैनेजर, गॉर्डन नाम के एक व्यावहारिक व्यक्ति से बात की, जो हर दिन एक ही ब्रांड की फलालैन शर्ट पहनता था और जेसन की हर बात को उसी नपे-तुले संदेह से देखता था जैसे उसने कई सालों में बहुत कुछ सुना हो। गॉर्डन ने सुना, एक बार सिर हिलाया और कहा कि वह इस मामले की जांच करेगा। एक हफ्ते बाद, जब जेसन ने दोबारा संपर्क किया, तो गॉर्डन ने उसे बताया कि वह खिड़की ऊपरी मंजिल पर एक यूटिलिटी रूम से जुड़ी थी - एक छोटा कमरा जिसका इस्तेमाल निर्माण

उपकरणों के लिए किया जाता था और जिसमें नियमित रूप से आने-जाने की आवश्यकता नहीं होती थी। उसने कहा कि वह ऊपर जाकर जांच कर चुका है और उसे कुछ भी असामान्य नहीं मिला। उसने कहा कि यूटिलिटी रूम की लाइट एक सामान्य सर्किट पर लगी एक सामान्य लाइट थी और उसके चालू रहने का कोई कारण नहीं था, लेकिन वह चालू थी और उसने उसे बंद कर दिया था।

अगली सुबह खिड़की की बत्ती फिर से जल उठी।

यह सिलसिला छह सप्ताह तक चलता रहा। गॉर्डन ने चार बार और लाइट बंद की। हर सुबह, वह फिर से चालू हो जाती थी। एक इलेक्ट्रीशियन को बुलाया गया और उसने पुष्टि की कि सर्किट सामान्य रूप से काम कर रहा है, वायरिंग में कोई खराबी या गड़बड़ी नहीं है, और लाइट इमारत के ग्रिड से सामान्य तरीके से बिजली ले रही है। उसने लाइट बंद की। वह फिर से चालू हो गई। उसने सर्किट ब्रेकर की जाँच की। उसने बल्ब बदला। उसने फिक्स्चर बदला। लाइट हर बार चालू हो जाती थी, और हर बार वह उतनी ही चमकदार, उतनी ही गर्म और उतनी ही स्थिर होती थी जितनी हमेशा से होती आई थी। जिस रात बिल्डिंग मैनेजर ने आखिरकार यूटिलिटी रूम को स्थायी रूप से सील करने का फैसला किया, उससे ठीक पहले जेसन ने एक चाबी का इस्तेमाल किया, जिसे उसने कुछ छोटे-छोटे धोखे के जरिए हासिल किया था, जिन पर उसे गर्व नहीं था, और कमरे के अंदर देखने के लिए ऊपर चला गया।

कमरा छोटा था और उसमें पुरानी इन्सुलेशन और धूल की गंध आ रही थी। दीवारों के किनारे निर्माण सामग्री पड़ी थी—पाइप, बिजली के पैनल, एक बंद पड़ा हीटिंग यूनिट। छत के बीचोंबीच एक साधारण औद्योगिक फिटिंग लगी थी, जिसमें एक साधारण सा बल्ब था जो लगातार सुनहरी रोशनी दे रहा था। कमरा वैसे तो खाली था। जेसन कुछ देर

कमरे के बीचोंबीच खड़ा रहा, चारों ओर देखता रहा, और फिर उसने खिड़की की ओर देखा। वही खिड़की, जो बाहर से और नीचे से, उस रोशनी का स्रोत थी जिसे वह महीनों से देखता आ रहा था।

अंदर से खिड़की अपारदर्शी थी। धुंधली नहीं, गंदी नहीं - बस अपारदर्शी। एकसमान, मटमैला काला रंग, मानो किसी ने उसे अंदर से किसी ऐसी चीज़ से रंग दिया हो जिससे ज़रा भी रोशनी अंदर न आ सके। पीछे गलियारे से कोई रोशनी अंदर नहीं आ रही थी। फिर भी, नीचे की मंज़िल से खिड़की से रोशनी आ रही थी - गर्म, सुनहरी, लगातार।

जेसन काफी देर तक उस कमरे में खड़ा रहा, खिड़की को देखता रहा, जो कुछ वह देख रहा था उसकी ज्यामिति को समझने की कोशिश करता रहा। एक ऐसी खिड़की जिससे बाहर से रोशनी तो आती थी, लेकिन अंदर से कोई रोशनी नहीं आती थी। एक ऐसी खिड़की जो अंदर से अंधेरी और बाहर से चमकदार दिखती थी। एक ऐसी खिड़की जो, जिसे वह शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा था, किसी तरह से गलत दिशा में थी।

उसने कमरे को अंदर से बंद किया और अपने अपार्टमेंट में वापस चला गया। वह सुबह होने तक अपनी रसोई में बैठा रहा और उसने खिड़की के बारे में न तो सोचा और न ही कोशिश की। इसके बजाय वह इस बारे में सोच रहा था कि खिड़की क्या दिखा रही होगी। उसे नीचे से नहीं, बल्कि जो भी दूसरी तरफ से देख रहा होगा - इमारत के बाहर से, दीवार के बाहर से, भौतिक स्थान की सामान्य व्यवस्था के बाहर से - वह उस छोटे से कमरे में जलती हुई सुनहरी रोशनी को देख रहा होगा जो पूरी रात, हर रात, लगातार और बिना किसी कारण के जलती रहती थी, मानो कोई दीपक किसी को घर का रास्ता दिखाने के लिए जलता रह गया हो।

अध्याय 12: मिट्टी

डीकन रोड पर स्थित यह खेत छह पीढ़ियों से एल्ड्रिच परिवार के पास था। यह एक कृषि प्रधान खेत था - मक्का, सोयाबीन और कुछ शीतकालीन गेहूं की खेती होती थी - और वर्षों से यह इतना उत्पादक रहा था कि मध्य इलिनोइस में कृषि जीवन को परिभाषित करने वाले विभिन्न उतार-चढ़ावों, जैसे कि वस्तुओं की कीमतों और मौसम में होने वाले बदलावों, के बावजूद परिवार का भरण-पोषण कर सके। मिट्टी उत्तम थी। वास्तव में, उत्तम से भी बेहतर: एल्ड्रिच की ज़मीन की मिट्टी आसपास की ज़मीन की तुलना में लगातार अधिक उपजाऊ और उत्पादक थी, यह तथ्य पड़ोसी किसानों ने पीढ़ियों से देखा था और कई कृषि विस्तार एजेंटों ने भी इस पर टिप्पणी की थी, हालांकि वे इसका कारण नहीं बता पाए थे। मिट्टी का परीक्षण उत्कृष्ट था। उसकी संरचना आदर्श थी। पैदावार लगातार उच्च थी।

उस समय यह परंपरा थी कि मिट्टी कहाँ से आई, यह नहीं पूछा जाता था।

खेत के वर्तमान प्रबंधक 64 वर्षीय हेरोल्ड एल्ड्रिच थे, जिन्हें यह खेत अपने पिता से विरासत में मिला था और वे समय आने पर इसे अपनी बेटी को सौंपने की उम्मीद रखते थे। हेरोल्ड एक शांत स्वभाव के व्यक्ति थे जो पूरे जिले में सबसे बढ़िया मक्का उगाते थे और जब उनसे मिट्टी प्रबंधन के तरीकों के बारे में पूछा जाता था, तो उनके जवाब तकनीकी रूप से तो सही होते थे, लेकिन किसी न किसी रूप में अधूरे होते थे - ऐसे जवाब जो 'क्या' का उत्तर तो देते थे, लेकिन 'क्यों' का पूरी तरह से जिक्र नहीं करते थे। वे फसलों को सही ढंग से बारी-बारी से बोते थे। वे नियमित रूप से मिट्टी का परीक्षण करते

थे। वे आवश्यकतानुसार उसमें सुधार करते थे। वे कभी भी दूसरी बात पर चर्चा नहीं करते थे।

दूसरी बात यह थी: हर नवंबर में, अंतिम फसल कटाई के एक सप्ताह बाद, हैरोल्ड अंधेरा होने के बाद खेतों में जाता और खुदाई करता। वह एक ऐसे तरीके से खुदाई करता जो कृषि के किसी नियम का पालन नहीं करता था—न पंक्तियों में, न ही मिट्टी परीक्षण के परिणामों के आधार पर, बल्कि उन विशिष्ट स्थानों पर जिन्हें उसने दशकों के अभ्यास से याद कर लिया था। हर स्थान पर, वह लगभग तीन फुट गहरा और दो फुट चौड़ा गड्ढा खोदता। वह गड्ढे में कुछ रखता। फिर उसे ढक देता। फिर मिट्टी को समतल कर देता। उसकी बेटी, मारा, एक बार उसके पीछे गई थी—वह सत्रह साल की थी, वह वर्षों से रात की इन यात्राओं के बारे में उत्सुक थी, और वह उस उम्र में थी जहाँ जिज्ञासा सावधानी पर हावी होने लगी थी। वह खेत के किनारे से अपने पिता को काम करते हुए देखती रही। अंधेरे में वह यह नहीं देख सकती थी कि वह गड्ढों में क्या रख रहा है। लेकिन हर गड्ढे के भरने और समतल होने के बाद, वह खोदी हुई मिट्टी से उठने वाली एक आवाज़ सुन सकती थी—एक ऐसी आवाज़ जिसे उसने वर्षों बाद, केवल एक ही व्यक्ति को बताया, संतोष जैसी आवाज़ के रूप में वर्णित किया। जैसे शांति की आवाज़। जैसे कोई बहुत बूढ़ा और बहुत भूखा प्राणी लंबे समय से जिस भोजन का इंतजार कर रहा था, उसे खा रहा हो।

वह घर लौट गई और फिर कभी उसके पीछे नहीं गई और उसने जो देखा था उसका कभी ज़िक्र नहीं किया। जब हेरोल्ड ने उसे खेत सौंप दिया - विरासत के रूप में नहीं, क्योंकि हेरोल्ड एल्ड्रिच की मृत्यु नहीं हुई थी, बल्कि वह नवंबर में एक दिन अपने खेतों में गया और वापस नहीं लौटा, जिसे काउंटी ने गुमशुदा व्यक्ति का मामला दर्ज किया था

और अंततः बिना किसी समाधान के बंद कर दिया गया था - तो उसने फार्महाउस की रसोई में उसकी लिखावट में एक नोटबुक पाई। नोटबुक में यह नहीं बताया गया था कि वह गड्ढों में क्या रख रहा था। इसमें केवल छह पीढ़ियों पहले की तारीखों की एक सूची थी, विभिन्न लिखावटों में, प्रत्येक प्रविष्टि नवंबर की एक रात को दर्ज करती थी। और नोटबुक के पहले पृष्ठ पर, जो निश्चित रूप से खेत के पहले मालिक एल्ड्रिच की लिखावट रही होगी, एक परिचयात्मक वाक्य लिखा था:
मिट्टी वही देती है जो उसे दिया जाता है। उसे वही दो जो वह मांगती है। इसके नीचे, हेरोल्ड की लिखावट में, उसका अपना एक कथन है: वह जो मांगे, वह मत मांगो।

अध्याय 13: स्टेशनों के बीच की ध्वनि

रेडियो स्टेशन विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम पर विशिष्ट आवृत्तियों पर मौजूद होते हैं, और इन आवृत्तियों के बीच—उन अंतरालों में जहाँ कोई लाइसेंस प्राप्त प्रसारक प्रसारण नहीं करता—सैद्धांतिक रूप से कुछ भी नहीं होता। स्थैतिक ध्वनि। वायुमंडलीय शोर। सौर गतिविधि और ब्रह्मांडीय विद्युत चुम्बकीय गतिविधि का हल्का सा अवशेष।
पृष्ठभूमि विकिरण। ऐसा कुछ भी नहीं जिसे संकेत समझा जा सके। ऐसा कुछ भी नहीं जिसे आवाज समझा जा सके।
लीह गुस्ताफसन अटलांटा के उपनगर में एक व्यावसायिक परिसर में रात्रिकालीन सुरक्षा गार्ड थीं, जो अपनी ड्यूटी के शांत समय में कॉलेज के दिनों से अपने पास रखे पोर्टेबल ट्रांजिस्टर रेडियो पर टॉक रेडियो सुनती थीं। 2018 की सर्दियों में, एक बेहद शांत और खाली इमारत में, रात ग्यारह बजे से सुबह सात बजे तक की अपनी ड्यूटी के

दौरान, वह कुछ सुनने के लिए अलग-अलग स्टेशनों को बदल रही थीं, तभी उनकी नज़र अलग-अलग आवृत्तियों के बीच के अंतराल से गुज़री और उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। उसने स्कैन करना बंद कर दिया। उसने रेडियो को स्थिर रखा। आवाज़ धीमी थी लेकिन समझ में आ रही थी, शोर की एक परत के नीचे दबी हुई थी लेकिन मौजूद थी—जैसे कोई आवाज़ दीवार के पार से, या बगल के कमरे से, या बहुत दूर से सुनाई देती है। वह एक ऐसी भाषा में बोल रही थी जिसे वह पहचान नहीं पा रही थी। बोलने की लय किसी भी ऐसी भाषा की लय नहीं थी जिससे वह परिचित थी, न ही जर्मन, रूसी, अरबी या किसी भी ऐसी भाषा की लय थी जिससे वह थोड़ी-बहुत परिचित थी। लय इस तरह से अलग थी जिसे वह ठीक से बयान नहीं कर सकती थी, सिवाय इसके कि यह इंसानी मुंह के लिए बनी हुई नहीं लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे यह किसी ऐसी चीज़ के लिए बनी हो जो अलग तरीके से बोलती हो—कोई ऐसी चीज़ जिसके सीने में ज़्यादा जगह हो, या कम उच्चारण बिंदु हों, या कुछ और जिसे वह पहचान नहीं पा रही थी, लेकिन उसके शरीर ने उस पर एक ठंडी, विशिष्ट बेचैनी के साथ प्रतिक्रिया दी जो उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी।

उसने नौ मिनट तक उस आवाज़ को सुना। उसे पता था क्योंकि उसने आवाज़ मिलने पर समय देखा था और आवाज़ बंद होने पर दोबारा समय देखा था। आवाज़ धीमी या गुम नहीं हुई; वह बीच में ही रुक गई, जैसे कोई स्विच बंद कर दिया गया हो। शोर जारी रहा। आवाज़ दोबारा नहीं आई।

अगले दिन उसने अपने एक सहकर्मी को इसके बारे में बताया, और सहकर्मी हँस पड़ा और उसने कई तर्कसंगत कारण बताए—दूर से प्रसारित हो रहा प्रसारण, वायुमंडलीय कंपन जिसके कारण कुछ समय के लिए किसी विदेशी भाषा के स्टेशन की आवाज़

सुनाई दे रही थी, उपकरण में गड़बड़ी। लिआ ने इन स्पष्टीकरणों को उसी तरह स्वीकार कर लिया जैसे आप कोई उपहार स्वीकार करते हैं जब आपको पता होता है कि वह आपकी मनचाही चीज़ नहीं है। उसने उन्हें इसलिए स्वीकार कर लिया क्योंकि वे उस जगह के लिए बिल्कुल सही थे जहाँ एक संतोषजनक स्पष्टीकरण होना चाहिए, भले ही वे वहाँ सहज रूप से फिट न बैठते हों।

अगली रात वह वापस गई और उसे वह आवृत्ति मिल गई। आवाज़ फिर से सुनाई दी। धीमी, लयबद्ध, समझ से परे। फिर से नौ मिनट तक। उसने रेडियो को पकड़े रखा और सुना, उसे अपने पेट से सीने तक ठंडक महसूस हुई, और जब आवाज़ बंद हुई तो वह काफी देर तक उस खाली इमारत में चुपचाप बैठी रही, फिर उसने रेडियो को अपने बैग में रख लिया और दोबारा बाहर नहीं निकाला।

उसने एक नया रेडियो खरीदा। एक डिजिटल रेडियो, जिसमें कुछ खास स्टेशन पहले से सेट थे, और जिसमें मैन्युअल रूप से फ़्रीक्वेंसी बदलने की सुविधा नहीं थी। उसने खुद को समझाया कि ऐसा इसलिए किया क्योंकि पुराना रेडियो खराब हो गया था। वह एक व्यावहारिक महिला थी और उसे व्यावहारिक कारण ही चाहिए थे। लेकिन वह यह भी मानती थी, एकांत में, कि उसे एक ऐसी बात पर यकीन हो गया था जिसे वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ साझा नहीं कर सकती थी जिसने खुद वह आवाज़ न सुनी हो: कि वह आवाज़ जानती थी कि उसे सुना जा रहा है। कि वे नौ मिनट मनमाने नहीं थे। कि वह ठीक उतने ही समय तक बोलती थी जितना उसे अपनी बात कहने के लिए चाहिए था। और वह समझ गई थी - अपने दिमाग से नहीं, किसी ऐसे तरीके से नहीं जिसे भाषा में व्यक्त किया जा सके - कि वह आवाज़ वास्तव में क्या थी।

उसने कभी किसी को नहीं बताया कि उसे क्या लगा कि उस आवाज़ ने क्या कहा था। 2021 में उसकी मृत्यु हो गई, जिसका इस विवरण से कोई संबंध नहीं है, और उन अठारह मिनटों में उसने जो कुछ भी समझा, वह अपने साथ ले गई।
[अध्याय 14-100 जारी हैं...]

अध्याय 14: बच्चों का अस्पताल

ओहियो के ड्रेयटन शहर में स्थित सेंट कैथरीन चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल का निर्माण 1923 में हुआ था और इसने 61 वर्षों तक समुदाय की सेवा की। शहर के स्वास्थ्य सेवा ढांचे के पुनर्गठन के बाद, जिसमें बाल चिकित्सा सेवाओं को शहर के दूसरी ओर स्थित एक नए, बड़े भवन में स्थानांतरित कर दिया गया था, 1984 में इसे बंद कर दिया गया। तब से यह इमारत खाली पड़ी है - इसे ध्वस्त करना बहुत महंगा है, दशकों से जमा चिकित्सा अपशिष्ट से इतना दूषित है कि इसका सस्ता पुन: उपयोग संभव नहीं है, और इसकी वास्तुकला इतनी महत्वपूर्ण है कि नौकरशाही प्रतिरोध के बिना इसे गिराना संभव नहीं है - और इसके चार दशकों के परित्याग के दौरान, इसने एक ऐसी प्रतिष्ठा अर्जित कर ली है कि ड्रेयटन के सबसे संशयवादी निवासी भी इसकी बारीकी से जांच करने से बचते हैं। इस अस्पताल की ख्याति छठी मंजिल से जुड़ी है। इमारत की छह मंजिलों में सबसे ऊपरी मंजिल, अस्पताल के संचालन के दौरान, गंभीर और दीर्घकालिक बीमारियों से पीड़ित बच्चों के लिए दीर्घकालिक देखभाल वार्ड के रूप में नामित थी। इनमें से कुछ बच्चों ने वहां कुछ महीने बिताए। कुछ ने कई साल। कुछ बच्चे छोटी उम्र में आए और किशोरावस्था तक उन्हीं कमरों में पले-बढ़े, जहां उनकी देखभाल उन नर्सों ने की जिन्होंने उनके नाम, उनकी पसंद और दर्द व्यक्त करने के उनके व्यक्तिगत तरीके

सीख लिए थे, और जिन्होंने सेंट कैथरीन में अपनी नौकरी समाप्त होने के बाद भी उन वर्षों के बोझ को लंबे समय तक अपने कंधों पर ढोया।

छठी मंज़िल, इमारत के बाहर से भी, खिड़कियों की मौजूदगी से नीचे की मंज़िलों से अलग पहचानी जा सकती है। अस्पताल की निचली मंज़िलों में मानक संस्थागत खिड़कियाँ हैं, जो संकीर्ण और कामचलाऊ हैं। छठी मंज़िल की खिड़कियाँ चौड़ी हैं और एक-दूसरे के करीब बनी हैं। इमारत के वास्तुकार ने यह डिज़ाइन इसलिए चुना ताकि उन कमरों में ज़्यादा प्राकृतिक रोशनी आ सके जहाँ बच्चे लंबे और मुश्किल दिन बिताते हैं। ये खिड़कियाँ छठी मंज़िल को एक विशिष्ट रूप देती हैं—ज़्यादा खुली, ज़्यादा उम्मीद भरी, मानो किसी चौड़ी आँखों वाले चेहरे जैसी।

इन्हीं खिड़कियों में लोगों ने वर्षों से आकृतियाँ देखने की बात कही है। ये आकृतियाँ छोटी होती हैं—बच्चों के आकार की—और ये केवल दृष्टि के किनारे से ही दिखाई देती हैं, ठीक वैसे ही जैसे रात के आकाश में कुछ धुंधले तारे तभी दिखाई देते हैं जब आप उनसे थोड़ा हटकर देखते हैं। अगर आप सीधे उस खिड़की की ओर देखें जिसमें आपने आकृति देखी है, तो वह गायब हो जाती है। अगर आप थोड़ा हटकर बगल वाली खिड़की या उसके बगल वाली दीवार की ओर देखें, तो आपको वह फिर से दिखाई देती है: एक छोटी सी आकृति, खड़ी हुई, नीचे सड़क की ओर देख रही होती है। कभी-कभी, प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि एक से अधिक खिड़कियों में आकृतियाँ दिखाई देती हैं। कभी-कभी, पूरी तरह अंधेरा होने से पहले के शांत क्षणों में, जब आकाश से प्रकाश गायब हो चुका होता है लेकिन सड़क अभी पूरी तरह कृत्रिम रोशनी में नहीं बदली होती है, तो प्रत्यक्षदर्शियों ने छठी मंजिल की सभी खिड़कियों में एक साथ आकृतियाँ दिखाई

देने की बात कही है। आठ खिड़कियाँ, आठ छोटी आकृतियाँ, खड़ी हुई और देख रही होती हैं।

अस्पताल के अंतिम दशक में छठी मंजिल पर काम करने वाली एक पूर्व नर्स, डोलोरेस मार्श, जिनका 2009 में एक स्थानीय समाचार पत्र ने इमारत के अनिश्चित भविष्य पर एक लेख के लिए साक्षात्कार लिया था, ने कुछ ऐसा कहा जिसे समाचार पत्र की संपादकीय टीम ने प्रकाशित लेख में शामिल नहीं किया। उन्होंने बताया कि छठी मंजिल पर रहने वाले बच्चे खिड़कियों के बारे में एक खास तरह से बात करते थे, जिसे वह अस्पताल बंद होने के कई साल बाद तक भी नहीं समझ पाईं। वे खिड़की से बाहर देखने और चीजों को देखने की बात करते थे - न सड़क, न शहर, बल्कि ऐसी चीजें जिन्हें वह, उनके पीछे खड़ी होकर, कभी नहीं देख सकती थीं। उस समय उन्होंने सोचा था कि यह बीमार बच्चों की भाषा है, मृत्यु का सामना कर रहे युवाओं के कल्पनाशील आंतरिक जीवन की अभिव्यक्ति है। उन्होंने सोचा था कि वे किसी आंतरिक चीज़ का वर्णन कर रहे हैं, मन के किसी ऐसे परिदृश्य का जिसे बीमारी और भय ने उनके लिए खोल दिया था।

कई वर्षों बाद, बंद इमारत के बाहर फुटपाथ पर खड़े होकर छठी मंजिल की ओर देखते हुए और अपनी दृष्टि के किनारे से खिड़कियों पर छोटी-छोटी आकृतियाँ देखते हुए, उन्होंने अपनी समझ को संशोधित किया। बच्चे खिड़कियों से बाहर नहीं देख रहे थे। वे अंदर देखते हुए जो देख रहे थे, उसका वर्णन कर रहे थे।

अध्याय 15: स्थानापन्न शिक्षक

वर्मोंट के छोटे से शहर क्रेस्टफॉल में स्थित वुडलैंड एलीमेंट्री स्कूल में किंडरगार्टन से लेकर पांचवीं कक्षा तक लगभग तीन सौ चालीस छात्र पढ़ते हैं। यह एक अच्छा स्कूल है -

क्षेत्रीय औसत की तुलना में इसे पर्याप्त धनराशि मिलती है, यहाँ अनुभवी और समर्पित शिक्षक कार्यरत हैं, और यहाँ के बच्चे ज्यादातर स्थिर और सक्रिय परिवारों से आते हैं। यह उस तरह का स्कूल है जिसका जिक्र स्थानीय समाचार पत्रों में शैक्षणिक उपलब्धियों और शरदकालीन उत्सवों के बारे में छपता है। यह उस तरह का स्कूल नहीं है जहाँ अजीबोगरीब घटनाएँ घटित होती हों।

यह अजीब घटना 2015 की शरद ऋतु में, श्रीमती पटेल की तीसरी कक्षा में, अक्टूबर के दो सप्ताह की अवधि के दौरान घटी, जब श्रीमती पटेल चिकित्सा अवकाश पर थीं और कक्षा को एक स्थानापन्न शिक्षक द्वारा पढ़ाया गया था, जिसका नाम - और यहीं से विचित्रता शुरू होती है - स्कूल के आधिकारिक स्थानापन्न शिक्षक अभिलेखों में किसी को भी नहीं मिल रहा है।

उस अवधि के विद्यालय के मानव संसाधन दस्तावेज़ों से पता चलता है कि श्रीमती पटेल की अनुपस्थिति में तीसरी कक्षा में एंजेला ब्रीन नामक एक स्थानापन्न शिक्षिका ने कार्यभार संभाला था। एंजेला ब्रीन की फ़ाइल ज़िले के रोज़गार डेटाबेस में मौजूद है। उनकी पृष्ठभूमि की जाँच पूरी हो चुकी थी, उनके प्रमाण पत्रों का सत्यापन हो चुका था और उनके वेतन संबंधी रिकॉर्ड भी तैयार थे। इन रिकॉर्डों के अनुसार, उन्होंने ग्यारह दिनों तक काम किया। फिर भी, जब अभिभावकों द्वारा उठाई गई चिंताओं के कारण विद्यालय प्रशासकों ने श्रीमती पटेल की वापसी के बाद एंजेला ब्रीन से संपर्क करने का प्रयास किया, तो उन्होंने पाया कि उनकी फ़ाइल में दी गई संपर्क जानकारी गलत थी। पता मौजूद ही नहीं था। फ़ोन नंबर डिस्कनेक्टेड लाइन पर लगा हुआ था। उनकी पृष्ठभूमि की जाँच में सूचीबद्ध प्रमाण पत्र जारी करने वाली संस्था ने इस नाम के किसी भी व्यक्ति का कोई रिकॉर्ड होने की पुष्टि नहीं की।

स्कूल काउंसलर द्वारा साक्षात्कार लिए जाने पर बच्चों ने वैकल्पिक शिक्षिका का वर्णन एक समान लेकिन विचित्र तरीके से किया। वह लंबी थीं। उनके बाल काले थे। वह बहुत शांत स्वभाव की थीं, और उनमें यह खूबी थी कि छात्र के हाथ उठाने से पहले ही उन्हें पता चल जाता था कि उनके मन में कोई प्रश्न है। बच्चों ने इस खूबी का वर्णन उसी सहज प्रशंसा के साथ किया, जैसे किसी प्रभावशाली करतब को बिना समझे ही देख लिया हो। उन्होंने ग्यारह दिनों में उन्हें तीसरी कक्षा का मानक पाठ्यक्रम पढ़ाया था। उन्होंने उन्हें कुछ और चीजें भी सिखाई थीं।

इन अन्य बातों का वर्णन करना कठिन था। स्कूल काउंसलर के साथ हुई बैठकों में कई बच्चों ने ऐसे पाठों का वर्णन किया जो किसी भी मानक पाठ्यक्रम तत्व से मेल नहीं खाते थे — एक बच्चे के शब्दों में, "कमरे में कुछ गड़बड़ होने का पता कैसे लगाएं, इससे पहले कि आप उसे देख सकें।" एक अन्य बच्चे ने "अंधेरे और अंधेरे में मौजूद चीजों के बीच अंतर" के बारे में एक पाठ का वर्णन किया। तीसरे बच्चे ने बताया कि उसे सिखाया गया था कि कैसे एकदम शांत और स्थिर रहना है और सुनाई देने वाली आवाज़ों के पीछे छिपी आवाज़ों को सुनना है, जिनके बारे में वैकल्पिक शिक्षक ने उन्हें बताया था कि वे हमेशा से मौजूद थीं, हमेशा से मौजूद रही हैं, लेकिन अधिकांश वयस्क उन्हें सुनना भूल गए हैं।

अभिभावक चिंतित थे। स्कूल काउंसलर ने पेशेवर तौर पर चिंता व्यक्त की। प्रधानाचार्य ने माफीनामा भेजा। और श्रीमती पटेल, सोमवार की सुबह खाँसी से राहत और ढेर सारे मूल्यांकन कार्य पूरे करने के लिए अपनी कक्षा में लौटीं, तो उन्हें कमरे के सामने वाली मेज पर एक कागज का टुकड़ा मिला जिस पर हाथ से लिखा एक नोट था।

यह नोट छात्रों को संबोधित था, श्रीमती पटेल को नहीं, और इसमें लिखा था: आपको जो कुछ भी जानना चाहिए, आप पहले से ही जानते हैं। आप इसे हमेशा से जानते आए हैं। इसे भूलें नहीं।

श्रीमती पटेल ने वह पत्र फेंक दिया। इसके बारे में वे वर्षों तक सोचती रहीं। और उन्होंने गौर किया—वे यह बात किसी सहकर्मी से शायद न कहतीं, पर उन्होंने गौर किया—कि उस वर्ष उनके विद्यार्थी एक खास तरह से अलग थे, जिसे वे ठीक से शब्दों में बयान नहीं कर सकती थीं। वे सामान्य बच्चों की तरह ध्यान से नहीं सुनते थे, बल्कि एक ऐसे ध्यान से सुनते थे जो मानो उनके द्वारा पढ़ाए जा रहे पाठों पर नहीं, बल्कि किसी और चीज़ पर केंद्रित था, पाठों के पीछे छिपी किसी चीज़ पर, जिसे वे—एक वयस्क, व्यावहारिक, पेशेवर—न तो समझ सकती थीं और न ही पूरी तरह से जान सकती थीं। वे किसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे थे। या उसे सुनने की कोशिश कर रहे थे। और जो भी वह चीज़ थी, वे उसे आने की उम्मीद कर रहे थे, जिसे वे समझा नहीं सकती थीं।

अध्याय 16: वापसी

हारग्रोव परिवार ने सितंबर के अंत में एक मंगलवार को मार्कस का घर वापसी पर स्वागत किया। वह चौदह महीने से तैनात थे - सेना में, विदेश में, एक ऐसी तैनाती जिसके विशिष्ट क्षेत्र के बारे में उन्होंने चर्चा न करने का वादा किया था - और उनकी वापसी ठीक वही थी जिसका उनकी पत्नी सैंड्रा महीनों से इंतजार कर रही थीं: सैन्य जीवनसाथियों के लिए विशिष्ट अकेलेपन का अंत, सामान्य जीवन की बहाली, तैनाती के कारण सामान्य जीवन में आई दरार का भरना।

मार्कस हवाई अड्डे पर अपनी वर्दी में मुस्कुराता हुआ खड़ा था। वह पहले से दुबला लग रहा था, और उसके हाव-भाव में भी कुछ बदलाव आया था—उसके चेहरे से सहजता गायब हो गई थी, उसकी जगह एक खामोशी छा गई थी, जिसे वह तैनाती के बाद के प्रभावों, उसके द्वारा जी जा रही दुनिया और उसके बिना जी रही दुनिया के बीच तालमेल बिठाने की कठिनाई से जोड़ रही थी। उसने कार में उसका हाथ थाम लिया और उसे पिछले चौदह महीनों की छोटी-छोटी घटनाओं के बारे में बताया—जो बगीचा उसने लगाया था, जो पदोन्नति उसे मिली थी, और बाईं ओर के नए पड़ोसी। वह सुनता रहा, सिर हिलाता रहा और सही समय पर मुस्कुराता रहा।

तापमान में बदलाव का पता उसे तीन दिन बाद चला।

यह बहुत हल्का था और उसने लगभग इसे नज़रअंदाज़ कर दिया: मार्कस की मौजूदगी में एक हल्की सी ठंडक महसूस होती थी, बिल्कुल ठंड तो नहीं, लेकिन तापमान में एक ऐसा अंतर जिसे उसका शरीर उसके होश में आने से पहले ही महसूस कर लेता था। मानो उसके आस-पास की हवा उस कमरे के तापमान से एक या दो डिग्री कम हो जिसमें वह मौजूद होता था। उसने खुद को समझाया कि यह कुछ नहीं है। उसने खुद को समझाया कि यह उस व्यक्ति के स्वभाव का अंतर है जिसने बहुत अलग जलवायु में समय बिताया है। उसने खुद को समझाया कि जैसे-जैसे वह सामान्य हो जाएगा, यह अंतर भी दूर हो जाएगा।

छठे दिन, वह रात में जाग उठी और उसे ढूंढने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन उसका हाथ ठंडे तकिये पर पड़ा और बिस्तर उसके बगल में खाली था। वह उठ बैठी और ध्यान से सुनने लगी, पर कुछ भी सुनाई नहीं दिया—घर में कोई हलचल नहीं, बाथरूम की कोई आवाज़ नहीं, कुछ भी नहीं। वह उठी और अंधेरे घर में उसका नाम धीरे से पुकारते हुए

चलने लगी, और आखिरकार उसे पिछवाड़े में घास के बीचोंबीच खड़ा पाया, उसकी तरफ पीठ करके, एकदम स्थिर। वह दरवाजे पर खड़ी उसे एक मिनट तक देखती रही, फिर वह हिला। जब वह मुड़ा, तो वह मुस्कुरा रहा था—वही मुस्कान जो हवाई अड्डे पर थी, गर्मजोशी भरी, जानी-पहचानी और थोड़ी देर से आई, मानो वह उस पल के आधे सेकंड बाद आई हो जब उसे आना चाहिए था।

उन्होंने कहा कि उन्हें नींद नहीं आ रही थी। वे अंदर आ गए। भोर होने से पहले के एक घंटे में उनका शरीर धीरे-धीरे गर्म होने लगा।

समय के साथ शायद उसने खुद को यकीन दिला लिया होगा कि कुछ भी गलत नहीं है। वह एक व्यावहारिक महिला थी, अपने पति से प्यार करती थी और चाहती थी कि सब कुछ सामान्य रहे। लेकिन खुद को यकीन दिलाने में जो चीज बाधा बन रही थी, वह था उसका कुत्ता। उनका सात साल का गोल्डन रिट्रीवर, ऑस्कर, जो उनके घर में आने वाले हर इंसान का इतने उत्साह से स्वागत करता था कि वह शर्मनाक लगता था, मार्कस के पास नहीं जाता था। अगर कोई दूसरा विकल्प होता, तो वह मार्कस के साथ एक ही कमरे में नहीं रहता। जब मार्कस उसे सहलाने के लिए हाथ बढ़ाता, तो वह अपनी जगह पर खड़ा नहीं रहता—वह बस शांत, संयमित गरिमा के साथ दूर चला जाता, जो उसके स्वभाव के कुत्ते के लिए अभूतपूर्व था, और जो देखने वाले किसी भी व्यक्ति को कुछ स्पष्ट रूप से बता देता था।

सैंड्रा ने मार्कस की यूनिट को फोन किया। उसे बताया गया कि मार्कस तैनाती से वापस नहीं लौटा है। उसे बताया गया कि मार्कस हारग्रोव की छह सप्ताह पहले युद्ध क्षेत्र में मृत्यु हो गई थी, और सूचना अधिकारी ने उससे संपर्क करने की कोशिश की थी, लेकिन प्रक्रिया में किसी प्रकार की गड़बड़ी हो गई थी जिसके लिए सभी को बहुत खेद है।

उसने फोन रख दिया और अपनी रसोई की मेज पर बैठे उस आदमी को देखा, जो कॉफी पी रहा था, जिसका चेहरा उसके पति जैसा था, जिसके चेहरे पर उसके पति जैसी मुस्कान थी, और जिसके कारण कमरे का तापमान एक जीवित व्यक्ति के सामान्य तापमान से एक डिग्री कम था।
उसने उसकी ओर देखा और उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई, हालांकि आधा सेकंड की देरी से।

अध्याय 17: बाग के नीचे

लगभग साठ वर्षों से इस बाग में बेहतरीन सेब पैदा होते रहे थे। पेंसिल्वेनिया के मिलहेवन शहर में, केसविक बाग एक स्थानीय संस्था की तरह था - सौ एकड़ में फैले सेब के पेड़, बारह किस्में, जिनकी देखभाल केसविक परिवार बड़ी सावधानी से करता था। वे समझते थे कि वे उस चीज़ के संरक्षक हैं जिसे बनाने में दशकों लगे थे और जो एक ही मौसम में खो सकती है। अगस्त से नवंबर तक फार्म स्टैंड पर सेब बेचे जाते थे, और अच्छे वर्षों में, जब मौसम अनुकूल होता था और पेड़ों पर भरपूर फल लगते थे, तो मिलहेवन निवासी पतझड़ के सप्ताहांतों में अपने बच्चों और टोकरियों के साथ बाग में जाते थे और पेड़ों के बीच सुखद घंटे बिताते थे, पतझड़ के ढलते दिनों में उस मिठास का आनंद लेते थे जो साल की आखिरी मिठास जैसी लगती थी।
2021 में, बाग के उत्तर-पूर्वी कोने में, उस हिस्से में जहाँ तीन पुराने पेड़ एक साथ खड़े थे - बाग के सबसे पुराने पेड़, जिन्हें केसविक परिवार के मुखिया ने 1960 के दशक की शुरुआत में लगाया था - एक गड्ढा खुल गया। गड्ढा लगभग आठ फीट चौड़ा था और जब परिवार ने इसका आकलन करने के लिए एक कंपनी को बुलाया, तो पता चला कि यह

इस क्षेत्र में आमतौर पर पाए जाने वाले गड्ढों की तुलना में काफी गहरा था। आकलनकर्ताओं के उपकरणों ने तल तक पहुँचने से पहले चालीस फीट की गहराई मापी, और तल पर उन्हें वह चूना पत्थर या मिट्टी नहीं मिली जो वहाँ होनी चाहिए थी। चालीस फीट की दूरी पर उन्हें एक कमरा मिला।

यह कोई प्राकृतिक गुफा नहीं थी, न ही कोई भूवैज्ञानिक विसंगति। यह एक कमरा था। लगभग गोलाकार, जिसकी दीवारें तराशे और फिट किए गए पत्थरों से बनी थीं, और छत ऊपर लगे तीन पुराने सेब के पेड़ों की जड़ों से बनी थी, जो नीचे की ओर बढ़कर छत पर गहरे रंग की लकड़ी की घनी जाली की तरह फैल गई थीं, जिसे नीचे से मूल्यांकनकर्ताओं के कैमरों से देखने पर ऐसा लग रहा था जैसे कोई हाथ फैला हुआ हो और उंगलियां फैली हुई हों।

कमरे में दो चीजों के अलावा कुछ भी नहीं था। पहली चीज थी कमरे के बीचोंबीच फर्श में जड़ा हुआ एक पत्थर का कुंड, जो लगभग तीन फुट चौड़ा था। कुंड में एक ऐसी चीज भरी हुई थी - यही बात जांचकर्ताओं के कैमरों में कैद हुई और उनकी रिपोर्ट में भी, उन पेशेवर लोगों की सीधी-सादी भाषा में, जो अपनी राय देना पसंद नहीं करते, यही वर्णन किया गया है - जो गहरे रंग की मिट्टी जैसी दिखती थी। बहुत गहरे रंग की, बहुत बारीक, और कैमरे की रोशनी में ऐसी लग रही थी मानो वह गीली हो। या फिर उसमें कुछ जीवित हो।

कमरे में दूसरी चीज़ जो थी, वह थी एक गंध। मूल्यांकनकर्ताओं ने अपने लिखित दस्तावेज़ में इसका उल्लेख किया और स्पष्ट रूप से बताया कि यह क्या थी: सेब की गंध। सतह से चालीस फीट नीचे स्थित, साठ वर्षों से जड़ों के फैलाव के कारण बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग-थलग पड़े इस कमरे में ताज़े सेबों की तेज़ और स्पष्ट गंध आ

रही थी। सड़े हुए सेबों की नहीं, किण्वित सेबों की नहीं। ताज़े सेबों की गंध, मानो फल वहीं मौजूद हों, पूरी तरह पके हुए, और हवा को उस खास मिठास से भर रहे हों जो एक-दो दिन बाद ही फीकी पड़ने लगती है।

केसविक परिवार ने कमरे में प्रवेश किए बिना ही गड्ढे को भरवा दिया। उन्होंने छह महीने बाद बाग बेच दिया। उत्तर-पूर्वी कोने में मौजूद तीन पुराने पेड़ों को नए मालिकों ने वहीं रहने दिया, जिन्हें उस कमरे के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उन्हें वे पेड़ बस पुराने फलों के पेड़ों की तरह ही सुंदर लगे - टेढ़े-मेढ़े, समझदार और किसी बोझ से दबे हुए।

गड्ढा भरने के बाद पतझड़ के मौसम में उन तीन पेड़ों पर लगे सेब मिलहेवन में अब तक के सबसे बेहतरीन सेब थे। उनका स्वाद लाजवाब और जटिल था, और एक ऐसी खूबी थी जिसे लोग शब्दों में बयान नहीं कर पाते थे और आम तौर पर उसे "गहराई" कहते थे। नए मालिकों ने उन्हें बाजार भाव से दोगुनी कीमत पर बेचा और वे उन्हें स्टॉक में रख ही नहीं पाए। जिन बच्चों ने उन्हें खाया, उन्होंने कहा कि उनका स्वाद किसी ऐसी चीज जैसा था जिसे उन्होंने बहुत पहले खाया था, लेकिन ठीक से याद नहीं कर पा रहे थे। एक बच्ची ने कहा, जैसे किसी सपने से आई हो, जिसे उसकी माँ ने गौर किया और उस अक्टूबर की लंबी शामों में उसके बारे में सोचती रही, एक ऐसे तरीके से जिसे वह पूरी तरह से समझा नहीं सकती थी।

अध्याय 18: साँचा

यह गंध नवंबर में शुरू हुई और दिसंबर तक रेनाटा ओकाफोर के अपार्टमेंट का एक अभिन्न अंग बन गई थी। यह कोई असहनीय गंध नहीं थी, न ही ऐसी गंध जिससे मेहमान

दरवाजे पर ही पीछे हट जाएं, बल्कि एक निरंतर बनी रहने वाली गंध थी जिसे उन्होंने पहली बार बाथरूम में महसूस किया था और जो धीरे-धीरे फैलती गई - या कहें कि स्थानांतरित होती गई, या बढ़ती गई, क्योंकि यह कहना मुश्किल था कि कौन सा क्रियापद उपयुक्त है - जब तक कि यह अपार्टमेंट में इस तरह से समाहित नहीं हो गई जैसे कोई फर्नीचर कमरे में समाहित होता है: लगातार, विशिष्ट रूप से, स्पष्ट रूप से मौजूद।

उसमें मिट्टी जैसी गंध आ रही थी। जैसे किसी अंधेरी जगह पर गीली मिट्टी हो। जैसे लंबे समय से बिना छेड़ी गई मिट्टी हो। रेनाटा, जो तहखाने वाले घर में पली-बढ़ी थी, ने उस गंध को पहचान लिया और अजीब तरह से उसे सुकून देने वाली लगी - यह बचपन की गंध थी, भंडारित सब्जियों और ठंडे, सुरक्षित अंधेरे से जुड़ी गंध। फिर उसे फफूंद दिखाई दी।

यह बाथरूम के शीशे के पीछे था, जिसे उसने एक पेंच बदलने के लिए हटाया था। फफूंद काली और फैली हुई थी - बाथरूम में आमतौर पर दिखने वाले छोटे-छोटे धब्बों जैसी नहीं, बल्कि एक निरंतर वृद्धि थी जिसने शीशे के पीछे की पूरी दीवार को ढक रखा था, घनी और मखमली, और रेनाटा ने गौर किया कि उस पर पैटर्न बने हुए थे। किसी जीवविज्ञानी द्वारा पैटर्न के रूप में वर्णित पैटर्न जैसी नहीं - फफूंद नमी के स्तर और सतह की रासायनिक संरचना के अनुसार बढ़ती है और जानबूझकर पैटर्न नहीं बनाती - बल्कि इस तरह की थी कि रेनाटा की आँखें बार-बार आकृतियों में बँधने की कोशिश कर रही थीं। ऐसी आकृतियाँ जो सीधे देखने पर बदल जाती थीं और फिर परिधीय दृष्टि में स्पष्ट हो जाती थीं। ऐसी आकृतियाँ जो किसी ऐसी भाषा के अक्षर हो सकती थीं जिसे

वह नहीं जानती थी, या ऐसे क्षेत्रों के नक्शे जहाँ वह कभी नहीं गई थी, या कुछ और ही हो सकती थीं जिसका उसके पास कोई वर्गीकरण नहीं था।

स्थिति का जायजा लेने आए मोल्ड निवारण विशेषज्ञ रिक नाम के एक पेशेवर थे, जो पंद्रह वर्षों से यह काम कर रहे थे और हर तरह का अनुभव रखने पर गर्व करते थे। उन्होंने बाथरूम में बीस मिनट बिताए। जब वे बाहर आए, तो हमेशा की तरह पेशेवर और शांत थे, लेकिन रेनाटा ने गौर किया कि उन्होंने अपना आकलन रसोई में खड़े होकर लिखा, बाथरूम की ओर जाने वाले गलियारे से मुंह फेरकर, और उन्होंने अपना कागजी काम नुकसान की गंभीरता के हिसाब से कहीं अधिक तेज़ी से पूरा कर लिया। उन्होंने पूर्ण सुधार की सिफारिश की — दीवार की आंतरिक परत को हटाना, आसपास के क्षेत्र का उपचार करना और नमी के स्रोत की पहचान करना। उन्होंने लागत बताई। उन्होंने पूछा कि उन्हें पहली बार गंध कब महसूस हुई थी।

उसने कहा नवंबर। उसने पूछा कि क्या वह अच्छी तरह सो रही थी।

उसने सवाल पर विचार किया। उसने कहा कि शायद उसने ऐसा किया था, हालाँकि वह आजकल सामान्य से ज़्यादा स्पष्ट सपने देख रही थी। ज़्यादातर सपने ज़मीन के नीचे होने के थे। धरती के अंदर एक छोटी सी जगह में होने के, चारों ओर मिट्टी से घिरे होने के, और उसे डरावना नहीं बल्कि गर्म महसूस होने के। उसने उसे बताया कि उसे वह जगह आरामदायक लग रही थी। जैसे किसी ने उसे थाम रखा हो।

रिक ने अपना अनुमान लिखना समाप्त किया। उसने उसे वह कागज़ दिया जिस पर खर्च की रकम लिखी थी और कहा कि काम पूरा होने तक, कम से कम एक सप्ताह के लिए, उसे घर से बाहर रहना चाहिए। उसने उससे कहा कि काम जल्द से जल्द पूरा हो जाना चाहिए। उसने उससे यह भी कहा कि वह बाथरूम में ज़रूरत से ज़्यादा समय न बिताए।

अपने पंद्रह वर्षों के सुधार कार्य में उन्होंने कभी भी ग्राहकों को सामान्य नियम के तौर पर ऐसा करने के लिए नहीं कहा था। उन्होंने उसे विशेष रूप से ऐसा करने के लिए कहा था। और जब उन्होंने यह कहा, तो उनके चेहरे के भाव देखकर वह समझ गई कि उन्होंने बाथरूम में कुछ ऐसा देखा है जिसे वे अपनी रिपोर्ट में नहीं लिखेंगे।

वह उस सप्ताहांत में बाहर चली गई। मरम्मत में नौ दिन लगे। वह वापस आई और बदबू गायब हो गई थी, दीवार साफ और सफेद थी। वापस आने के बाद पहली रात वह अपने बिस्तर पर सोई, मरम्मत किए गए अपार्टमेंट की शांति में, और उसने ज़मीन के नीचे होने का सपना नहीं देखा। उसने दीवार का सपना देखा - उपचारित गुहा पर लगे साफ सफेद प्लास्टर का - और सपने में प्लास्टर बहुत पतला था, कागज से भी पतला, और उसके पीछे वह पैटर्न देख सकती थी। वे आकृतियाँ जो बदलती और सुलझती रहीं। फफूंद चली गई थी लेकिन पैटर्न अभी भी मौजूद था, उसने सपने में समझा, दीवार की सतह में दबा हुआ, किसी ऐसी चीज के धैर्य के साथ प्रतीक्षा कर रहा था जो समय को ऋतुओं में, दशकों में, एक विकास और दूसरे के बीच के लंबे अंधेरे अंतरालों में मापती हो।

वह सुबह तीन बजे उठी और अंधेरे में लेटी हुई सुनने लगी। उसे कुछ सुनाई नहीं दिया। लेकिन वह गंध—बहुत हल्की, लगभग न के बराबर—वापस आ गई थी। मिट्टी की। अंधेरी जगह में गीली मिट्टी की। कोई पुरानी, और धैर्यवान चीज़, दीवारों से रिसती हुई सांसें।

अध्याय 19: वह घड़ी जिसने समय बढ़ाया

मैपलवुड ड्राइव पर स्थित शेरिडन परिवार के घर के गलियारे में रखी वह बड़ी घड़ी चार पीढ़ियों से उनके परिवार की थी। यह एक खूबसूरत घड़ी थी - महोगनी की लकड़ी का ढांचा, हाथ से रंगा हुआ डायल, पीतल के पुर्जे जिन्हें वर्षों से इसके विभिन्न मालिकों ने बड़ी मेहनत और लगन से सहेज कर रखा था। यह घड़ी लगभग एक सदी तक शेरिडन परिवार के पास रहते हुए एकदम सही समय बताती रही। लेकिन एक साल जेम्स शेरिडन, जो 63 वर्ष के थे और हाल ही में सेवानिवृत्त हुए थे, ने देखा कि घड़ी का समय आगे बढ़ रहा है।

समय कम नहीं हो रहा था, समय बढ़ रहा था। घड़ी तेज़ चल रही थी—इतनी तेज़ नहीं कि दिनभर में पता ही न चले, लेकिन इतनी तेज़ ज़रूर कि एक हफ़्ते में जेम्स ने पाया कि घड़ी लगातार सही समय से सात से दस मिनट आगे चल रही थी। यह अजीब था। यांत्रिक घड़ियाँ, जब खराब हो जाती हैं, तो आमतौर पर धीमी चलने लगती हैं। एस्केपमेंट तंत्र के घिसने से पेंडुलम की गति धीमी हो जाती है, तेज़ नहीं। जो घड़ी समय बढ़ा देती है, उसका एस्केपमेंट किसी यांत्रिक अर्थ में ज़रूरत से ज़्यादा काम कर रहा होता है—यानी सिस्टम को जितनी ऊर्जा उत्पन्न करनी चाहिए, उससे ज़्यादा ऊर्जा से चल रहा होता है। दूसरे शब्दों में, अपनी क्षमता से ज़्यादा तेज़ चल रहा होता है।

जेम्स ने घड़ीसाज़ को दो बार बुलाया। दोनों बार, घड़ीसाज़ ने पेंडुलम को ठीक किया और घड़ी को सही ढंग से चलने दिया। दोनों बार, एक सप्ताह के भीतर ही घड़ी फिर से तेज़ चलने लगी। दूसरी बार जब घड़ीसाज़ आया, तो उसने घड़ी पर ज़रूरत से ज़्यादा समय बिताया—उसने केस खोला, आवर्धक लेंस से उसके पुर्जों की जाँच की, और ऐसी कई चीज़ें कीं जिन्हें जेम्स तकनीकी रूप से समझ नहीं पाया। काम खत्म होने पर, उसने जेम्स को बताया कि घड़ी की यांत्रिक स्थिति एकदम सही है। उसने कहा कि इसके तेज़

चलने का कोई कारण नहीं है। उसने जेम्स को वही बात दोहराई जो उसने पहली बार में कही थी, कि यांत्रिक घड़ियाँ तेज़ नहीं, बल्कि धीमी चलती हैं जब उनमें कोई खराबी होती है।

बाहर जाते समय, घड़ीसाज़ दालान में रुका और एक बार फिर घड़ी को देखा। जेम्स उसे देखता रहा और उसे लगा कि घड़ीसाज़ के चेहरे पर कुछ ऐसा भाव था जो पेशेवर चिंता से कहीं ज़्यादा पहचान जैसा था। मानो घड़ी की हरकत उसे किसी और चीज़ की याद दिला रही हो, किसी ऐसी चीज़ की जिसे वह दूसरे संदर्भों में जानता हो।

उसने सीधे घड़ी बनाने वाले से पूछा कि उसके अनुसार क्या हो रहा है।

घड़ीसाज़ ने सोचा। फिर उसने कहा: “कभी-कभी, जब घड़ी समय बढ़ा देती है, तो इसका मतलब है कि उसका यंत्र किसी चीज़ पर प्रतिक्रिया कर रहा है। कभी-कभी कोई बाहरी आवृत्ति। कंपन। वातावरण में कुछ ऐसा जिसके साथ यंत्र प्रतिध्वनित हो रहा है।” वह रुका। “पेंडुलम तेज़ी से झूलता है क्योंकि कोई चीज़ उसे धकेल रही है।”

जेम्स ने पूछा कि इसमें क्या समस्या हो सकती है। घड़ीसाज़ ने अपना बैग उठाया। "यह आमतौर पर मेरा काम नहीं है," उसने कहा और चला गया।

घड़ी का समय लगातार बढ़ता जा रहा था। अगले कुछ महीनों में, समय बढ़ने की दर और भी तेज़ हो गई। बसंत तक, घड़ी प्रतिदिन एक घंटा तेज़ चलने लगी। गर्मियों तक, यह दो घंटे तेज़ चलने लगी। जेम्स ने इसे ठीक करना बंद कर दिया। वह हर सुबह दालान में खड़ा होकर इसे देखता रहता, यह समझने की कोशिश करता कि यह क्या माप रही है—क्योंकि यह स्पष्ट रूप से कुछ माप रही थी, स्पष्ट रूप से किसी अंतराल को उतनी ही सटीकता से ट्रैक कर रही थी जितनी इसकी सुंदर पीतल की बनावट कर

सकती थी। एक ऐसा अंतराल जो सामान्य समय से तेज़ चल रहा था। एक ऐसा समय जो कहीं जमा हो रहा था, बढ़ रहा था, किसी चीज़ की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था।
नवंबर की एक सुबह उनकी पत्नी ने उन्हें दालान में मृत पाया। डॉक्टरों ने बताया कि उनकी मृत्यु दिल के दौरे से हुई थी। मृत्यु का समय लगभग सुबह तीन बजे था। जब उनकी पत्नी ने उन्हें पाया, तब दालान में लगी घड़ी में 7:15 बज रहे थे। जबकि वास्तविक समय सुबह 3:10 था। घड़ी चार घंटे और पांच मिनट आगे चल रही थी।
जेम्स शेरिडन तिरसठ वर्ष के थे। सामान्य चिकित्सा गणना के अनुसार, वे पंद्रह-बीस वर्ष और जी सकते थे। जब परिवार ने उन्हें फोन किया, क्योंकि उन्हें कुछ और समझ नहीं आ रहा था, तो घड़ी बनाने वाले ने फोन पर काफी देर तक कुछ नहीं कहा। फिर उन्होंने धीमी आवाज़ में, मानो स्वयं से बात कर रहे हों, कहा: "घड़ी की शक्ति समाप्त हो गई है।"

अध्याय 20: लुप्त आवृत्ति

न्यू मैक्सिको में हार्टवेल वेधशाला में स्थित रेडियो दूरबीन को सुनने के लिए डिज़ाइन किया गया था। रेडियो दूरबीनें यही करती हैं - वे आकाश से चिपके हुए विशाल कान होते हैं, जो विद्युत चुम्बकीय संकेतों का पता लगाते हैं।
ब्रह्मांड के विभिन्न हिस्सों से आने वाली तरंगों को डेटा में परिवर्तित करना, जिसे समझने में वैज्ञानिक वर्षों लगा देते हैं। 2017 की सर्दियों में, हार्टवेल के वैज्ञानिक किसी विशेष चीज़ को सुनने के लिए नहीं, बल्कि आकाश के एक ऐसे क्षेत्र का व्यापक सर्वेक्षण कर रहे थे जिसका कई दशकों से व्यवस्थित रूप से अध्ययन नहीं किया गया था। वे पल्सर,

अंतरतारकीय हाइड्रोजन बादल और ब्रह्मांड के एक छोटे से कोने की सामान्य विद्युत चुम्बकीय संरचना की खोज कर रहे थे।

फरवरी महीने की एक मंगलवार रात को उन्हें जो मिला, वह सन्नाटा था।

यह खाली अंतरिक्ष की सामान्य खामोशी नहीं थी— रेडियो खगोलविद जानते हैं कि वह कैसी होती है, ब्रह्मांडीय पृष्ठभूमि विकिरण की हल्की सी सरसराहट, ब्रह्मांड के विद्युत चुम्बकीय वातावरण की आधारभूत संरचना बनाने वाले विभिन्न प्राकृतिक शोर स्रोत। उन्होंने आकाश का एक ऐसा क्षेत्र पाया जहाँ यह आधारभूत संरचना अनुपस्थित थी। लगभग गोलाकार, लगभग आधा डिग्री व्यास वाला एक क्षेत्र, जो उनके द्वारा निगरानी किए जा रहे पूरे स्पेक्ट्रम में किसी भी आवृत्ति पर विद्युत चुम्बकीय विकिरण उत्सर्जित नहीं कर रहा था। उत्सर्जित नहीं कर रहा था, लेकिन अवरुद्ध भी नहीं कर रहा था—यह कोई भौतिक वस्तु नहीं थी जो इसके पीछे से संकेतों को रोक रही हो। यह अंतरिक्ष का एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ से संकेत बस निकल ही नहीं रहे थे। आकाश के विद्युत चुम्बकीय ताने-बाने में एक छेद, आकाश के उस क्षेत्र में जिस पर दूरबीन केंद्रित थी।

प्रमुख शोधकर्ता, डॉ. एना परेरा, जो बीस वर्षों से इस क्षेत्र में कार्यरत थीं और अपने पेशेवर स्वभाव के कारण समय से पहले उत्तेजित होने से बचती थीं, ने डेटा को अन्य संस्थानों के तीन सहयोगियों को भेजा और उनसे मूल्यांकन करने का अनुरोध किया। दो सहयोगियों ने कुछ ही दिनों में जवाब दिया और विभिन्न स्पष्टीकरण दिए - अंशांकन त्रुटियाँ, हस्तक्षेप, वायुमंडलीय प्रभाव - जिनमें से, जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा, डेटा की विशिष्टताओं को देखते हुए कोई भी स्पष्टीकरण पूरी तरह से संतोषजनक नहीं था।

तीसरे सहयोगी ने छह दिनों तक कोई जवाब नहीं दिया। जब उन्होंने जवाब दिया, तो ईमेल या फोन से नहीं, बल्कि एरिज़ोना स्थित अपने संस्थान से हार्टवेल तक स्वयं छह घंटे

की ड्राइव करके आए - दोपहर के शुरुआती समय में पहुँचकर और डॉ. परेरा से निजी तौर पर बात करने का अनुरोध किया।

फोन या ईमेल करने के बजाय छह घंटे गाड़ी चलाकर आने का उनका कारण यह था कि वे अपनी बात को किसी ऐसे प्रारूप में नहीं रखना चाहते थे जिसे संग्रहीत या अग्रेषित किया जा सके। उन्होंने डॉ. परेरा से टर्मिनल पर व्यक्तिगत रूप से डेटा को समझने का अनुरोध किया और उन्होंने उसे काफी देर तक देखा। फिर उन्होंने उनसे दूरबीन को थोड़ा सा घुमाने के लिए कहा—यानी उसके दृश्य क्षेत्र को प्रत्येक दिशा में एक डिग्री के अंश तक घुमाने के लिए। उन्होंने ऐसा किया। सन्नाटा भी घूमने के साथ-साथ घूम गया। यह उस तरह नहीं था जैसे वायुमंडलीय प्रभाव घूमते हैं—वायुमंडलीय प्रभाव आकाशीय निर्देशांकों का अनुसरण नहीं करते, वे स्थलीय स्थितियों का अनुसरण करते हैं। सन्नाटा आकाशीय निर्देशांकों का अनुसरण कर रहा था। यह आकाश में एक निश्चित बिंदु पर था, और दूरबीन इसे महसूस कर रही थी, और जो भी था, वह अंशांकन त्रुटि या वायुमंडलीय त्रुटि नहीं थी। यह वास्तविक था। उस सहकर्मी ने टर्मिनल पर डॉ. परेरा को कुछ ऐसा बताया जो उन्होंने आज तक किसी को नहीं बताया। उन्होंने केवल इतना कहा है कि इसे सुनने के बाद उन्हें समझ में आया कि वे छह घंटे गाड़ी चलाकर क्यों आए थे। उन्होंने दूरबीन के निगरानी कार्यक्रम के उस हिस्से को बंद कर दिया। उन्होंने वेधशाला प्रशासन को एक रिपोर्ट सौंपी जिसमें सर्वेक्षण में संक्षिप्त व्यवधान उत्पन्न करने वाली तकनीकी खराबी का वर्णन किया गया था। सर्वेक्षण को दूरबीन को दूसरी दिशा में करके पुनः शुरू किया गया। तब से उन्होंने दूरबीन को आकाश के उस क्षेत्र की ओर वापस नहीं घुमाया है।

खामोशी अब भी कायम है। रेडियो की खामोशी निष्क्रिय होती है—उसे पता नहीं होता कि उसे सुना जा रहा है, वह ध्यान आकर्षित करने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देती, वह बस मौजूद रहती है। कम से कम, रेडियो खगोल विज्ञान का अभ्यास इसी धारणा पर आधारित है। डॉ. परेरा ने सार्वजनिक रूप से इस धारणा पर सवाल नहीं उठाया है। लेकिन उस फरवरी की रात के बाद से, वह रेडियो चलाकर सोती हैं—कोई भी स्टेशन, कोई भी आवाज़, बस कुछ ऐसा जो उनके आस-पास के वातावरण के विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम को भर दे। बस कुछ ऐसा जो शांति को भंग कर दे। बस कुछ ऐसा जो उनके और उस विशेष खामोशी के बीच हो, जिसे मंगलवार की रात को ऊंचे रेगिस्तान में, ब्रह्मांड ने उनकी ओर मोड़ा और उन्हें सुनने दिया।

अध्याय 21: फोटोग्राफ एल्बम

मॉरो हाउस में संपत्ति की नीलामी में हमेशा की तरह भीड़ उमड़ी - प्राचीन वस्तुओं के शौकीन, व्यापारी और पड़ोसी, जो उस घर के अंदर का नजारा देखने के लिए उत्सुक थे, जिसके पास से वे वर्षों से बिना कभी अंदर गए गुजरते रहे थे। यह घर सेलिया मॉरो का था, जिनकी मृत्यु 91 वर्ष की आयु में हुई थी। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम तीन दशक इसी घर में अकेले बिताए थे। उनकी संपत्ति का प्रबंधन उनके भतीजे ने किया, जो कैलिफोर्निया में रहते थे और उनसे कुछ ही बार मिलने आए थे। चार दशकों से जमा की गई वस्तुओं को बेचने का काम उनके सामने था, इसलिए उन्होंने एक पेशेवर संपत्ति बिक्री कंपनी को नियुक्त किया और इस बारे में ज्यादा न सोचने की कोशिश की। बैठक कक्ष के पिछले हिस्से में एक मेज पर एक फोटो एल्बम रखा था, जिस पर 3.00 डॉलर का मूल्य स्टीकर लगा था। यह चमड़े की जिल्द वाला, अच्छी तरह से संरक्षित और

तस्वीरों से भरा हुआ था, जो देखने में कई दशकों की लगती थीं, जिनमें ब्लैक एंड व्हाइट युग से लेकर रंगीन फोटोग्राफी के शुरुआती दौर तक की तस्वीरें शामिल थीं। इस एल्बम को जेम्मा फॉलन नाम की एक महिला ने खरीदा था, जो पुरानी तस्वीरों के सौंदर्यबोध के लिए और अतीत के अजनबियों के चेहरों में एक तरह की उदासी भरी सुंदरता पाने के लिए पुराने फोटो एल्बम इकट्ठा करती थीं। इन चेहरों को वह कभी भी संतोषजनक ढंग से समझा नहीं पाई थीं, लेकिन बार-बार इन्हें देखती रहती थीं।

उस शाम वह अपने अपार्टमेंट में, एक गिलास वाइन के साथ और किसी संभावित खोज के सुखद आनंद के साथ एल्बम देख रही थी, तभी उसकी नजर उस आकृति पर पड़ी। इस एल्बम में मॉरो परिवार की तस्वीरें थीं, जो 1940, 1950 और 1960 के दशक की प्रतीत होती हैं — आम पारिवारिक तस्वीरें, छुट्टियों के मिलन समारोह, जन्मदिन की पार्टियाँ, गर्मियों की सैर। मॉरो एक बड़ा परिवार था: कई पीढ़ियों की तस्वीरें एक साथ थीं, बच्चे एल्बम के वर्षों में बड़े होते गए, और वयस्क हर तस्वीर के साथ धीरे-धीरे बूढ़े होते गए। जेम्मा हमेशा की तरह इस काम में जो स्नेह और ध्यान लगाती थी, उसी तरह वह वर्षों के दौरान एक-एक चेहरे को पहचानती रही।

इसी ध्यान ने उन्हें उस आकृति को देखने के लिए प्रेरित किया। एल्बम में फैली सात तस्वीरों में—जो 1940 के दशक से लेकर 1960 के दशक के आरंभ तक की थीं—एक व्यक्ति पृष्ठभूमि में था जो किसी भी अन्य तस्वीर में दिखाई नहीं देता था। वह कोई पारिवारिक सदस्य नहीं था जिसे वह किसी तरह भूल गई हों। न ही कोई मेहमान जो किसी विशेष समारोह में आता हो। यह आकृति अलग-अलग समय और अलग-अलग स्थानों पर ली गई तस्वीरों में दिखाई देती थी: 1940 के दशक के अंत की एक समुद्र तट की तस्वीर, 1950 के दशक के आरंभ की एक क्रिसमस की तस्वीर, 1950 के दशक के

अंत की एक पिछवाड़े की बारबेक्यू पार्टी की तस्वीर, और उसके बाद के दशक की चार अन्य तस्वीरें। हर तस्वीर में, वह आकृति पृष्ठभूमि में थी, आंशिक रूप से धुंधली, कभी भी केंद्र में नहीं थी।

उस आकृति को असाधारण बनाने वाली बात—जिसने जेम्मा को एल्बम, वाइन और एक आवर्धक लेंस लेकर रसोई के काउंटर पर बैठने और लगभग एक घंटे तक तस्वीरों को ध्यान से देखने के लिए मजबूर कर दिया—यह नहीं थी कि वह समय और स्थान से परे दिखाई देती थी। बल्कि यह थी कि वह कभी बूढ़ी नहीं हुई। 1940 के दशक की तस्वीर और 1960 के दशक की तस्वीर में, आकृति बिल्कुल एक जैसी दिखाई देती थी। वही कद। वही मुद्रा। वही स्थिरता—और यही वह शब्द था जिस पर वह बार-बार लौटती थी, स्थिरता, क्योंकि तस्वीरों में अन्य लोगों के विपरीत, जिन्हें गति, हावभाव या भाव-भंगिमा के बीच कैद किया गया था, पृष्ठभूमि में मौजूद आकृति हमेशा पूरी तरह स्थिर थी। हमेशा कैमरे की ओर मुख किए हुए। फोटोग्राफी की भाषा में, हमेशा उपस्थित।

वह हर तस्वीर में ज़ूम किए हुए चेहरे को काफी देर तक देखती रही। पुरानी तस्वीरों की क्वालिटी इतनी अच्छी नहीं थी कि चेहरा साफ़ दिखाई दे। लेकिन उसे लगा कि चेहरा मुस्कुरा रहा है। और उसे ऐसा लगा कि सातों तस्वीरों में दिख रही मुस्कान न तो तस्वीर खिंचवा रहे परिवारों की तरफ थी, न ही फोटोग्राफर की तरफ, बल्कि किसी न किसी तरह एल्बम की तरफ ही थी। शायद किसी ऐसे व्यक्ति की तरफ जो कभी अकेले बैठकर शराब का गिलास और एक मैग्निफाइंग ग्लास लिए हुए इन तस्वीरों को देख रहा हो।

अध्याय 22: बाढ़ रेखा

मार्श रोड के आखिर में बना घर एक दलदली भूमि के किनारे पर स्थित था, जिसे काउंटी के आधिकारिक नक्शों में "अस्थायी" बताया गया था - यानी इसका विस्तार मौसम के अनुसार बदलता रहता था, गीले वर्षों में बढ़ता था और सूखे वर्षों में सिकुड़ता था। वहां रहने वाला कॉफ़ील्ड परिवार, बाईस वर्षों से उस संपत्ति का मालिक था और इसके नियमित चक्रों से परिचित था: पिछवाड़े के लॉन में बाढ़ आने की चिंता कब करनी है, आँगन का फर्नीचर कब हटाना है, पानी कब उतरेगा और ज़मीन कब फिर से ठोस हो जाएगी।

2019 की वसंत ऋतु में घर की पिछली दीवार पर जो निशान दिखाई दिया, उसे शुरू में बाढ़ की लकीर समझा गया - यानी पानी के जमा होने और फिर पीछे हटने से सतह पर पड़ने वाला एक तरह का धब्बा। दीवार की साइडिंग पर, ज़मीन से लगभग तीन फीट ऊपर, पूरी चौड़ाई में फैली एक गहरे रंग की क्षैतिज पट्टी थी। परिवार ने पहले भी बाढ़ की लकीरें देखी थीं; वे इस घटना से परिचित थे; उन्होंने इसे पहचान लिया और मौसम साफ होने पर प्रभावित हिस्से को दोबारा रंगने की योजना बनाई।

लेकिन बाढ़ का स्तर बहुत ऊंचा था।

अप्रैल की कई सुबहों में धीरे-धीरे पेट्रीशिया कॉफ़ील्ड को यह एहसास हुआ, जब वह रसोई में कॉफ़ी पीते हुए पीछे की खिड़की से दीवार को देख रही थीं। वसंत ऋतु में पानी अपने उच्चतम स्तर पर पीछे की दीवार पर लगभग अठारह इंच ऊपर तक पहुँच गया था। उन्हें यह पता था क्योंकि उन्होंने हर बरसाती वसंत ऋतु की तरह इसे नापा था, ताकि पता चल सके कि वे नींव की उस सीमा के कितने करीब पहुँच रहे हैं जहाँ उन्हें कार्रवाई करने की आवश्यकता होगी। अठारह इंच। दीवार पर बाढ़ का स्तर छत्तीस इंच था। पानी के स्तर से पूरे डेढ़ फुट ऊपर।

उसने यह बात अपने पति टॉम को बताई, जिसने भी इस बात से सहमति जताई और कई कारण बताए — केशिका क्रिया, किसी और वर्ष में आई बाढ़ जिससे यह अवशेष रह गया हो, या साइडिंग सामग्री पर अलग-अलग ऊंचाइयों पर अवशोषण की अलग-अलग दरें। ये सभी स्पष्टीकरण तकनीकी रूप से तर्कसंगत थे, लेकिन पेट्रीशिया को इनमें से कोई भी बात संतुष्ट नहीं कर पाई, क्योंकि वह बाईस वर्षों से उस दीवार को देख रही थी और जानती थी कि पिछले वर्षों की बाढ़ की रेखाएं कैसी दिखती थीं और कितनी ऊंचाई पर थीं। यह रेखा नई थी और बहुत ऊंची थी।

उसे सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बात—जिसकी वजह से वो हर सुबह कॉफ़ी लेकर रसोई की खिड़की पर बैठकर उस रेखा को देखती रहती थी—उसकी ऊँचाई नहीं थी। बल्कि उस रेखा की बनावट थी। ज़्यादातर बाढ़ की रेखाओं का किनारा टेढ़ा-मेढ़ा और प्राकृतिक होता है, जो किसी अनियमित सतह पर पानी के असमान रूप से पीछे हटने का नतीजा होता है। यह रेखा इतनी सटीक रूप से क्षैतिज थी कि जितना ज़्यादा वो उसे देखती, उतना ही वह उसे अति सटीक लगती। अति समतल। मानो उसे खींचा गया हो। मानो जिस पानी ने इसे बनाया है, वह बाढ़ के मौसम के कारण होने वाले आकस्मिक बहाव से नहीं, बल्कि एक खास इरादे से ऊपर उठा हो—एक निश्चित ऊँचाई तक पहुँचकर, उसे चिह्नित करके, और फिर पीछे हट जाना।

जून में उसने एक ठेकेदार को पिछली दीवार पर रंग करने के लिए बुलाया, ताकि वह लाइन पूरी तरह से ढक जाए। अगली बसंत तक, लाइन फिर से दिखाई देने लगी। बिलकुल उसी ऊंचाई पर। बिलकुल उसी साफ-सुथरे क्षैतिज किनारे के साथ। उस बसंत में पानी का स्तर अपने उच्चतम स्तर पर चौदह इंच तक पहुंचा। लाइन छत्तीस इंच पर थी।

दीवार पर जो भी निशान बन रहे थे, वे पानी को नहीं माप रहे थे। वे किसी और चीज़ को माप रहे थे—कोई और स्तर, कोई और माध्यम जो उसके घर की दीवार से होकर गुजरता था और एक निश्चित ऊंचाई तक पहुँचकर वहीं रुक जाता था, साल दर साल, धैर्यपूर्वक और सटीक रूप से, अपना रिकॉर्ड रखता हुआ।

अध्याय 23: पीला कमरा

ग्रामीण जॉर्जिया में हाईवे 9 पर स्थित क्रिसेंट मोटर इन के कमरा नंबर 114 को पिछले तीस वर्षों में छह बार रंगा जा चुका है। वर्तमान मालिक - एक परिवार जिसने 2014 में यह संपत्ति खरीदी थी - ने इसे दो बार स्वयं रंगा है, और उन्होंने पिछले मालिकों से भी बात की है, जिन्होंने इसे दो बार रंगा था, और उस प्रबंधन कंपनी से भी बात की है जिसने पिछले मालिकों से पहले कुछ समय के लिए संपत्ति का प्रबंधन किया था, जिसने इसे रंगा था।

दो बार। हर बार रंग अलग था। बेज, क्रीम, हल्का हरा, ऑफ-व्हाइट, टूप, हल्का ग्रे।

प्रत्येक मामले में, कुछ महीनों के भीतर रंग बदल गया।

दीवारों पर पीलापन छा गया। लेकिन यह उस तरह से पीला नहीं पड़ा जैसे सफेद पेंट समय के साथ पीला पड़ जाता है - यह पीलापन बहुत तेज़ी से, एक खास जगह पर और सबसे महत्वपूर्ण बात, एक समान रूप से हुआ। आम तौर पर पेंट के पुराने होने से पीलापन अलग-अलग होता है, कोनों में गहरा और बीच में हल्का, जो प्रकाश, नमी और आवाजाही से प्रभावित होता है। कमरा नंबर 114 में पीलापन एक समान था। एकदम

सही। ऐसा लग रहा था मानो दीवारें शुरू से ही पीले रंग से रंगी हुई थीं और दूसरा रंग बस एक अस्थायी परत थी जिसे कमरा धीरे-धीरे, धैर्यपूर्वक हटा रहा था।
इस कमरे की एक ऐसी बदनामी थी जिसके बारे में मौजूदा मालिकों को खरीद से पहले नहीं बताया गया था। उन्हें इसके बारे में धीरे-धीरे पता चला, स्थानीय निवासियों से बातचीत के माध्यम से और हाईवे 9 के किनारे स्थित संपत्तियों को समर्पित एक ऑनलाइन फोरम से, जिसमें क्रिसेंट मोटर इन के बारे में एक चर्चा थी। यह चर्चा उन्हें देर रात इंटरनेट पर खोज के दौरान मिली, जो उन्होंने कमरा नंबर 114 में ठहरे एक मेहमान की टिप्पणी के बाद की थी, जिसने एक समीक्षा लिखी थी जो मालिकों को चिंताजनक लगी। मेहमान ने अपनी समीक्षा में अन्य बातों के अलावा यह भी कहा था कि कमरे में एक अजीब सी गंध के कारण उन्हें अच्छी नींद नहीं आई - उन्होंने लिखा था कि यह एक पुरानी गंध थी, जैसे किसी बीमार व्यक्ति के लंबे समय तक रहने की जगह हो - और उन्हें रात में यह सोचकर नींद से जागना पड़ा कि उनके साथ बिस्तर पर कोई है, हालांकि जब उन्होंने लाइट जलाई तो बिस्तर खाली था।
फोरम पर यह चर्चा कई साल पुरानी थी और इसमें उन लोगों के अनुभव शामिल थे जो 1990 और 2000 के दशकों में कमरा नंबर 114 में रह चुके थे। उनके अनुभव हल्के-फुल्के परेशान करने वाले अनुभवों (जैसे कि हमेशा रहने वाली बदबू) से लेकर अधिक चिंताजनक अनुभवों तक थे। एक प्रतिभागी ने बताया कि सुबह उठने पर कमरे की पीली रोशनी छत पर लगे बल्ब की रोशनी से कहीं अधिक तेज थी, एक ऐसी चमक जो मानो दीवारों से ही आ रही हो। एक अन्य प्रतिभागी ने बताया कि बाथरूम के शीशे में देखने पर उन्हें कमरे का एक ऐसा रूप दिखाई दिया जो पीछे वाले कमरे से कई मायनों में

अलग था। उन्होंने उन बातों का जिक्र किया और यह अंतर कमरे में उनके वर्णन और चर्चा की तारीख के बीच हुए किसी भी नवीनीकरण से मेल नहीं खाता था।
इस चर्चा में सबसे पुराना योगदान एक ऐसे व्यक्ति का था जो 1989 में कमरा नंबर 114 में रुका था और जिसने कमरे का वर्णन इतनी बारीकी से किया जैसे कोई व्यक्ति लंबे समय से अपनी याददाश्त से कुछ निकालने की कोशिश कर रहा हो और पूरी तरह सफल न हो पाया हो। उसने पीले रंग का वर्णन किया। उसने गंध का वर्णन किया। उसने बताया कि वह सुबह 3 बजे उठा और पाया कि कमरा, किसी ऐसे तरीके से जिसे वह शब्दों में बयान नहीं कर सकता था, उसके चारों ओर बदल गया था - फर्नीचर नहीं, दीवारें नहीं, बल्कि कुछ और। जगह की गुणवत्ता। मानो कमरा सोते समय की तुलना में बड़ा हो गया हो, या दीवारें दूर हो गई हों, या छत ऊंची हो गई हो। मानो अंधेरे में कमरा उसके चारों ओर फैल गया हो।
उन्होंने सुबह 3:30 बजे चेक आउट किया। वे अगले शहर गए और अपनी कार में सो गए। उन्होंने अपनी बात एक वाक्य से समाप्त की जिसे क्रिसेंट मोटर इन के वर्तमान मालिकों ने ब्राउज़र बंद करने से पहले कई बार पढ़ा: "मैं सैकड़ों होटल कमरों में रह चुका हूँ। मुझे कभी कोई ऐसा कमरा नहीं मिला जो मुझे वहाँ से जाने के लिए कहे। वह कमरा चाहता था कि मैं वहीं रहूँ।"

अध्याय 24: वह पक्षी जो वापस आया

हेलेन मार्श ने मंगलवार को एक चिड़िया को आज़ाद किया। यह प्रासंगिक शुरुआत है, हालाँकि कहानी की शुरुआत इससे कहीं पहले हुई थी। हेलेन बहत्तर वर्ष की थीं, एक सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षिका जिन्होंने तीस साल कक्षा में बच्चों को भाषा से प्रेम करना

सिखाया था, और सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने उसी भावना से अपने पिछवाड़े के छोटे से पर्यावरण पर ध्यान देना शुरू कर दिया था - उसी सावधानी और छोटी-छोटी चीजों में उसी शांत आनंद के साथ। वह चिड़ियों को दाना खिलाती थीं। वह चिड़ियों के लिए पानी का बर्तन रखती थीं। वह अपनी नोटबुक में जो कुछ देखती थीं, उसका रिकॉर्ड रखती थीं।

मार्च के एक मंगलवार को, उसे अपने पिछवाड़े में एक चिड़िया मिली जो रसोई की खिड़की से टकराकर आंगन में बेहोश पड़ी थी। उसने उसे उठाया, जैसा कि वह पहले भी कई बार कर चुकी थी, और उसे अपनी हथेलियों में थामे रखा - उसका गर्म वजन, उसकी हथेलियों पर उसके दिल की तेज़ धड़कन - और उसके ठीक होने का इंतज़ार किया। बीस मिनट बाद, वह इतनी ठीक हो गई कि उसे छोड़ा जा सके, और उसने अपनी हथेलियाँ खोलीं और वह उड़ गई, पूरब की ओर, बाड़ के ऊपर से और आँखों से ओझल हो गई।

अगर वह चिड़िया वापस न आती, तो वह इस बारे में दोबारा नहीं सोचती। उसने उसे उसके पंख से पहचान लिया। जब उसने उसे उठाया था, तो उसने उसके दाहिने पंख में एक हल्की सी अनियमितता देखी थी—एक पंख जो थोड़ा टेढ़ा उगा था, एक छोटी सी विकृति जिससे उसकी उड़ान पर कोई असर नहीं पड़ता था। इसी विकृति के कारण वह अगली सुबह अपने बर्ड फीडर पर आई चिड़िया को उसी स्टार्लिंग के रूप में पहचान पाई जिसे उसने छोड़ा था। यह कोई असामान्य बात नहीं थी; चिड़िया फीडर पर लौट आती हैं। उसे यह देखकर खुशी हुई कि वह ठीक हो गई थी।

सबसे उल्लेखनीय बात थी उसके बार-बार आने की आवृत्ति और तरीका। वह चिड़िया हर दिन आती थी। सुबह नहीं, जब उसके अन्य नियमित मेहमान आते थे, बल्कि शाम

ढलते ही, ठीक उसी समय जब उजाला कम होने लगता था। वह अकेली आती थी। वह रसोई की खिड़की के सबसे पास वाले बाड़ के खंभे पर बैठ जाती थी - दाना डालने वाले बर्तन पर नहीं, बल्कि बाड़ के खंभे पर - और पूरी तरह अंधेरा होने तक वहीं बैठी रहती थी। वह रसोई की खिड़की को एकटक देखती रहती थी, मानो उस समय उसे खाने में कोई दिलचस्पी न हो।

हेलेन शाम ढलते ही रसोई में बैठकर उसे देखती रही, जो उसे घूर रहा था। यह सिलसिला कई हफ्तों तक चलता रहा। उसने अपनी बेटी को इसके बारे में बताया, जिसने इसे पक्षियों का सामान्य व्यवहार कहकर टाल दिया। उसने अपने पड़ोसी को भी बताया, जिसने सुझाव दिया कि यह सारस पक्षी का क्षेत्रीय व्यवहार है। उसने इन स्पष्टीकरणों को उसी तरह स्वीकार कर लिया जैसे आप उन स्पष्टीकरणों को स्वीकार करते हैं जो सिद्धांत में सही होते हैं लेकिन व्यवहार में गलत।

जो बदला, वह थी आवाज़। अप्रैल की एक रात को—उसने अपनी नोटबुक में तारीख लिख ली—शाम ढलते समय हमेशा की तरह बाड़ के खंभे पर बैठी चिड़िया ने एक ऐसी आवाज़ निकाली जो उसने पहले कभी किसी स्टार्लिंग या किसी अन्य पक्षी से नहीं सुनी थी। स्टार्लिंग नकल करने में माहिर होते हैं; वे अपने परिवेश की आवाज़ों को अपनी आवाज़ में शामिल कर लेते हैं, और हेलेन ने अपने पिछवाड़े में रहने वाले स्टार्लिंग को कार के अलार्म, अन्य पक्षियों की प्रजातियों और कभी-कभी सुनी हुई बातचीत के कुछ अंशों की हूबहू नकल करते सुना था। लेकिन अप्रैल की उस शाम को, शाम ढलते समय, इस चिड़िया ने जो आवाज़ निकाली, वह उसके परिवेश की कोई आवाज़ नहीं थी। यह उसका नाम था। एक ऐसी आवाज़ जो किसी इंसान की आवाज़ नहीं थी, बल्कि उसके नाम के अक्षरों के इर्द-गिर्द इस तरह ढली थी कि उसने अपना कॉफ़ी का कप नीचे रख

दिया और चिड़िया के आवाज़ खत्म करके चले जाने के बाद भी काफी देर तक रसोई में चुपचाप बैठी रही।

उसने अपनी नोटबुक में लिखा: मंगलवार, 14 अप्रैल। चिड़िया ने आवाज़ लगाई। वह मेरा नाम जानती है। मुझे अभी तक नहीं पता कि इसका क्या करना है।

उसे कभी समझ नहीं आया कि उस पक्षी का क्या करे। वह पक्षी अगले तीन हफ्तों तक हर शाम लौटता रहा। हेलेन मार्श की मई में स्ट्रोक से मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु रसोई में, उसी कुर्सी पर हुई जिस पर वह शाम को बैठती थीं, ठीक उसी समय जब वह पक्षी आता था। रसोई की खिड़की खुली थी। जब उन्होंने फोन का जवाब नहीं दिया तो पड़ोसी आए और उन्हें वहीं पाया। बाहर खिड़की की चौखट पर उन्हें एक काला पंख मिला। और मेज पर रखी उनकी नोटबुक में उन्हें स्ट्रोक से ठीक पहले लिखी गई एक आखिरी प्रविष्टि मिली, जो एक शिक्षिका की साफ और सावधानीपूर्वक लिखावट में थी: मुझे लगता है कि यह मुझे कुछ बताने आया था। मुझे लगता है कि अब मैं समझ गई हूँ कि इसने क्या कहा।

अध्याय 25: भय की ज्यामिति

डॉ. टोबियास क्रेन बोस्टन के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में वास्तुकला सिद्धांत के प्रोफेसर थे, और उन्होंने अपने करियर के अंतिम पाँच वर्ष उस चीज़ को मापने के प्रयास में बिताए जिसे उनके अधिकांश सहकर्मी अकल्पनीय मानते थे: निर्मित स्थानों में भय की ज्यामिति। भय का मनोविज्ञान नहीं - वह उन्होंने मनोवैज्ञानिकों पर छोड़ दिया था - बल्कि वे विशिष्ट स्थानिक विन्यास जो मनुष्यों में भय से जुड़ी शारीरिक प्रतिक्रिया उत्पन्न

करते हैं। बढ़ी हुई हृदय गति। बढ़ा हुआ कोर्टिसोल। तीव्र संवेदी ध्यान। संकुचित एकाग्रता।

उन्होंने स्पष्ट बातों से शुरुआत की: संकरे गलियारे, नीची छतें, और सीमित निकास वाले स्थान। उन्होंने घुटन पैदा करने वाली मानक संरचनाओं का मानचित्रण किया और वास्तुकारों की उस सहज समझ की पुष्टि की कि मनुष्य ऐसे स्थानों में असहज प्रतिक्रिया देते हैं जो आवागमन को प्रतिबंधित करते हैं और दृष्टि को सीमित करते हैं। यह रोचक था, लेकिन कोई विशेष आश्चर्य की बात नहीं थी। उनके शोध ने इस क्षेत्र में थोड़ी रुचि जगाई और संस्थागत डिजाइन पर लिखे गए लेखों में कभी-कभी इसका उल्लेख किया गया।

उनके शोध के अंतिम वर्ष में जो कुछ हुआ - उनकी सेवानिवृत्ति से ठीक पहले का वर्ष, वह वर्ष जो उन्होंने एक ऐसे शोध कार्य को आगे बढ़ाने में बिताया, जिसके बारे में उनके विभाग के अध्यक्ष ने सावधानीपूर्वक प्रबंधित कूटनीति के साथ सुझाव दिया था कि वे इस पर पुनर्विचार करना चाह सकते हैं - वह कुछ ऐसा था जिसका उल्लेख करना उनके सहयोगियों के लिए काफी अधिक कठिन था।

उन्होंने कैंपस के बाहरी इलाके में स्थित एक इमारत में, जिसे गिराया जाना था, कई परीक्षण स्थल बनाए थे। प्रत्येक स्थल एक विशिष्ट ज्यामिति का भिन्न रूप था जिसे उन्होंने अपने पूर्व शोध में पहचाना था।

इसमें प्रवेश करने वाले प्रतिभागियों में भय की ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई जो किसी भी घुटन भरी व्याख्या से कहीं अधिक थी। यह स्थान न तो संकरा था, न ही इसकी छत नीची थी, और न ही इसमें निकास के सीमित द्वार थे। यह लगभग एक बड़े शयनकक्ष के आकार का था, जिसकी छत की ऊंचाई मानक थी, दो निकास द्वार थे और पर्याप्त

रोशनी थी। फिर भी, इसमें प्रवेश करने वाले प्रतिभागियों ने भय का अनुभव किया। यह भय निरंतर और विशिष्ट था, जिसका शारीरिक रूप से दस्तावेजीकरण किया गया और स्वयं के अनुभवों द्वारा इसकी पुष्टि की गई।

ज्यामिति कुछ इस प्रकार थी: स्थान को इस प्रकार आकार दिया गया था कि उसकी सबसे लंबी धुरी को एक विशिष्ट अनुपात से गुणा करने पर एक ऐसी संख्या प्राप्त होती थी जो उनके द्वारा अब तक देखे गए किसी भी वास्तुशिल्प मानक से मेल नहीं खाती थी, लेकिन विभिन्न विषयों में यह एकरूपता के साथ शारीरिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती प्रतीत होती थी। उन्होंने अपने अप्रकाशित नोट्स में इस अनुपात को "असामान्य गुणांक" कहा। उन्हें नहीं पता था कि यह कहाँ से आया था। वे केवल इतना जानते थे कि यह काम करता है।

अपने शोध के अंतिम महीनों में, जब उनके शोध सहायक अन्य परियोजनाओं में व्यस्त हो गए थे, तब वे परीक्षण भवन में अकेले काम कर रहे थे। तब उन्होंने पाया कि यह असामान्य गुणांक केवल निर्मित स्थानों तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने इसे प्रकृति में भी पाया—कुछ भूवैज्ञानिक संरचनाओं के अनुपात में, प्राचीन वनों में वृक्षों की कुछ व्यवस्थाओं के अंतराल में, और कुछ बहुत पुरानी इमारतों के वास्तुशिल्पीय अनुपातों में, जिनके मूल डिज़ाइनरों को उनके द्वारा किए जा रहे शोध की जानकारी नहीं रही होगी। सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि उन्होंने इसे गुफा चित्रों की एक श्रृंखला में पाया, जो उन्हें प्रागैतिहासिक कला पर एक शोध पत्र में मिली थी, जो 1971 में एक अज्ञात पुरातत्व पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। फ्रांस के एक स्थल से मिले ये गुफा चित्र—लगभग तीस हजार वर्ष पूर्व के—एक स्थान को दर्शाते थे। एक आयताकार स्थान, विशिष्ट आयामों के

साथ, अनुपात में सावधानीपूर्वक निर्मित। इस स्थान में असामान्य गुणांक था। तीस हजार वर्ष पूर्व इसे बनाने वाले लोग इस ज्यामिति से परिचित थे।

डॉ. क्रेन उस शैक्षणिक वर्ष के अंत में सेवानिवृत्त हो गए। उन्होंने असामान्य गुणांक पर अपने निष्कर्ष प्रकाशित नहीं किए। उन्होंने अपने विभाग के अध्यक्ष से, एक बातचीत में जिसे उन्होंने अपनी निजी डायरी में "कई वर्षों में हुई सबसे ईमानदार बातचीत" बताया, कहा कि उन्होंने शोध रोक दिया है क्योंकि उन्हें अंततः समझ आ गया था कि असामान्य गुणांक क्या है और यह कैसे काम करता है।

उन्होंने कहा कि यह कोई डिज़ाइन की खामी नहीं थी। यह किसी मनमानी अनुपात पर प्रतिक्रिया करने वाली मानव तंत्रिका विज्ञान की कोई विचित्रता नहीं थी। यह किसी ऐसी चीज़ की ज्यामिति थी जो वास्तव में मौजूद है - भौतिक जगत में एक ऐसा आकार, जिसे पहचानने के लिए मानव भय प्रतिक्रिया विशेष रूप से विकसित हुई है। जैसे सांपों का डर मनमाना नहीं है, बल्कि इसलिए विकसित हुआ है क्योंकि सांप वास्तव में खतरनाक होते हैं। असामान्य गुणांक से उत्पन्न भय मनमाना नहीं था। यह इसलिए विकसित हुआ है क्योंकि जिस भी चीज़ का वह आकार होता है - भौतिक जगत में जिस भी चीज़ का वह अनुपात होता है - वह वास्तव में खतरनाक होती है।

उन्होंने सेवानिवृत्ति का समय बागवानी में बिताया। उन्होंने किसी चीज का माप नहीं किया।

अध्याय 26: कुआँ

मध्य टेक्सास के पहाड़ी क्षेत्र में एक निश्चित आयु से अधिक पुरानी हर संपत्ति में, ज़मीन पर कहीं न कहीं एक कुआँ ज़रूर होता है। इनमें से अधिकांश कुएँ सीलबंद हैं - घर में

पाइपलाइन लगने पर उन्हें ढक दिया गया, कंक्रीट या धातु की प्लेट से बंद कर दिया गया या बस लकड़ी के तख्तों से ढककर भुला दिया गया, और धीरे-धीरे मालिकों की आने वाली पीढ़ियों को उनके स्थान का पता नहीं चल पाया। क्रॉफर्ड की संपत्ति पर स्थित कुआँ मौजूद था; पारिवारिक अभिलेखों में इसका उल्लेख है, और पीछे के चरागाह के सुदूर कोने में स्थित इसका स्थान 1952 के संपत्ति सर्वेक्षण में भी अंकित है। इसे 1960 के दशक की शुरुआत में किसी समय सीलबंद कर दिया गया था और तब से इसे खोला नहीं गया था।

जब क्रॉफर्ड परिवार ने 2020 में पुराने फार्महाउस का जीर्णोद्धार शुरू किया, तो उनके ठेकेदार ने उन्हें दायित्व संबंधी मामले के रूप में कुएं की स्थिति की जांच करने का सुझाव दिया। उन्होंने कुएं के निरीक्षण और सीलिंग में विशेषज्ञता रखने वाली एक कंपनी को काम पर रखा, और जून में एक सप्ताह के दिन की सुबह, दो तकनीशियन ढक्कन की जांच करने के लिए पीछे के चरागाह में गए।

जैसा कि उम्मीद थी, ढक्कन कंक्रीट का बना था। उसमें दरारें भी थीं - बहुत ज्यादा नहीं, लेकिन इतनी कि उसे बदलना जरूरी था। तकनीशियनों ने नुकसान की तस्वीरें लीं, किनारों की जांच की और ढक्कन को हटाने और बदलने की तैयारी की। मानक प्रक्रिया के अनुसार, सील करने से पहले कुएं के शाफ्ट का निरीक्षण करना आवश्यक था, जो उन्होंने पोल पर लगे कैमरे की मदद से किया।

मूल सर्वेक्षण के अनुसार शाफ्ट चालीस फीट गहरा था। कैमरे ने इसकी पुष्टि की; यह चालीस फीट तक पहुंचा और तल पर सूखी मिट्टी जैसी कोई चीज़ दिखाई दी। पानी नहीं था - यह पिछले साठ वर्षों में क्षेत्रीय जलस्तर में आई गिरावट के अनुरूप था। शाफ्ट में

कोई संरचनात्मक समस्या नहीं थी। तकनीशियन संतुष्ट था और कैमरे को बंद करने ही वाला था कि मॉनिटर देख रहे उसके सहकर्मी ने उसे रुकने को कहा।

उसने कुछ देखा था। उसने उससे कहा कि कैमरे को धीरे-धीरे शाफ्ट के निचले हिस्से से ऊपर की ओर ले जाए। उसने वैसा ही किया। शाफ्ट के निचले हिस्से में सूखी मिट्टी थी, जो गर्मी से फट गई थी। बीस फीट की गहराई पर, शाफ्ट की दीवारें मिट्टी की थीं और कहीं-कहीं जड़ें निकली हुई थीं। दस फीट की गहराई पर, शाफ्ट कंक्रीट का बना था, जिसे ऊपरी हिस्से को ढकने के लिए कभी लगाया गया था। आठ फीट की गहराई पर, कंक्रीट पर निशान दिखाई देने लगे।

निशान नियमित थे। क्षैतिज रेखाएँ, समान दूरी पर, लगभग एक इंच की दूरी पर, कंक्रीट की परत के अंदरूनी हिस्से के चारों ओर फैली हुई थीं। ये आठ फीट की ऊंचाई पर थीं। ये ऊपर की ओर, निकट दूरी पर, शीर्ष से लगभग चार फीट की दूरी तक जारी रहीं। फिर वे रुक गईं।

निशानों की गिनती करने पर पता चला कि उनकी तिरपन पंक्तियाँ थीं। समान दूरी पर, क्षैतिज रूप से। एक कंक्रीट के कुएँ के शाफ्ट के अंदरूनी हिस्से पर, जिसे उपलब्ध सभी साक्ष्यों के अनुसार, 1960 के दशक की शुरुआत से सील कर दिया गया था। तकनीशियनों ने निशानों की तस्वीरें लीं, अपनी रिपोर्ट पूरी की और कुएं को कंक्रीट की नई परत से बंद कर दिया। क्रॉफर्ड परिवार को रिपोर्ट और तस्वीरें मिलीं। उन्होंने निशानों से संबंधित भाग पढ़ा और काफी देर तक चुप रहे। फिर उन्होंने पूछा कि ये निशान क्या हैं।

तकनीशियनों ने कहा कि उन्हें पता नहीं है। उन्होंने कहा कि निशान शाफ्ट के अंदरूनी हिस्से में किसी चीज द्वारा बार-बार, नियमित गति करने के संकेत दे रहे थे। गति निरंतर

और स्थिर थी। यह गति लंबे समय से हो रही थी।
तिरेपन पंक्तियों में निशान। शीर्ष से आठ से चार फीट की दूरी पर। उस ऊंचाई पर जहां कोई वस्तु खड़ी हो सकती है, अगर वह ढक्कन तक पहुंचने से थोड़ी सी छोटी हो। मानो वह बहुत लंबे समय से वहीं पड़ी हो, उस एकमात्र दीवार पर दिनों के निशान अंकित कर रही हो जहां तक वह पहुंच सकती थी। एक बंद कुएं के अंधेरे में, किसी के आने और ढक्कन खोलने का इंतजार कर रही हो।

अध्याय 27: खिड़की पर हाथ

केंटकी के हार्लन काउंटी में रूट 47 पर चलने वाली स्कूल बस हर रोज़ सुबह ग्रामीण इलाकों से इकत्तीस विद्यार्थियों को हार्लन काउंटी मिडिल स्कूल ले जाती है और दोपहर में उन्हें वापस लाती है। बस चालक जीन होल्ट है, जो अठारह वर्षों से इसी रूट पर बस चला रहा है और इस रूट पर हर गली-मोहल्ले और डाकपेटी को इतनी बारीकी से जानता है कि मानो वह लंबे समय से इस रूट पर है। उसे पता है कि कौन से बच्चे देर से आएंगे, कौन से कुत्ते बस का पीछा करेंगे, और सर्दियों में सड़क के कौन से हिस्से खराब हो जाते हैं। वह इस रूट को ऐसे जानता है जैसे आप किसी बार-बार आने वाले सपने को जानते हैं - मानो बार-बार वही सपना देख रहे हों।
वह मील मार्कर 23 पर मौजूद बच्चे को नहीं जानता था।
माइल मार्कर 23, रूट 47 के सबसे लंबे जंगली हिस्से के बीचोंबीच स्थित है। यह लगभग दो मील लंबा इलाका है जहाँ सड़क घने, नए उगे जंगलों से होकर गुजरती है, जहाँ न कोई घर है, न कोई सड़क, न कोई डाकघर। माइल मार्कर 23 पर सड़क और पेड़ों के

सिवा कुछ भी नहीं है। पिछले अठारह वर्षों में इस मार्ग पर गाड़ी चलाते हुए, आज तक वहाँ कोई भी व्यक्ति नहीं मिला है।

अक्टूबर 2018 में, जीन होल्ट सुबह की बस चला रहे थे, बस छात्रों से भरी हुई थी, रात भर हुई बारिश से सड़क गीली थी और पेड़ अभी भी सुबह की छाया से घने थे। जैसे ही वे जंगल वाले हिस्से से गुजरे, उन्होंने मील मार्कर 22 पर एक मोड़ के लिए बस की गति धीमी की और फिर मील मार्कर 24 तक जाने वाली लंबी सीधी सड़क पर आगे बढ़े। और मील मार्कर 23 पर, बस की हेडलाइट्स में, उन्होंने सड़क के किनारे एक बच्चे को खड़ा देखा।

उसने बस रोक दी। यही करना होता है। उसने दरवाज़ा खोला। बच्चा—वह उसकी उम्र या लिंग का ठीक-ठीक अंदाज़ा नहीं लगा सका, वह छोटा था, शायद दस या ग्यारह साल का, अक्टूबर की ठंड के हिसाब से हल्के कपड़े पहने हुए—हिला नहीं। बस के पास नहीं आया। सड़क के किनारे हेडलाइट की रोशनी में खड़ा रहा और उसे देखता रहा।

उसने आवाज़ लगाई। कोई जवाब नहीं मिला। उसने अपनी इमरजेंसी लाइट चालू की और बस से उतरकर उस बच्चे के पास गया जहाँ वह खड़ा था। बच्चा बिना किसी भाव के उसे देखता रहा। उसने पूछा कि क्या बच्चा ठीक है। कोई जवाब नहीं मिला। उसने पूछा कि बच्चे के माता-पिता कहाँ हैं। कोई जवाब नहीं मिला। उसने हाथ बढ़ाकर बच्चे के कंधे पर हाथ रखा, ताकि उसे बस में बिठा सके और स्कूल व काउंटी सोशल सर्विस को फोन कर सके।

उसका हाथ बच्चे के कंधे से आर-पार चला गया। न ज़ोर से, न किसी नाटकीय अंदाज़ में। बस यूँ ही आर-पार—जैसे बच्चा पूरी तरह ठोस न हो, जैसे बच्चे में कुछ तो हो, पर अधूरा सा। बच्चे ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। जीन होल्ट पीछे हट गया। वह बारिश में

अपनी बस की हेडलाइट्स की रोशनी में वहीं खड़ा रहा और बच्चे को देखता रहा, बच्चा भी उसे देखता रहा, और फिर बच्चा मुड़ा और पेड़ों की ओर चल पड़ा और गायब हो गया।

वह वापस बस में बैठ गया। वह स्कूल चला गया। उसने ज़रूरी रिपोर्ट दर्ज कराई - रूट 47 पर एक बच्चे के संकट में होने की आशंका - और काउंटी ने जाँच की लेकिन कुछ नहीं मिला। तब से पिछले चार सालों से वह हर रोज़ रूट 47 पर बस चलाता आ रहा है। वह माइल मार्कर 23 से बिना धीमे हुए और बिना देखे ही निकल जाता है। लेकिन बस में बैठे छात्र, जो बच्चे हैं और इसलिए बड़ों की तुलना में इन बातों को लेकर ज़्यादा ईमानदार हैं, अपने माता-पिता को बताते हैं कि कभी-कभी, अक्टूबर की अंधेरी सुबहों में, जब बस जंगल वाले इलाके से गुज़रती है, तो खिड़की पर एक छोटा सा पीला चेहरा दिखाई देता है। बाहर से नहीं। शीशे के अंदर से। एक हाथ जो चपटा हो। और अगर आप सीधे उसकी तरफ देखें, तो वह वहाँ नहीं होता। अगर आप नज़र हटा लें, तो वह दिखाई देता है।

अध्याय 28: सर्जन की डायरी

डॉ. फिलिप हार्किन ने 2016 में अपनी सेवानिवृत्ति से पहले पोर्टलैंड, ओरेगन के एक अस्पताल में छब्बीस वर्षों तक सामान्य शल्य चिकित्सा का अभ्यास किया। वे सर्वमान्य एक उत्कृष्ट सर्जन थे - कुशल, सटीक, और अपनी शांत दक्षता के लिए जाने जाते थे, जिससे उनके मरीज आश्वस्त होते थे और उनके सहकर्मी उन्हें अमूल्य मानते थे। उन्होंने शल्य चिकित्सा तकनीक पर शोध पत्र प्रकाशित किए, अस्पताल की समितियों में अपनी सेवाएं दीं, और प्रशिक्षुओं को चुनौतीपूर्ण लेकिन प्रभावी तरीकों से प्रशिक्षित किया।

उनके साथ काम करने वाले सभी लोगों के अनुसार, वे रहस्य छिपाने वाले व्यक्ति के बिल्कुल विपरीत थे।

उन्होंने छब्बीस वर्षों तक एक रहस्य छिपाए रखा। उनकी मृत्यु के बाद उनके घर में यह रहस्य मिला - उनकी मृत्यु स्वाभाविक थी, कैंसर से, उनकी उम्र इकहत्तर वर्ष थी - उन नोटबुक्स की एक श्रृंखला में जिन्हें उन्होंने स्पष्ट रूप से नष्ट करने का इरादा किया था, लेकिन उनके निर्देशों के समय पर उनके वसीयतकर्ता तक न पहुंचने के कारण, उन्हें उनकी बाकी संपत्ति के साथ सूचीबद्ध कर दिया गया और अंततः पढ़ा गया।

रहस्य यह था: डॉ. हार्किन ने अपने पूरे शल्य चिकित्सा करियर में कुछ ऐसा अनुभव किया था जिसे वे समझा नहीं सकते थे और हर बार जब भी उन्हें ऐसा अनुभव होता, वे उसे अपनी निजी नोटबुक में दर्ज कर लेते थे और किसी को नहीं बताते थे। उन्होंने इसे ऑपरेशन कक्ष में, और विशेष रूप से उन सर्जरी के दौरान अनुभव किया था जिनमें रोगी को सामान्य बेहोशी दी जाती थी। अपने करियर के दौरान, लगभग तीन सौ प्रक्रियाओं में, उन्होंने कुछ ऐसा देखा जिसे उन्होंने पहले तो नजरअंदाज कर दिया था और फिर, जब वह बार-बार हुआ, तो उन्होंने उसे एक वैज्ञानिक की तरह सावधानीपूर्वक दर्ज करना शुरू कर दिया, जिसकी शिक्षा उन्हें यह दिखावा करने की अनुमति नहीं देती थी कि उन्होंने जो देखा है उसे अनदेखा कर दिया है।

उन्होंने देखा कि कुछ विशेष ऑपरेशनों के दौरान ऑपरेशन कक्ष में कुछ मौजूद था। कोई व्यक्ति नहीं, कोई उपकरण नहीं, कोई ऐसी भौतिक वस्तु नहीं जिसे वे इंगित कर सकें। एक उपस्थिति। उन्होंने इसे सबसे पहले कमरे के वातावरण की एक विशेषता के रूप में महसूस किया - एक ध्यान, एक निर्देशित रुचि जिसे वे तर्कसंगत नहीं ठहरा सकते थे, लेकिन नकार भी नहीं सकते थे। उन्होंने इसे एक विशिष्ट प्रकार के ऑपरेशनों

के दौरान लगातार महसूस किया: ऐसे ऑपरेशन जिनमें किसी समय परिणाम वास्तव में अनिश्चित होता था। ऐसे ऑपरेशन जिनमें रोगी कुछ समय के लिए सचमुच खतरे में होता था। ऐसे ऑपरेशन जिनमें चिकित्सा दल एक पल से दूसरे पल तक यह सुनिश्चित नहीं कर सकता था कि ऑपरेशन टेबल पर लेटा व्यक्ति जीवित रहेगा या नहीं।

इन विशिष्ट सर्जरी के दौरान, एक उपस्थिति प्रकट हुई। और डॉ. हार्किन ने अपनी नोटबुक में, एक वैज्ञानिक की तरह सावधानीपूर्वक भाषा का प्रयोग करते हुए, यह दर्ज किया कि उसने क्या किया: वह देख रही थी। वह उस विशेष चीज़ में रुचि रखती थी जो दांव पर लगी थी। वह दुर्भावनापूर्ण नहीं थी - उन्होंने इस बारे में स्पष्ट रूप से लिखा था और अपने नोट्स में कई बार इसका उल्लेख किया था। वह नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं थी। लेकिन वह परिणाम में इस तरह से रुचि रखती थी कि डॉ. हार्किन उसे एक शारीरिक दबाव के रूप में महसूस कर सकते थे, एक निर्देशित ध्यान जो लगभग वैसा ही था जैसे मेज के उस पार बैठा कोई दूसरा सर्जन उन्हें देख रहा हो।

उन्होंने 2008 की एक प्रविष्टि में इसका वर्णन इस प्रकार किया: “मैं इसे एक ऐसी उपस्थिति के रूप में देखता हूँ जो अवस्थाओं के बीच की सीमा में निहित है—जीवित और निर्जीव के बीच, यहाँ और चले जाने के बीच। यह तब प्रकट होती है जब वह सीमा वास्तव में अनिश्चित होती है, और मेरा मानना है कि इसकी रुचि परिणाम में नहीं, बल्कि निर्धारण के क्षण में होती है। वह क्षण जब संतुलन बदल जाता है। यह उस क्षण का साक्षी बनने आती है। उस परिवर्तन के समय उपस्थित रहने के लिए।”

अपनी मृत्यु से कुछ महीने पहले लिखे गए अंतिम लेख में, जब वे स्वयं उस अनिश्चितता से जूझ रहे थे जिसे उन्होंने अपने पूरे जीवन में दूसरों में देखा था, उन्होंने लिखा: “मुझे लगता है कि मैं इससे डरता नहीं हूँ। मैंने इसे कई बार देखा है। मैं जानता हूँ कि यह क्या है और

क्या नहीं है। और मुझे संदेह है—काफी समय से—कि मेरे ऑपरेशन कक्ष में इसकी उपस्थिति, कठिन ऑपरेशनों के आंकड़ों से कहीं अधिक बार, इसलिए थी क्योंकि मैंने अनजाने में ही इसे महसूस करना सीख लिया था। और इसने भी जान लिया था कि मैं इसे महसूस कर सकता हूँ। और उस आपसी पहचान में कुछ ऐसा है जो एक दूसरे की ओर खींचता है। मैं जल्द ही इससे ठीक से मिलूंगा। मुझे उत्सुकता है कि दूसरी तरफ से यह वैसा ही दिखेगा या नहीं।"

अक्टूबर के एक मंगलवार को उनका निधन हो गया। ड्यूटी पर मौजूद नर्सों ने कुछ भी असामान्य नहीं बताया। लेकिन उनकी एक पूर्व रेजिडेंट - चालीस वर्ष की एक सर्जन, जिन्होंने हारकिन के अधीन प्रशिक्षण लिया था और जिन्होंने इस घटना के किसी भी विवरण में अपना नाम बताने से इनकार कर दिया - ने कहा कि वह उस दोपहर उनके कमरे में उनसे मिलने गई थीं, और उनके निधन से एक घंटे पहले उन्होंने भी उस उपस्थिति को महसूस किया था, जिसका उन्होंने छब्बीस वर्षों तक दस्तावेजीकरण किया था। उन्होंने उस उपस्थिति को कमरे में प्रवेश करते हुए महसूस किया। उन्होंने महसूस किया कि वह उपस्थिति बिस्तर पर लेटे व्यक्ति पर टिक गई है। उन्होंने महसूस किया कि वह उस धैर्यपूर्ण रुचि के साथ प्रतीक्षा कर रही है, जैसे कोई ऐसी चीज जो हमेशा और हर जगह ऐसा करती है, संतुलन के पलटने का इंतजार कर रही हो।

अध्याय 29: वन मार्ग

दक्षिणपूर्वी अलास्का के टोंगस राष्ट्रीय वन में एक सड़क है जिसके बारे में वन सेवा को जानकारी तो है, लेकिन वह इसे आधिकारिक तौर पर स्वीकार नहीं करती। यह किसी भी सार्वजनिक मानचित्र पर नहीं दिखती। इसका रखरखाव नहीं किया जाता। इसका

निर्माण किसी ऐसी संस्था द्वारा नहीं किया गया है जिसके निर्माण संबंधी रिकॉर्ड वन सेवा के अभिलेखागार में उपलब्ध हों। फिर भी, यह सड़क मौजूद है।

रेंजर सिमोन डुबोइस ने इसे 2016 में खोजा था, जब वे उस जिले में अपनी तैनाती के दूसरे वर्ष में थीं जिसमें जंगल का संबंधित हिस्सा शामिल है। उन्होंने इसे तब खोजा जब वे एक शीतकालीन तूफान से क्षतिग्रस्त हुए एक पगडंडी खंड का अकेले सर्वेक्षण कर रही थीं, और उनके पास एक नक्शा था जिसमें आसपास का इलाका बिना रुकावट वाले जंगल के रूप में दिखाया गया था। यह सड़क - जिसे वे पगडंडी के बजाय सड़क कहती हैं क्योंकि यह समतल है, इसकी सतह से लगता है कि इसे जानबूझकर तैयार किया गया है, और यह एक वाहन के लिए पर्याप्त चौड़ी है, हालांकि इस पर कोई वाहन के निशान नहीं हैं - निकटतम आधिकारिक वन सेवा पगडंडी से लगभग चार मील दूर एक बिंदु से उत्तर-पूर्व की ओर जाती है। उन्होंने लगभग दो मील तक इसका अनुसरण किया और फिर मुड़ गईं।

वापस लौटना पड़ा, क्योंकि रोशनी कम हो रही थी और वह अकेली थी और क्योंकि दो मील बाद सड़क कुछ ऐसा कर रही थी जिसे वह तुरंत समझा नहीं सकती थी, लेकिन जिसने उसे बौद्धिक तर्क के बजाय शारीरिक संवेदना के दृढ़ विश्वास के साथ यह महसूस कराया कि उसे आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

सड़क मुड़ रही थी। उस तरह नहीं जैसे सड़कें भौगोलिक विशेषताओं के चारों ओर मुड़ती हैं—पहाड़ियों के चारों ओर, खड़ी ढलानों से दूर—बल्कि एक ऐसे पैटर्न में जिसे उन्होंने वर्षों बाद अपने एक भरोसेमंद सहकर्मी के साथ साझा किए गए अपने निजी नोट्स में पुनरावर्ती बताया था। सड़क वापस अपनी ओर मुड़ रही थी। मोड़ इतना धीरे-धीरे था कि उन्होंने तुरंत इसे महसूस नहीं किया, और फिर उन्होंने इसे महसूस किया।

वह उत्तर-पूर्व की ओर चल रही थीं, फिर उत्तर की ओर, फिर उत्तर से थोड़ा पश्चिम की ओर, और मोड़ जारी रहा, और वह समझ गईं कि अगर वह चलती रहीं, तो अंततः वह सीधे पश्चिम की ओर, फिर दक्षिण-पश्चिम की ओर, फिर दक्षिण की ओर चलेंगी—कि सड़क एक वृत्त बना रही थी। एक बहुत बड़ा वृत्त, इतना धीरे-धीरे कि आप मीलों तक बिना एहसास किए यात्रा कर सकते हैं, लेकिन फिर भी एक वृत्त।

वह वापस मुड़ी। उसने सड़क के प्रवेश बिंदु को एक नारंगी रंग के खंभे और जीपीएस निर्देशांक से चिह्नित किया। उसने आधिकारिक वन सेवा डेटाबेस से उस निर्देशांक की जाँच की, लेकिन उसे कुछ नहीं मिला। उसने सड़क की सूचना अपने पर्यवेक्षक को दी, जिन्होंने उसे एक क्षेत्रीय कार्यालय के पास भेजा, जिसने उसे एजेंसी के अभिलेख इकाई के पास भेजा, जहाँ सड़क के निर्माण का कोई रिकॉर्ड नहीं मिला और आगे के मूल्यांकन के लिए इसे चिह्नित करने की सिफारिश की गई।

आकलन कभी हुआ ही नहीं। निर्देशांक दर्ज कर लिया गया था। जब वह छह महीने बाद वापस गई, तो नारंगी रंग का खंभा गायब था। सड़क अभी भी वहीं थी।

अगली गर्मियों में, वह एक सहकर्मी के साथ फिर से वहाँ गई। वे तीन मील तक सड़क पर चलते रहे, तभी उनके सहकर्मी ने - जो पंद्रह वर्षों से वन सेवा में कार्यरत थे और जिन्हें सिमोन ने अपने जीवन में मिले सबसे शांत स्वभाव के लोगों में से एक बताया था - रुकने की इच्छा जताई। उन्होंने बिना कोई स्पष्टीकरण दिए यह बात कही, फिर जब सिमोन ने पूछा तो उन्होंने स्पष्टीकरण दिया: उन्होंने बताया कि वे तीन मील चल चुके हैं और उनके जीपीएस के अनुसार, उन्होंने सड़क के प्रवेश द्वार से लगभग छह सौ मीटर की दूरी तय की है। उन्होंने सिमोन को जीपीएस दिखाया। सिमोन ने भी अपना जीपीएस

देखा। दोनों में एक ही बात दिख रही थी: छह सौ मीटर। तीन मील की पैदल दूरी। तय की गई वास्तविक दूरी छह सौ मीटर।
सड़क कहीं जा रही थी। सड़क बहुत ही खास और सावधानी से वहाँ नहीं पहुँच रही थी। सड़क आपके शुरुआती बिंदु और गंतव्य के बीच की दूरी के साथ कुछ कर रही थी - उसे खा रही थी, जमा कर रही थी, उन मीलों के साथ कुछ कर रही थी जो जमा होने चाहिए थे लेकिन किसी तरह नहीं हुए।
वे वापस रास्ते पर चले गए। उन्होंने अपनी रिपोर्ट दर्ज की। जीपीएस निर्देशांक प्रणाली में वह सड़क अभी भी एक दर्ज विसंगति के रूप में मौजूद है। न तो सिमोन डुबोइस और न ही उनके सहयोगी उस वन क्षेत्र में वापस गए हैं। सड़क अभी भी वहीं है, शायद। कहीं नहीं जा रही। अपने आप धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है।

अध्याय 30: विरासत

जब मार्गरिट इलियट को तटीय मेन में अपनी दादी का घर विरासत में मिला, तो उन्हें उसके अंदर की चीजें भी विरासत में मिलीं - फर्नीचर, किताबें, कपड़े, तस्वीरें और छोटी-छोटी वस्तुएं जिनका उनकी दादी ने जीवन भर संग्रह किया था। ये वस्तुएं अब किसी काम की नहीं थीं, लेकिन सहेज कर रखी गई थीं और सहेज कर रखने के कारण ही इनका महत्व बढ़ गया था। मार्गरिट ने एक सप्ताहांत में धीरे-धीरे घर का दौरा किया, चीजों को छांटा और तय किया, और अंत में उन्हें वह कमरा मिल गया।
कमरा तहखाने के पीछे था। तहखाने से सटा हुआ नहीं, न ही मुख्य तहखाने से जुड़ा कोई भंडारण क्षेत्र, बल्कि उसके पीछे - तहखाने की पिछली दीवार में एक दरवाज़ा, जिसे उसने घर की पिछली किसी भी यात्रा में नहीं देखा था, शायद इसलिए कि वह एक

बड़े शेल्फ के पीछे छिपा हुआ था, जिसे उसकी पिछली यात्रा और उसकी दादी की मृत्यु के बीच किसी समय हटा दिया गया था। दरवाज़ा लकड़ी का था, तख्तों से बना हुआ, जिसमें एक साधारण कुंडी लगी थी। कब्ज़े पुराने थे। दरवाज़े की लकड़ी तहखाने की अन्य संरचनात्मक लकड़ी के समान ही पुरानी और उसी प्रकार की थी, जिससे पता चलता है कि यह घर के निर्माण के समय से ही वहाँ मौजूद था।

दरवाजे के पीछे लगभग बारह फीट लंबा और बारह फीट चौड़ा एक कमरा था, जिसकी छत नीची थी और दीवारें खुरदुरे पत्थरों की बनी थीं। कमरे में पुरानी लकड़ी और किसी ऐसी चीज की गंध आ रही थी जिसे वह तुरंत पहचान नहीं पाई - हल्की सी रासायनिक गंध, जैसे किसी चीज को संरक्षित करने की। कमरा खाली नहीं था।

उसमें अलमारियाँ थीं। ये अलमारियाँ खुरदरी लकड़ी की बनी थीं, सजावटी नहीं बल्कि काम की थीं, और फर्श से छत तक चारों दीवारों पर लगी थीं। और इन अलमारियों पर जार रखे थे। दर्जनों जार - अलग-अलग आकार के कांच के जार, मोम से सील किए हुए और ढक्कन लगे हुए, हर एक पर उसकी दादी की लिखावट में तारीख और नाम लिखा था। नाम वो पहचानती थी; तारीखें कई दशकों पुरानी थीं। तारीखें मृत्यु से जुड़ी थीं। धीरे-धीरे उसे यह समझ आने लगा, एक-एक जार खोलते हुए, नामों और तारीखों को पढ़ते हुए और अपनी दादी के जीवन के बारे में जो कुछ उसे पता था, उससे उनका मिलान करते हुए। हर जार उस अवधि के दौरान मरने वाले किसी व्यक्ति से संबंधित था। कुछ परिवार के सदस्य थे। कुछ दोस्त थे। कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें मार्गरिट नहीं पहचानती थी। उसने शेल्फ से एक जार उठाया। उस पर उसके दादाजी का नाम और उनकी मृत्यु का वर्ष लिखा था। जार के अंदर कुछ ऐसा था जिसे वह तुरंत पहचान नहीं पाई - कुछ ऐसा जो न तरल था, न ठोस, न ही कोई ऐसा पदार्थ जिसका वह नाम जानती हो। कमरे की

हल्की रोशनी में, वह कुछ ऐसा था जो अपनी हल्की चमक बिखेर रहा था। जार को झुकाने पर वह कुछ हिल रहा था, तरल की तरह नहीं, बल्कि किसी ध्यान से - मानो उसने उसे देख लिया हो।

उसने जार को वापस शेल्फ पर रख दिया। वह कमरे से बाहर चली गई। वह फिर कभी कमरे में नहीं लौटी, न ही उसने संपत्ति के एजेंट को इसके बारे में बताया, और न ही कई सालों तक उसने किसी से इसका ज़िक्र किया। लेकिन उसने घर बेचा भी नहीं। उसने घर अपने पास रखा। वह कभी-कभार वहाँ जाती थी। उसने घर की देखभाल की। उसे खुद नहीं पता था कि क्यों—मेन में उसे घर की कोई ज़रूरत नहीं थी—सिवाय इसके कि उसने बाद में सोचा और महसूस किया कि उसे उस कमरे की ज़िम्मेदारी का एहसास हो रहा है। उसे लगा कि उसे उस कमरे की देखरेख सौंपी गई है, और उन जारों में जो कुछ भी था—जो कुछ भी उसकी दादी ने दशकों तक बड़ी सावधानी से इकट्ठा और सहेज कर रखा था—उसकी देखभाल किसी को तो करनी ही चाहिए।

लोग जाते समय जो कुछ भी पीछे छोड़ जाते थे। दादी माँ ने जो कुछ भी अच्छी तरह समझकर सहेज कर रखा था। [यह ईबुक सभी 100 अध्यायों में जारी है, जिनमें से प्रत्येक में एक अनूठी और भयानक डरावनी कहानी को पूरी गहराई से वर्णित किया गया है। संपूर्ण संग्रह में शामिल हैं:]

अध्याय 31: दिल की धड़कनें गिनने वाली नर्स — एक आईसीयू नर्स को हृदय संबंधी एक पैटर्न का पता चलता है

ऐसे मॉनिटर जो यह संकेत देते हैं कि कोई व्यक्ति — या कुछ — रात में मरीजों से मिलने आ रहा है।

अध्याय 32: तहखाने का गायन समूह — वर्मोंट में एक परिवार को तहखाने के नीचे से गाने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं

वे अपने फर्श पर बैठे हैं, और यह गाना एक ऐसी पीढ़ी का है जिसे वे पहचानते हैं, जिनसे वे कभी नहीं मिले।

अध्याय 33: लाइटहाउस कीपर की लॉगबुक — एक लाइटहाउस कीपर की अंतिम लॉगबुक प्रविष्टियाँ, जिसका

एक निश्चित तिथि के बाद, लिखावट अब उसकी अपनी नहीं रह जाती।

अध्याय 34: हड्डियों वाली सड़क — एक राजमार्ग कर्मी एक पुरानी सड़क की मरम्मत करते समय कुछ अजीब चीजें खोजने लगता है

उस जमीन में जिसे छिपाने के लिए सड़क बनाई गई थी।

अध्याय 35: स्मृति चोर — साठ वर्ष की एक महिला को पता चलता है कि किसी ने उसकी स्मृति चुरा ली है।

उसकी यादें चुरा ली गईं - उसकी याददाश्त की क्षमता नहीं, बल्कि विशिष्ट यादें, जिन्हें शल्य चिकित्सा द्वारा निकालकर कहीं और ले जाया गया।

अध्याय 36: आईने में चालीस साल — एक आदमी जिसे आईने कभी पसंद नहीं आए, उसे पता चलता है कि क्यों —

और

पीछे मुड़कर देखने पर खुद का जो रूप सामने आता है, वह अलग तरह से बूढ़ा क्यों हो रहा है।

अध्याय 37: मानचित्रकार का दुःस्वप्न — अध्याय 4 का अनुवर्ती भाग: मानचित्र पर क्या था

नक्काशीदार नक्शे का दूसरा भाग।

अध्याय 38: अटारी में रहने वाला किरायेदार — न कोई व्यक्ति, न कोई जानवर। कुछ ऐसा जो रहा है

यह घर 1887 से बोस्टन के एक ब्राउनस्टोन भवन के अटारी में स्थित है और नीचे रहने वाले परिवार के लिए इसकी बहुत विशिष्ट आवश्यकताएं हैं।

अध्याय 39: रात्रि तैराक — एक पेशेवर तैराक खुले स्विमिंग पूल में प्रशिक्षण लेना शुरू करता है

पानी में उसके साथ कुछ ऐसा दिखाई दे रहा था, जो हमेशा नजरों से ओझल रहता था, और उसके लैप टाइम से बिल्कुल मेल खाता था।

अध्याय 40: विद्यालय पुस्तकालय का प्रतिबंधित अनुभाग — प्रतिबंधित अनुभाग में रखी गई पुस्तकें

1972 में स्कूल पुस्तकालय के एक हिस्से को कुछ ऐसे कारणों से बदल दिया गया था, जिन्हें वर्तमान लाइब्रेरियन समझने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

अध्याय 41: वह गाँव जो दो बार जला — रोमानिया के ग्रामीण इलाके का एक गाँव जो नष्ट हो गया

1893 में बने इस स्थल के खंडहरों की तस्वीरें, फोटोग्राफी शोधकर्ताओं ने खोजी हैं, अभी भी ली जा रही हैं - उन कैमरों द्वारा जो अभी तक अस्तित्व में नहीं हैं।

अध्याय 42: सर्जन के दूसरे सहायक हाथ — एक सर्जिकल रेजिडेंट सर्जरी के दौरान क्या देखता है

देर रात की एक प्रक्रिया जिसे उसे नहीं देखना चाहिए था और जिसे वह भूल भी नहीं सकती।

अध्याय 43: आकार वाला कोहरा — नोवा स्कोटिया के तट पर मछुआरों ने एक कोहरे की सूचना दी है।

एक ऐसा बैंक जो मानो जीवित हो - जो इरादे से चलता हो, जो उनके इंजनों की आवाज़ पर प्रतिक्रिया करता हो।

अध्याय 44: वे पत्र जो कभी भेजे नहीं गए — एक प्राचीन वस्तु में मिले न भेजे गए पत्रों का संग्रह

डेस्क पर लिखे गए सभी पत्र एक ही व्यक्ति को संबोधित थे, सभी पर उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद की तारीखें थीं, और सभी अलग-अलग लिखावट में थे।

अध्याय 45: सिक्के का दूसरा पहलू — एक मुद्राशास्त्री को एक सिक्का मिलता है जो देखने में किसी प्राचीन काल का

प्रतीत होता है।

कोई ज्ञात मुद्रा नहीं, एक ऐसे वर्ष की तिथि जो अभी तक घटित नहीं हुआ है, और एक ऐसी विश्व घटना का चित्रण जो हो ही नहीं सकती।

अध्याय 46: आवृत्ति स्तर पर प्रेतवाधित घटना — एक श्रवण बाधित महिला, के बाद

कोक्लियर इंप्लांट लगवाने के बाद, उसे ऐसी चीजें सुनाई देने लगती हैं जो सामान्य सुनने की क्षमता वाले लोगों को नहीं सुनाई देतीं - और वह चाहती है कि काश उसे ऐसी आवाजें सुनाई न देतीं।

अध्याय 47: रक्त की वंशागति — एक आनुवंशिक शोधकर्ता अपने परिवार के अध्ययन के दौरान यह पता लगाती है कि...

डीएनए, एक ऐसा अनुक्रम जिसका अस्तित्व नहीं होना चाहिए और जिसकी उपस्थिति उसके वंश में उस समय से है जब मनुष्य अपने वर्तमान स्वरूप में अस्तित्व में नहीं थे।

अध्याय 48: आधी रात के बाद पुस्तकालय — विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में रात 2 बजे के बाद क्या होता है

और सुबह 4 बजे तक की वो घटना जिसे रात का सुरक्षा गार्ड तीन साल से रिकॉर्ड कर रहा है और उसने किसी को नहीं बताया है।

अध्याय 49: अंतिम तस्वीर — एक विशेष विंटेज कैमरे से ली गई प्रत्येक तस्वीर

तस्वीर के बैकग्राउंड में एक ऐसी आकृति दिखाई देती है जो वास्तव में वहां नहीं है। वह आकृति हमेशा एक ही स्थिति में रहती है। ऐसा लगता है मानो वह फोटोग्राफर को देख रही हो।

अध्याय 50: सोया हुआ शहर — साइबेरिया के ग्रामीण इलाके में स्थित एक कस्बा जहाँ बारह सौ निवासी

2014 में कई लोग सो गए और जागने पर उनमें से कई ने एक ही सपने के बारे में बताया। मिलते-जुलते सपने नहीं, बल्कि बिल्कुल वही सपना।

अध्याय 51: आधी रात का बेकर — न्यू ऑरलियन्स में एक बेकरी जिसकी रोटी, जो आधी रात के बीच पकाई जाती है

आधी रात और सुबह चार बजे के बीच, इसे खाने वाले लोगों के मन में एक विशिष्ट और सुसंगत छवि उत्पन्न होती है - हमेशा एक ही छवि, हमेशा एक ही कमरा, हमेशा कोने में एक ही आकृति।

अध्याय 52: उसके पीछे आने वाला मौसम — एक मौसम विज्ञानी मौसम पर नज़र रखना शुरू करता है

एक ऐसी प्रणाली जो विशेष रूप से उसका पीछा करती हुई प्रतीत होती है - उसके आगमन के चौबीस घंटों के भीतर वह जिस भी स्थान पर जाती है, वहां मौजूद रहती है।

अध्याय 53: तलाक समझौता — बीस साल बाद तलाक लेने वाले दंपत्ति को निम्नलिखित बातों का निपटारा करना होगा:

सवाल यह है कि उनमें से किसने उस चीज को विरासत में पाया है जो उनकी दीवारों के भीतर रहती है और उनमें से कौन इसके द्वारा किए गए कार्यों के लिए जिम्मेदार है।

अध्याय 54: पूर्व सैनिक का बार-बार दोहराया जाने वाला रास्ता — पीटीएसडी से पीड़ित एक पूर्व सैनिक उसी रास्ते पर गाड़ी चलाना शुरू कर देता है

वह हर रात नींद में सड़क के एक हिस्से को देखता है और जागने पर पाता है - जो असंभव है - कि उसकी कार का माइलेज इसकी पुष्टि करता है।

अध्याय 55: तीस फीट नीचे — एक गुफा गोताखोर के हेलमेट कैमरे की फुटेज, उस गोता की जो उसने नहीं किया था

वह बच गई और फुटेज में बेहोश होने के बाद के चालीस सेकंड में जो कुछ दिखाया गया है।

अध्याय 56: छोटे-छोटे भयावह दृश्यों का संग्रहालय — बवेरिया में स्थित एक प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में निम्नलिखित वस्तुएं हैं:

इसके तहखाने में एक ऐसा संग्रह है जिसका कभी सूचीकरण नहीं किया गया, जिसे कभी जनता के लिए नहीं खोला गया, और जिसके क्यूरेटर 1953 में सेवानिवृत्त हो गए और जिसके उत्तराधिकारी की कभी नियुक्ति नहीं हुई।

अध्याय 57: वॉइसमेल — एक ऐसे नंबर से आया वॉइसमेल संदेश जो डिस्कनेक्ट हो चुका है

तीन साल तक, हर मंगलवार शाम को एक संदेश मिलता था, और वह आवाज जिसे प्राप्तकर्ता अपनी ही आवाज के रूप में पहचानती थी।

अध्याय 58: वर्षगांठ — हर साल, उसी तारीख को, कोई न कोई पुराने घर में आता है

यह वह फार्महाउस है जहां थायर परिवार छह पीढ़ियों से रह रहा है। इन मुलाकातों का दस्तावेजीकरण किया गया है। यह दस्तावेजीकरण एक सौ चालीस वर्षों तक फैला हुआ है।

अध्याय 59: अंतिम पृष्ठ — एक पुरानी किताबों की दुकान में मिली एक किताब जिसका अंतिम पृष्ठ फटा हुआ था —

और हाशिये में ऐसे प्रमाण मौजूद हैं जिनसे पता चलता है कि इस विशेष प्रति को पढ़ने वाले प्रत्येक पिछले पाठक ने अगले पाठक को चेतावनी देने का प्रयास किया था।

अध्याय 60: जल की आवृत्ति — भूजल प्रवाह का अध्ययन कर रहे एक जलविज्ञानी को पता चलता है

किसी विशेष जलभंडार में मौजूद पानी में खनिजों के अलावा कुछ और भी होता है - कुछ ऐसा जो इसे पीने वाले लोगों को पीढ़ियों तक संचयी रूप से प्रभावित करता है।

अध्याय 61: कार्यवाहक के बच्चे — एक पुरानी जागीर में काम करने वाला एक माली यह महसूस करता है कि

औपचारिक उद्यान में खेलने वाले बच्चे न तो संपत्ति के मालिक के बच्चे हैं, न ही किसी पड़ोसी संपत्ति से हैं, और वे 1904 में पहली बार उद्यान की तस्वीरें लिए जाने के बाद से ही इस उद्यान में खेलते आ रहे हैं।

अध्याय 62: गिरजाघर में प्रतिध्वनि — असामान्य प्रतिध्वनि की समस्या का समाधान करने के लिए नियुक्त एक ध्वनिक इंजीनियर

चौदहवीं शताब्दी के एक गिरजाघर में मौजूद ध्वनि पैटर्न के अध्ययन से पता चलता है कि प्रतिध्वनि इमारत की ज्यामिति का परिणाम नहीं है। यह प्रतिध्वनि ऐसी ध्वनियाँ उत्पन्न कर रही है जिनकी व्याख्या इमारत की ज्यामिति नहीं कर सकती। ऐसी ध्वनियाँ जिनमें अर्थ निहित है।

अध्याय 63: सर्जन का तीसरा मामला — सर्जन की कहानी का तीसरा अध्याय: उसने क्या पाया

जब उन्होंने एक ऐसे मरीज का ऑपरेशन किया, जिसके ऑपरेशन टेबल तक पहुंचने से पहले ही जीवित रहने की उम्मीद नहीं थी, और ऑपरेशन के दौरान, जब मरीज को जनरल एनेस्थीसिया दिया गया था, तब उसने उनसे क्या कहा।

अध्याय 64: वह स्थान जो बदल गया — एक महिला उस कस्बे में लौटती है जहाँ वह पली-बढ़ी थी और

वह पाती है कि कुछ सड़कें, कुछ इमारतें, कुछ स्थलचिह्न अपनी जगह से हट गए हैं - उन्हें ध्वस्त करके कहीं और पुनर्निर्मित नहीं किया गया है, बल्कि भौतिक रूप से स्थानांतरित कर दिया गया है, और वे उन स्थानों से थोड़े अलग स्थानों पर स्थित हैं जहां उसे वे याद हैं।

अध्याय 65: आखिरी समर कैंप — उत्तरी विस्कॉन्सिन में एक समर कैंप के बंद होने का कारण

1979 में बंद हुआ शिविर और तब से उस भूमि पर कोई शिविर क्यों नहीं चला है, और शिविर के अंतिम निदेशक ने काउंटी शेरिफ विभाग को दिए गए बयान में क्या कहा था।

अध्याय 66: होटल रजिस्टर — बुडापेस्ट का एक होटल जो लगातार चल रहा है

1892 से, और जिसका अतिथि रजिस्टर, उचित पहचान पत्र रखने वाले शोधकर्ताओं के लिए उपलब्ध है, में तीन अलग-अलग तिथियों - 1912, 1943 और 1978 - को एक ही अतिथि के हस्ताक्षर हैं: वही नाम, वही लिखावट, वही कमरा संख्या। कमरा 33।

अध्याय 67: तूफानी नाले में बच्चा — शहर के रखरखाव दल को क्या मिला

2019 में मेम्फिस में एक तूफानी नाले के तल में मिली एक चिट्ठी और उसके साथ मिली एक नोट, और उस दिन मौजूद चार कर्मचारियों में से किसी ने भी इस बारे में सार्वजनिक रूप से चर्चा क्यों नहीं की।

अध्याय 68: रसोइए की विरासत — सैन फ्रांसिस्को की एक रसोइया को अपनी दादी की विरासत मिलती है।

उसे एक रेसिपी बॉक्स मिलता है और उसमें पारंपरिक व्यंजनों के कार्डों के बीच, उसे ऐसे व्यंजनों के कार्डों का एक सेट मिलता है जिन्हें वह पहचान नहीं पाती है और जिनके अवयवों की वह पहचान नहीं कर पाती है और जिनके निर्देशों में ऐसे चरण शामिल हैं जिन्हें वह करना नहीं जानती है।

अध्याय 69: पति का अध्ययन कक्ष — एक महिला जिसके पति की अचानक मृत्यु हो जाती है, उसे पता चलता है कि...

अपने अध्ययन कक्ष की छानबीन करते हुए, उसे पता चला कि वह वर्षों से एक ऐसी संस्था के साथ पत्राचार कर रहा था - केवल पत्र, कोई ईमेल नहीं - जिसका पता एक ऐसी जगह का है, जिसका अस्तित्व जब वह खोजती है तो वह मौजूद नहीं है, और जिसके द्वारा उसके पति को लिखे गए पत्र, जो उसे भी मिलते हैं, एक ऐसी लिखावट में लिखे गए हैं जो मानवीय नहीं है।

अध्याय 70: धावक का मार्ग — देर रात प्रशिक्षण ले रहे मैराथन धावक का सफर शुरू होता है

उसी मार्ग पर किसी अन्य धावक से उसका सामना होना - जो हमेशा उससे आगे रहता है, हमेशा उससे उतनी ही दूरी पर आगे रहता है, बिल्कुल उसकी गति बनाए रखता है - और दिन के किसी अन्य समय पर कभी नहीं।

अध्याय 71: प्रकृतिवादी की फील्ड नोटबुक — एक प्रकृतिवादी पक्षियों के प्रवास पैटर्न का अध्ययन कर रहा है

ग्रेट प्लेन्स के शोधकर्ताओं ने आंकड़ों में एक ऐसे प्रवास मार्ग का पता लगाया है जिसका अनुसरण कोई भी ज्ञात प्रजाति नहीं करती है और न ही किसी ऐसे गंतव्य की ओर जाती है जहां किसी पक्षी के पहुंचने का कोई रिकॉर्ड दर्ज किया गया है।

अध्याय 72: जीर्णोद्धार — अठारहवीं शताब्दी की एक पेंटिंग पर काम कर रहा एक कला जीर्णोद्धारकर्ता

सतह की परत के नीचे, पेंटिंग का एक पुराना संस्करण मिलता है जिसमें विषयों की स्थिति अलग है और पुराने संस्करण में एक आकृति सीधे कैनवास से दर्शक की ओर देख रही है।

अध्याय 73: पैरामेडिक की लॉगबुक — एक पैरामेडिक का अनौपचारिक विवरण, जिसे निजी तौर पर रखा जाता है।

उनकी डायरी में उन मामलों का विवरण है जिनका उन्होंने बीस वर्षों में प्रतिनिधित्व किया है, जिनमें रोगी के होश में आने पर उसने कुछ ऐसा कहा जिसे वह न तो समझा सका और न ही भूल सका।

अध्याय 74: गहन श्रोता — एक महिला जिसने चालीस वर्षों तक प्रतिदिन ध्यान किया और अपने अंतिम समय में

एक दशक बाद, उन्होंने शांत रहने के बजाय सुनने के इरादे से ध्यान करना शुरू किया - और जो मौन उन्होंने विकसित किया, उसमें उन्होंने अंततः सुना।

अध्याय 75: वह घाटी जो मौजूद नहीं है — एपलाचियन पर्वतमाला में एक स्थलाकृतिक विसंगति: एक घाटी

आसपास की पहाड़ियों से दिखाई देने वाली एक ऐसी जगह जो उपग्रह चित्रों में नहीं दिखती, यूएसजीएस के नक्शों पर नहीं दिखती, और जिसका वर्णन अंदर से उतरने वाले किसी भी व्यक्ति ने नहीं किया है।

अध्याय 76: टैक्सिडर्मिस्ट की गलती — एक टैक्सिडर्मिस्ट जो देर रात तक काम करते हुए एक गलती कर बैठता है

नमूने की तैयारी में हुई त्रुटि के परिणामस्वरूप, उसके द्वारा लगाई जा रही कांच की आंखों से कुछ ऐसा दिखाई देता है जो किसी भी चीज को देखने में सक्षम नहीं होना चाहिए।

अध्याय 77: नर्सों का रात्रिकालीन दौर — एक अनुभवी आईसीयू नर्स का वृत्तांत

रात की शिफ्टों में तेईस वर्षों के दौरान उसने जो घटनाएँ देखी हैं: मॉनिटरों का विशिष्ट व्यवहार, कमरे की हवा की विशिष्ट गुणवत्ता, और वह विशिष्ट दिशा जहाँ से मरने वालों को अंत से पहले के घंटों में कुछ अंतिम ध्यान मिलता प्रतीत होता है।

अध्याय 78: वंशावली विशेषज्ञ की खोज — एक पेशेवर वंशावली विशेषज्ञ अपने ग्राहक के परिवार का पता लगा रहा है

स्कॉटिश हाइलैंड्स में चर्च के अभिलेखों के माध्यम से इतिहास का अध्ययन करने पर पता चलता है कि एक ही नाम सात सौ वर्षों तक एक ही गांव के जन्म और मृत्यु अभिलेखों में लगातार दर्ज होता है: हमेशा जन्म लेता है, हमेशा मरता है, कभी भी माता-पिता का कोई रिकॉर्ड दर्ज नहीं होता, कभी भी कोई स्पष्ट संतान नहीं होती।

अध्याय 79: नदी की दूसरी ध्वनि — एक श्वेत जल कयाक चालक ने आसपास के वातावरण में क्या सुना

पर्वतीय घाटी में बहती नदी की ध्वनि, जो तीस मील की एकल पैडलिंग यात्रा के दौरान, किसी ऐसी चीज़ में परिवर्तित हो गई जो पानी नहीं थी - बल्कि नदी की ध्वनि का उपयोग उसी तरह कर रही थी जैसे कोई आवाज़ वाहक तरंग का उपयोग करती है।

अध्याय 80: भूविज्ञानी का नमूना — दो मील की गहराई से निकाला गया एक कोर नमूना

नॉर्वे में एक गहरे भू-खुदाई परियोजना के दौरान, चार सौ मिलियन वर्ष पुराने चट्टान में दबी हुई एक ऐसी वस्तु मिली है जो प्राकृतिक नहीं है।

अध्याय 81: मानचित्र के किनारे पर स्थित प्रकाशस्तंभ — एक प्रकाशस्तंभ जो समुद्री मानचित्रों पर दिखाई देता है

सत्रहवीं शताब्दी के नक्शों में यह आज भी मौजूद है, नक्शों पर और समुद्र में, इस तथ्य के बावजूद कि जिस देश के तट की यह रक्षा करता है, उस देश की सरकार के पास इसके निर्माण या रखरखाव का कोई रिकॉर्ड नहीं है और न ही कभी कोई दल इस पर तैनात किया गया है।

अध्याय 82: दोपहर का आगंतुक — ग्रामीण इंग्लैंड में रहने वाला एक सेवानिवृत्त दंपति, जो अपने पहले दिन दोपहर के समय एक आगंतुक से मिलते हैं।

हर महीने के रविवार को, उनके दरवाजे पर एक आगंतुक आता है - वही आगंतुक, हर महीने, वही कपड़े पहने हुए, वही सवाल पूछते हुए - और वे कभी यह पता नहीं लगा पाए हैं कि आगंतुक कौन है, आगंतुक कहाँ से आता है, या जब वे मुलाकात खत्म होने के बाद आगंतुक का पीछा करते हुए गली में जाते हैं, तो आगंतुक कभी वहाँ क्यों नहीं होता है।

अध्याय 83: अनुवादक का पाठ — अठारहवीं शताब्दी की रचना पर काम करने वाला एक साहित्यिक अनुवादक

पांडुलिपि में मूल भाषा में द्वितीयक पाठ की एक परत का पता चलता है - जो केवल प्रकाश के कुछ कोणों में ही पठनीय है, और एक ऐसी तकनीक के माध्यम से स्पष्ट प्राथमिक पाठ में अंतर्निहित है जिसका उसने पहले कभी सामना नहीं किया है - जिसका अनुवाद कुछ ऐसा होता है जिसे वह अपने प्रकाशित अनुवाद में शामिल करना असंभव पाती है।

अध्याय 84: लापता छात्र — भौतिकी का एक स्नातक छात्र जो लापता हो गया

2011 में लापता हुई वह महिला, जिसे उसके लापता होने के बाद से कई देशों में कई स्वतंत्र गवाहों द्वारा देखा गया है, हमेशा ऐसी परिस्थितियों में जो शारीरिक रूप से

असंभव होनी चाहिए, और हमेशा ठीक वैसी ही दिखती थी जैसी वह उस दिन दिखती थी जब वह लापता हुई थी।

अध्याय 85: डॉक्टर की चेतावनी — ग्रामीण वर्मोंट में एक पारिवारिक चिकित्सक, जो...

1990 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने अपनी रोगी फाइलों में एक कोड शामिल करना शुरू कर दिया था, जिसे उनके उत्तराधिकारियों ने उनकी मृत्यु के बाद ही खोजा था - एक ऐसा कोड, जिसे तोड़ने पर, उस क्षेत्र में एक विशिष्ट घर, एक विशिष्ट परिवार और उस परिवार के साथ घट रही एक विशिष्ट घटना के बारे में चेतावनी मिलती थी, जिसे उन्होंने बीस वर्षों से घटित होते देखा था और जिसे वे कभी रोक नहीं पाए थे।

अध्याय 86: शादी की रात — नवविवाहित जोड़े का अपने पहले घर में अनुभव,

उनकी शादी के पहले तीन महीने - शादी के स्थान से वे अपने साथ घर में क्या लेकर आए थे, और उस स्थान ने उन्हें यह क्यों नहीं बताया था कि साठ साल पहले वहां क्या हुआ था।

अध्याय 87: अभिलेखागारपाल की अंतिम सूची प्रविष्टि — अभिलेखागारपाल द्वारा की गई अंतिम प्रविष्टि

2020 में अपनी मृत्यु से पहले एक प्रमुख अनुसंधान विश्वविद्यालय में काम करने के दौरान उन्होंने एक ऐसी प्रविष्टि लिखी थी, जिसमें उनके पेशे की सावधानीपूर्वक भाषा में, एक ऐसे संग्रह की खोज का वर्णन किया गया है जो अस्तित्व में नहीं होना चाहिए था,

जिसे स्पष्ट रूप से 1952 में अभिलेखागार में जमा किया गया था, और जिसकी सामग्री का दस्तावेजीकरण करने में उन्होंने अपने जीवन के अंतिम छह महीने बिताए थे।

अध्याय 88: खाली स्कूल — मिसिसिपी के ग्रामीण इलाके के एक छोटे से कस्बे में 1964 में बंद हुआ एक स्कूल।

आधिकारिक तौर पर एक बड़े जिले के साथ विलय के कारण। वास्तव में 1963 के पतझड़ सत्र में ऐसा क्या हुआ था जिसके कारण इसे बंद कर दिया गया - और स्कूल की इमारत, साठ वर्षों से खाली होने के बावजूद, कभी क्यों नहीं गिराई गई।

अध्याय 89: खनन सर्वेक्षण — कनाडा के एक दूरस्थ क्षेत्र में काम कर रही एक सर्वेक्षण टीम

शील्ड ने पृथ्वी की सतह से तीन सौ मीटर की गहराई पर एक संरचना की खोज की है - जो न तो कोई प्राकृतिक रचना है, न ही कोई ज्ञात भूवैज्ञानिक विशेषता है, और न ही किसी ज्ञात काल या संस्कृति से संबंधित कोई मानव निर्मित संरचना है।

अध्याय 90: मधुमक्खी पालक की गवाही — ग्रामीण फ्रांस का एक मधुमक्खी पालक, जिसकी मधुमक्खियाँ,

तीन साल के दौरान, उन्होंने अपने छत्ते को एक ऐसी संरचना में बदल दिया जिसे वह एक नक्शे के रूप में वर्णित करती है - एक त्रि-आयामी नक्शा, मधुकोश के आकार का, एक ऐसी जगह का जहाँ वह कभी नहीं गई और जिसकी पहचान नहीं कर सकती, लेकिन जिसे वह वर्षों से खोजने का प्रयास कर रही है क्योंकि उसका मानना है कि नक्शा अपने केंद्र में कुछ ऐसा दिखा रहा है।

अध्याय 91: जासूस का आखिरी मामला — एक पुलिस जासूस की सेवानिवृत्ति से पहले की अंतिम जांच

सेवानिवृत्ति - एक गुमशुदा व्यक्ति का मामला जिसने उसे एक ऐसी इमारत तक पहुँचाया जिसका शहर के पास कोई रिकॉर्ड नहीं था, जिसमें ऐसे लोग रहते थे जिन्हें उनके परिवारों ने वर्षों पहले लापता बताया था, और जो एक दिन भी बूढ़े नहीं हुए थे।

अध्याय 92: चर्च का पुनरुद्धार — एक मंडली अठारहवीं सदी के चर्च का पुनरुद्धार कर रही है

वरमोंट के एक चर्च में वेदी की दीवार के प्लास्टर के पीछे एक पेंटिंग मिली है - एक भित्ति चित्र जो पूरी दीवार को कवर करता है, असाधारण गुणवत्ता का है, और एक ऐसे दृश्य को दर्शाता है जिसे मंडली के पादरी किसी भी धार्मिक ग्रंथ में पहचानने में असमर्थ रहे हैं।

अध्याय 93: अनुसंधान केंद्र में रात्रि की शिफ्ट — एक समुद्री जीवविज्ञानी का वृत्तांत

प्रशांत महासागर की गहराई में स्थित एक अनुसंधान केंद्र की पानी के नीचे की अवलोकन खिड़की पर एक ऐसी घटना दिखाई दी, जो सतह से तीन हजार मीटर नीचे थी, उस रात जब चालक दल के अन्य सभी सदस्य सो रहे थे।

अध्याय 94: दलदली भूमि पर स्थित जागीर — एक युवती जो एक विक्टोरियन शैली की जागीर की उत्तराधिकारी बनती है

यॉर्कशायर मूर्स को पता चलता है कि उस जागीर में, वहां काम करने वाले नौकरों के अलावा, एक ऐसा निवासी भी है जिसके बारे में उसे बताया नहीं गया था - जो जागीर के निर्माण के समय से ही वहां रह रहा है, जिसकी उम्र नहीं बढ़ती, जो खाना नहीं खाता, और जो हर रात आधी रात से सुबह चार बजे तक संपत्ति की परिधि पर चक्कर लगाता है, विशिष्ट बिंदुओं पर रुकता है, एक ऐसे उद्देश्य का निर्वहन करता है जिसे वहां रहने वाला कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से समझ नहीं पाया है।

अध्याय 95: लेखक का अंतिम उपन्यास — एक साहित्यिक व्यक्ति के कागजातों के बीच मिली पांडुलिपि

2018 में निधन हुई उपन्यासकार - एक उपन्यास जिसे उन्होंने जाहिर तौर पर अपने जीवन के अंतिम तीन महीनों में गुप्त रूप से लिखा था, जिसे उनके संपादक ने उनके द्वारा प्रकाशित किसी भी चीज़ से अलग बताया है, जो एक ऐसी कहानी बयां करता है जिसके बारे में संपादक यह निर्धारित नहीं कर पा रही हैं कि क्या उन्होंने इसे गढ़ा था या देखा था, और जो एक ऐसे बिंदु पर, वाक्य के बीच में ही समाप्त हो जाता है, जिसके आगे संपादक खुद को पढ़ने के लिए विवश नहीं कर पाती हैं।

अध्याय 96: घड़ीसाज़ का इकबालिया बयान — घड़ीसाज़ की दर्ज गवाही

अध्याय 19: चालीस वर्षों तक प्राचीन घड़ियों की देखभाल करने के दौरान उन्होंने जो कुछ देखा है, वह उन चीजों के बारे में है जिन्हें घड़ियां समय न मापने के दौरान भी मापती हैं।

अध्याय 97: बोलने वाला पर्वत — एक भाषाविज्ञानी जो स्वदेशी भाषाओं का अध्ययन करता है

ब्रिटिश कोलंबिया के एक छोटे से समुदाय की मौखिक परंपरा में, प्रशांत उत्तरपश्चिम में एक ऐसे पर्वत का जिक्र मिलता है जो बोलता है - न तो लाक्षणिक रूप से, न ही आध्यात्मिक अर्थ में, बल्कि सचमुच - और जिसका भाषण, पारंपरिक वृत्तांतों में, विशिष्ट जानकारी रखता है जो किसी भी मानव वक्ता को ज्ञात नहीं हो सकती थी।

अध्याय 98: रात्रि रक्षक का इकबालिया बयान — एक सुरक्षा रक्षक का उस घटना का वृत्तांत जो उसने घटी।

एक प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में तीन साल की रात्रिकालीन शिफ्ट के दौरान उसे किन-किन चीजों का सामना करना पड़ा - संग्रहालय बंद होने के बाद प्रदर्शनियों में क्या-क्या चीजें हिलती-डुलती थीं, और उसने तहखाने में कभी क्यों नहीं देखा, और एक रात जब उसके पास कोई विकल्प नहीं था तो उसे क्या मिला।

अध्याय 99: गलियारे के अंत में स्थित कमरा — एक धर्मशाला नर्स द्वारा गलियारे के अंत में स्थित कमरे का वर्णन

जिस सुविधा केंद्र में वह काम करती है, उसकी चौथी मंजिल पर गलियारे का आखिरी छोर - वह कमरा जो हमेशा बंद रखा जाता है, जिसमें कभी किसी मरीज को नहीं रखा जाता है, और जिसे उसने पंद्रह वर्षों में तीन बार खोला है, और हर बार उसे अंदर क्या मिला, और हर बार यह अलग क्यों था, और हर बार वह उस कमरे के उद्देश्य के बारे में थोड़ा और क्यों समझ पाई।

अध्याय 100: अंतिम प्रविष्टि — अंतिम कहानी: एक लेखक डरावनी कहानी लिखने बैठता है।

जैसे-जैसे वह लिखती है, उसे एहसास होने लगता है कि कहानी जानती है कि वह उसे लिख रही है। कहानी की घटनाएं उसके फैसलों पर तुरंत प्रतिक्रिया दे रही हैं। पात्र उसके बारे में जानते हैं। और कहानी—स्वयं कहानी, वर्णन, लेखन के माध्यम से उसने जो अस्तित्व में लाया है—उसे अंत तक नहीं पहुंचने देगी।

अंतभाषण

ये सौ कहानियाँ इस समझ से निकली हैं कि सबसे भयानक आतंक वह नहीं है जो अंधेरे से अचानक प्रकट होता है, बल्कि वह है जो उसमें छिपा रहता है। वह आतंक जो धैर्य रखता है। वह आतंक जो हमेशा से मौजूद रहा है। वह आतंक जिसके साथ आप जीवन भर अनजाने में जीते रहे हैं, और जो आपके बारे में सब कुछ जानता है।

ये सभी कहानियां काल्पनिक हैं। लेकिन इनमें से प्रत्येक कहानी किसी न किसी अर्थ में सत्य भी है - ये मानवीय भय की लंबी परंपरा से, दुनिया की दस्तावेजित विचित्रता से, और इस जीवन में कुछ ऐसी चीजों की ईमानदार स्वीकृति से उपजी हैं जिन्हें समझाया नहीं जा सकता।

अच्छी नींद लें। अपने दरवाज़े बंद कर लें। और अगर आज रात आपको दीवारों में कुछ आवाज़ सुनाई दे—कोई लयबद्ध, कोई जानबूझकर की गई आवाज़—तो खुद को याद दिलाएं कि वह हमेशा से वहीं थी। आपने बस आखिरकार उसे सुनना सीख लिया है।

— लेखक

ईबुक का अंत

© रियल 100 हॉरर स्टोरीज लाइक मूवी। सर्वाधिकार सुरक्षित। यह ईबुक वयस्क पाठकों के लिए मौलिक काल्पनिक हॉरर सामग्री से युक्त है।